सुरेन्द्रनाथ

जय बाँगला

सामयिक प्रकाशन

ससार के उन सभी शहीदो को, जो अपने-अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए, प्राणोत्सर्ग कर अपना नाम सदा-सर्वदा के लिए अमर कर गये......

बांगला देश के लोमहर्षक मुक्तिसग्राम मे पाकिस्तानी दरिन्दो के हृदय हिला देने वाले अत्याचारो से लोहा लेने वाली एक नवयुवती की त्याग पूर्ण करुणगाथा जो उसी की डायरी से उसी के शब्दो मे प्रस्तुत की गई है।

देश प्रेम, आत्मबलिदान और त्याग से ओत-प्रोत इस उपन्यास की कथा पाठको के मन मे सदैव के लिए अपना स्थान बना लेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

सुरेन्द्रनाथ

सम्पादक

हिसार मित्र पत्रिका हिसार

• • •

पाकिस्तानी सेना के निर्मम अत्याचार बागला देश के भोले-भाले सरल हृदय लोगो पर शुरू हो चुके थे और मेरी मानसिक परेशानियाँ बढती जा रही थी। ऐसा होता भी क्यो न ? उस शस्य श्यामला सुन्दर भूमि पर ही मैंने जीवन का प्रथम प्रकाश देखा था। क्या कभी मैं जिला मैमनसिह स्थित काजियागांवा के लहलहाते धान के खेतो को भूल सकता हूँ ? खेतो के हरित सागर मे डूबता सूरज फूस की झोपडियो पर कितना सोना बिखेर देता था। आम्र वृक्षो के सघन कुंजो मे चिडियो की तरह फुदकती नन्ही सहेली रेहाना और बदरो की तरह उधम मचाने वाला सलीम !

चांदनी रातो मे नदी और पोखरो के पानी मे लक-लक चमचमाता चांद और छिपा-छिपउल के खेल, चोर-सिपाही की दौड भाग, सब कुछ याद आने लगा है, वह भी जिसके बारे मे मेरा ख्याल था कि मैं भूल चुका हूँ। रेडियो पर हमेशा कान लगे रहते हैं। मुक्ति फौज की विजय, लगता है जैसे मेरी अपनी विजय हो। शेख मुजीबुर्रहमान जैसे बागला देश के ही नही मेरे भी प्रिय नेता हो। छाती पर बारूदी सुरंग बाँध पाकिस्तानी टैंक के नीचे लेट कर उसे उडा देने वाली रोशनआरा जैसे मेरी अपनी बहन हो। जैसे बागला देश की आजादी के लिए मरने वाला हर मुसलमान, हर हिन्दू, हर ईसाई मेरा अपना हो।

"मैमनसिह पर पाक के नापाक जहाजो ने भीषण गोलाबारी की है" आकाशवाणी से खबरें आ रही हैं और मैं अपने मानस-पटल पर

काजियागांवा को धूं-धूं कर जलते हुए देखता हूं। पटसन के खेत, बच्चो से चहचहाती झोपडियां और मकान नापाम बम की आग मे जल रहे हैं, मेरा घर जल रहा है, मेरे भाई, मेरे बच्चे, मेरी बहनें मौत के घाट उतारी जा रही हैं, उनकी बेइज्जती की जा रही है और मैं हूं कि यहा बेबस बैठा हूं। अधरों पर अनायास ही नीरेन्द्रनाथ की कविता की पंक्तियां तैर जाती हैं—

"सीमातेर ओई दिके आमार जन्म भूमि
एई दिके आमार स्वदेश
आमि एई दिके दाडिये
ओई दिके ताकिये आछि
आमि देखछि
आमार जन्म भूमिर आकाश रक्ते लाल होय गलो
(सीमात के उस पार है मेरी जन्मभूमि
इस पार है मेरा अपना देश
मैं इस पार खडा
देख रहा हूं उस पार
देख रहा हूं
मेरी जन्म भूमि का आकाश रक्त से लाल हो गया है।)

मन होता है कि सब कुछ छोड कर फिर से अपनी जन्मभूमि की वीर शहीदो के खून से लाल हुई धूल को अपने माथे पर लगाने के ए निकल पड़ूं। अपने बचपन के नन्हे दोस्तो की बहुत याद आती है और विशेष कर सलीम की। क्या गुजर रही होगी उन पर ? क्या वे सुरक्षित होगे ? मेरी जन्म भूमि, पाकिस्तानी हत्यारो से पीडित मेरी शस्य श्यामला भूमि, मेरी ओर याचना भरी नजरो से निहार रही है। लेकिन यथार्थ की कठोरता और परिस्थितियो की निर्ममता इसान को कितना निर्मोही बना देती है। बागला देश से आये शरणार्थियो के लिये चदा भेजने और सरकार से बांगला देश को जल्दी से जल्दी

मान्यता देने का अनुरोध करने के अलावा मैं कुछ नही कर पाता।

और तभी मुझे कलकत्ता से हफीज चाचा का तार मिला था—"सलीम मौत के नजदीक है, फौरन आओ।" तार पढते ही छुट्टी लेकर कलकत्ता चल पडा।

ट्रेन पर बैठे-बैठे सलीम की बातें याद आने लगी। हम दोनो आठवी कक्षा तक साथ-साथ पढे थे। दोनो ने मिलकर बाग से आम चुराये थे, पेडो पर पत्थर मार कर खजूर तोडे थे और तालावो मे मछलियो का शिकार किया था। बाल सुलभ लडाई-झगडे और फिर दोस्ती का लम्बा सिलसिला चलता रहा था। हमारे परिवारो मे भी आपस मे आना-जाना था। दुर्गा पूजा के समारोहों मे उसके घर वाले उत्साह से शामिल होते थे और ईद, बकरीद आदि के मौको पर हम उनकी खुशियो मे हिस्सा बटाते। हमारे मजहब जरूर अलग-अलग थे लेकिन हमारी भाषा, हमारी सस्कृति और रीति रिवाज आपस मे इतने घुल मिल गये थे कि उन्हे अलग करना असम्भव था।

मुस्लिम लीग के उदय और अग्रेजी कूटनीति के मोहरे बने अदूरदर्शी नेता जिन्ना की मेहरबानी से पाकिस्तान की मांग उठी। हमारे आसपास के जिलो मे हिन्दू-मुस्लिम दगे शुरू किये जाने लगे। भारत की स्वतन्त्रता के साथ ही देश का विभाजन हो गया।

बगाल—जिसका विभाजन अग्रेजी साम्राज्यवाद भी करने मे विफल रहा था, कूटनीतिज्ञ जिन्ना की महत्वाकाक्षाओ का शिकार बन दो टुकडो मे बट गया। सकुचित मजहब की पट्टी दिल और दिमाग पर बाधने के बाद, कल तक भाई-भाई की तरह रहने वाले हिन्दू-मुसलमान एक दूसरे के जानी दुश्मन बन गये। एक हृदय के, बडी बेदर्दी से दो टुकडे कर दिये गए।

इतना सब कुछ होने के बाद भी हमारे गांव मे वही पहले जैसी शान्ति थी। परन्तु गांव के अधिकाश हिन्दू परिवार अब अपने को असुरक्षित अनुभव करने लगे थे। इनमे से एक हमारा परिवार भी था।

हमने लम्बी वहसो, विचारो और परिस्थितियो का जायजा लेने के बाद अपने प्यारे गाँव को छोड कर भारत मे वसने का निश्चय किया। जब मुसलमान परिवारो को हमारे निर्णय का पता चला, उनके मुखिया हम लोगो से मिलने आये। उन्होने कहा "जब तक हम जिन्दा है, आप लोगो का कोई बाल भी बाँका नही कर सकता। अगर कुछ सिर फिरे मुसलमानो ने हिन्दू भाइयों पर ज्यादतियाँ की हैं तो इसका यह मतलब नही कि सभी ने अपनी अक्ल पर ताला दिया लगा हो।"

उन्होंने हमे हर तरह से आश्वासन और विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया। परन्तु जब एक बार आपसी विश्वास की नीव हिल जाय तो उसे टिकाये रखना बहुत कठिन होता है। पूर्वी पाक की पूरी सरकारी मशीन हिन्दुओ और मुसलमानो मे दगे कराने की कोशिशो मे जुटी थी। ऐसे माहौल मे रहना खतरे से खाली नही था।

हफीज चाचा हमारे गाँव के विश्वसनीय आदमी थे। कलकत्ते मे उनका अच्छा खासा व्यापार चलता था। उन्होने हम सबको अपने ट्रक मे बैठाकर कलकत्ते तक पहुँचाने का आश्वासन दिया। भारी हृदय ौर भीगी आँखो से हमने अपने गाँव से विदा ली। गाँव वालो के साथ सलीम हमे विदा देने आया। रेहना और उसकी माँ भी थी उन लोगो मे।

हमारे ट्रक के चलते ही सलीम विदा देते-देते ो पडा। मेरी आँखें भी भर आईं। मैंने हाथ हिला कर उससे विदा ली। लेकिन वह अश्रु पूरित नेत्रो से बस एक टक हमे देखता रहा। धूल का एक गुबार उठा और हम दोनो के बीच एक अभेद्द पर्दे की तरह तन गया।

ग्यारह-बारह वर्ष की उस अल्प आयु मे मैं यह महसूस कर रहा था कि यह हमारी अन्तिम विदा है। लहलहाते-खेतो और झूमते वृक्षो तक के प्रति एक असीम ममता से हृदय भर रहा था। नदियो, तालाबो और पोखरो मे जैसे पानी नही, हमारे अश्रु बिंदु भरे थे।

सब कुछ छूट गया और समय के तीव्र प्रवाह मे वह कर जैसे धुल-पुछ गया, शेष रह गयी कुछ धुधली यादें, टीस और दर्द भरी। हमारा परिवार परिस्थितियो के थपेडे खाता कलकत्ते से दिल्ली आ गया। हफीज चाचा तीन-चार साल मे जब कभी दिल्ली आते हम लोगो से जरूर मिलते। हमारे परिवार मे उनकी आवभगत एक बुजुर्ग की तरह होती। हम अपनी जीवन रक्षा के लिए उनके कृतज्ञ थे। मैमनसिंह से कलकत्ते तक के लम्बे सफर मे मजहब के जनून मे पागल बने मुसलमानो ने हम सभी की जीवन रक्षा हफीज चाचा की ही चतुरता के कारण हो पाई थी।

उनके आने से जैसे पूरा काजियागांवा हमारे घर मे आ जाता। पुराने परिचितो और मित्रो के सुख-दुख के समाचार हमे उनसे पता चलते। वे बीच-बीच मे पूर्वी पाकिस्तान जाते रहते थे। वहाँ से वापिस लौटते ही हमे खत लिखते। उनके हर खत मे पूर्वी पाकिस्तान की गरीबी, अकाल, बाढ या तूफान का जिक्र जरूर होता।

सलीम और मेरे बीच सैकडो मील की दूरी थी परन्तु पत्रो का सम्पर्क सूत्र अब भी बदस्तूर चल रहा था। उसने बी० ए० पास कर एक प्राइवेट फर्म मे नौकरी कर ली थी। अपनी शादी के अवसर पर भी वह निमन्त्रण देना नही भूला था। लेकिन इसके बाद से उसके खतो मे एक तरह की निराशा छा गई थी। बगला देश की दिन दूनी बढ़ती हुई गरीबी और पश्चिमी पाकिस्तान द्वारा किया जाने वाला उसका शोषण आदि कुछ ऐसे जलते हुए सवाल थे जो किसी न किसी रूप मे उनके हर पत्र मे झलकते रहते।

सन् ७१ के चनावो मे अवामी लीग की विजय और शेख मुजिबुर्रहमान के सर्वप्रिय नेतृत्व की सूचना उसने अपने पत्रो मे बड़े गौरव पूर्ण शब्दो मे दी थी। इसके बाद से मुझे उसका कोई पत्र नही मिला।

पूर्वी पाकिस्तान के गृह युद्ध से मैं बहुत चिंतित हो उठा था।

और इस चिंता को हफीज चाचा के तार ने और भी बढा दिया था।

रह रह कर मेरे दिमाग मे एक प्रश्न उठता था। सलीम अचानक मौत के नजदीक कैसे पहुँच गया ? वह बीमार होता, मुझे खबर जरूर करता। वह मैमनसिंह से कलकत्ता क्यो और कैसे आया ? कही ऐसा तो नही कि बागला देश की स्वतत्रता के लिए लडने वालो मे वह भी सम्मिलित हो गया हो और याह्याखां की राक्षसी फौज का शिकार बन गया हो ? मैं उसका स्वभाव अच्छी तरह जानता हूँ। वह शान्तिप्रिय अवश्य है पर अन्याय के विरुद्ध झुकना उसने कभी नही सीखा। वह उन लोगो मे से है जो टूट सकते हैं झुक नही सकते।

ये सब बातें मेरे जहन मे उस वक्त तक चक्कर लगाती रही, जब तक मैं हफीज चाचा के घर नही पहुँच गया। वे मुझे ड्राइग रूम मे मिल गये। बिखरे बाल और डबडबायी आँखें। उन्हें देखते ही मेरा दिल धक्क से रह गया। इस एक साल ने उन्हे पूरी तरह वृद्धावस्था की सीमा पर पहुँचा दिया था। "सलीम कैसा है अब ? जिस दिन से मैंने बगला देश पर पाकिस्तानियो के अत्याचारो की खबरें सुनी हैं, बहुत परेशान हूँ। मुझे रह-रह कर अपने गांव वालो का ख्याल सताता रहता है।"

"उन पाकिस्तानी दरिंदो ने ही तो बेटा सलीम की दुर्गति की है। बस, तुम्हे देखने की उम्मीद मे किसी तरह उसकी सांस अटकी हुई है। अ न गांव राख के ढेर मे बदल चुका है। चलो, अन्दर चल कर सलीम से मिल लो। बस आखिरी घडियां गिन रहा है।" हफीज चाचा ने बगला मे कहा।

कांपते हृदय से मैं सलीम के कमरे मे गया। वह पलग पर लेटा हुआ था। उसके सारे शरीर पर पट्टियां बधी थी। मुझे देखकर उसने मुस्कराने की कोशिश की। मैंने उसकी गरदन मे हाथ डाल कर उसे उठाया और अपने सीने से लगा लिया।

"एसेछो बधु !" वह बहुत कमजोर आवाज मे बोला।

'चिंता न करो। तुम अब जल्दी ही ठीक हो जाओगे।" उसने

बिस्तर की चादर के नीचे से एक डायरी निकाल कर मुझे देते हुये कहा "मेरे एक अजीज की है, आखिरी भेंट के रूप मे स्वीकार करो ।"

"नही, तुम ठीक हो जाओगे मित्र !"

उसने मुझे मुस्करा कर देखा । बडी मोहक और परिचित मुस्कान थी वह । वचपन मे जव वह "कुट्टी" करने के वाद दोवारा मित्रता करने के लिये 'मिट्ठा' किया करता था, ठीक ऐसी ही मुस्कान उसके होठो पर तैरती थी ।

"ओह ! मेरा दिल वहुत दर्द आह ! जय वगला देश !"

और सलीम की वेजान गरदन एक ओर लटक गयी ।

मेरी आंखो से अश्रुधारा फूट पडी । भाग्य की कितनी विकट विडम्बना थी ? दो वाल मित्र लगभग तेइस वर्षों वाद मिले थे केवल इसलिये कि वे एक दूसरे से हमेशा के लिए विछुड जाय ।

× × ×

कुछ दिनो वाद सलीम द्वारा भेंट की गई वह डायरी मैंने खोल कर पढना शुरू किया । वगला भाषा मे लिखी हुई थी । डायरी के प्रारम्भ मे सलीम ने मुझे सम्बोधित करते हुए लिखा था 'मेरी दिली ख्वाहिश है कि तुम इसको छपवा कर दुनियां के सामने पेश करो ताकि लोग जान सकें कि वगला देश के युवक, युवतियो, वच्चो और वृढो ने अपनी आजादी की कीमत कितनी वहादुरी से चुकायी है ? इसके साथ ही दुनियां उन दिल कपा देने वाले अत्याचारो और आतको से भी जानकार वन सके जो पाकिस्तानी फौज ने साधारण जनता पर ढाये ।'

यह डायरी है ढाका विश्वविद्यालय की स्नातिका मेहरुन्निसा की ।

× × ×

प्यार भीगे दो शव्द भी अनमोल होते हैं और उसके साथ अगर कोई उपहार भी दे तो खुशी की कोई सीमा नही रहती । यह डायरी एक ऐसा ही अनमोल उपहार है जो मुझे अपनी प्रिय सहेली ने भेंट किया था । वह कहता था, ओह 'कहता' नही कहती थी "अव शायद मैं

तुमसे कभी नही मिल पाऊँ।"

उस वक्त मैं उसके शब्दो का मतलब नही समझी थी। मैंने हँस कर कहा था "तुम हमेशा निराशा भरी बातें करती हो। भला ऐसी क्या बात हो गई है ? अभी तो यूनिवर्सिटी का सैशन भी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ और तुम एम० ए० करने का विचार कर रही थी। उसका क्या होगा ?"

"इस वक्त तुम्हे सिर्फ इतना बता सकती हूँ कि मैं देश के काम से गाँवो मे प्रचार कार्य करने के लिए जा रही हूँ। मैंने अपना नाम उन वालटियर्स मे लिखवा दिया है जो पाकिस्तानी सेना के जुल्मो के खिलाफ सबसे पहले शहीद होने का गौरव प्राप्त करना चाहते हैं।"

"लेकिन राष्ट्रपति याह्या खां यहाँ आ गये हैं और बंगबंधु मुजीबुर्रहमान से उनकी माँगो के सम्बन्ध मे वार्ता कर रहे हैं। सारे आसार आशाजनक दिखाई दे रहे हैं।"

"खुदा की मेहरबानी से अगर बंगला देश शान्तिपूर्वक अपने हक हासिल करने मे कामयाब हो जाय, इससे ज्यादा खुशी की बात हमारे लिये क्या होगी ? लेकिन मुझे इस फौजी हुकूमत पर चावल भर भी ।न नही आता। हमारी पार्टी के सभी युवक और युवतियां अहिंसक ' की तैयारियो मे जुटे हैं।" इतना कह कर उसने मुझे यह डायरी दी और मुह मोड़ कर तेज कदमो से बाहर निकल गयी।

बी० ए० प्रथम वर्ष मे हम दोनो का परिचय हुआ था और उस यम परिचय से ही हमारा प्यार दिन दूना बढ़ता चला गया।

आज उसकी एक-एक बात, एक एक अदा याद आ रही है। विदाई के उस लमहे मे मैं केवल उदासी से घिर गई थी, लेकिन घर आकर वह उदासी रुलाई मे फूट पड़ी।

स्नानगृह मे जाकर मैं बहुत देर तक रोती रही।

आज मुझे उमा की उन बातो का अर्थ ठीक रूप मे समझ आ रहा है। सन् ७१ की चौबीस मार्च है यह और आधी रात का वक्त। कुछ

देर पहले बागला देश का ढाका बेतार केन्द्र नये राष्ट्रीय गीत "आमर सोनार बागला" को प्रसारित करने के बाद मौन हुआ है।

मन अन्दर से व्याकुल है और कोशिश करने पर भी मुझे नींद नही आ रही है। बस एक ही प्रश्न मस्तिष्क पर कुण्डली मारे फुंफकार रहा है। याह्या और बगबन्धु शेख मुजीबुर्रहमान की वार्ता का क्या परिणाम निकलेगा ? क्या हमारा अहिंसक प्रतिरोध विजयी होगा अथवा सशस्त्र सेना के सम्मुख हमे भी अस्त्र-शस्त्र उठाने होगे। सशस्त्र सघर्ष की स्थिति मे हमारा देश किसी भी मूल्य पर पाकिस्तान मे नही रह सकेगा।

यह प्रश्न और इस प्रकार की विचारधारा आज बगाल के हर स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध के मन मे हलचल मचाये है। सारा देश अपने प्रिय नेता शेख मुजीबुर्रहमान के साथ पाकिस्तानी शोषण और अत्याचार के विरुद्ध सघर्ष करने के लिए उठ खडा हुआ है। हमारी नीद, भूख, प्यास सब कुछ जैसे समाप्त होकर बस एक मांग के रूप मे सिमिट आया है। बगलादेश की दयनीय गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी को दूर करने के लिये हमे जनतान्त्रिक अधिकार चाहिये।

पाकिस्तानी अधिनायक तेइस साल तक हमें धर्म की अफीम चटा-चटा कर सजग और सचेत होने से रोकते रहे। हम एक अफीमची की तरह नशे मे धुत पडे अपना खून चुसवाते रहे। जिसने भी तानाशाहो की मर्जी के खिलाफ गरीबी या तबाही को दूर करने के लिये आवाज उठायी, उसका गला घोट दिया गया।

आज सारा बागला देश लम्बी तन्द्रा दूर कर जाग उठा है। देश के साधारण आदमी से लेकर पुलिस, पूर्वी बगाल राइफल्स, कोर्ट, कचहरी, उच्च न्यायालय सभी पाकिस्तानी सरकार के विरुद्ध एक जुट होकर खडे हो गये हैं। जनरल टिक्का खाँ को उस समय अपनी सैनिक शक्ति की दलनियत का पता अच्छी तरह चल गया था जब उच्च न्यायालय के न्यायाधीशो ने उन्हें गवर्नर की शपथ दिलाने से इकार कर दिया।

आज हर सरकारी और गैरसरकारी इमारत पर बागला देश का झण्डा शान से लहरा रहा है। जन-जन मे अपार उत्साह और उत्तेजना है। बागला देश पर मर मिटने के लिये बच्चा-बच्चा तत्पर है। ढाका यूनीवर्सिटी के प्रोफेसर, छात्र-छात्रायें जलूसो प्रदर्शनो और हडतालो में सबसे आगे बढ कर भाग ले रहे हैं।

आज बागला देश पर तानाशाह याह्या का नही जनता के सर्वप्रिय नेता मुजीबुर्रहमान का शासन चल रहा है। सभी विभागो के उच्च सरकारी अधिकारी उन्ही से आदेश ले रहे हैं। समय और न्याय की मांग भी यही है। चुनाओ मे २७९ सीटो मे से २६९ सीटें मुजीबुर्रहमान की अवामी लीग ने जीती हैं। इस प्रकार पाकिस्तान का प्रधान मत्री बनने का अधिकार भी उन्हें ही दिया जाना चाहिये। यदि ऐसा हो गया तो पश्चिमी पाकिस्तान की साढे पांच करोड जनसख्या द्वारा बागला देश के साढे सात करोड लोगो का शोषण समाप्त हो जायेगा। बागला देश प्रजातान्त्रिक प्रणाली के अन्तर्गत खुशहाली के एक नये युग मे प्रवेश करेगा।

किन्तु दिन प्रतिदिन होने वाली घटनायें कुछ और ही सकेत कर रही हैं। सुबह की बात है। जफर भइया बता रहे थे—एक तरफ याह्या हमसे वार्ता करने का ढोग रच रहा है और दूसरी तरफ अस्त्र-शस्त्रो और सैनिको से भरे जलयान पाकिस्तान से चटगांव आ रहे हैं।

"लेकिन जहाजो से माल कौन उतारेगा ? सभी मजदूर हडताल पर हैं" दादा ने कहा।

"पाकिस्तानी सैनिक मजदूरो को बहुत डरा धमका रहे हैं। कुछ मजदूरो को उन्होने बेरहमी से पीटा है। आज शाम हम उनके खिलाफ प्रदर्शन करने जा रहे हैं।"

"सुना है पाकिस्तानी हमारी पुलिस और सेना से हथियार छीनने की भी कोशिश कर रहे हैं।"

"उन्होने कोशिश पूरी की थी लेकिन आई जी पुलिस ने हथियार

सौंपने से मना कर दिया। आज आर्डीनेंस फैक्टरी मे बनने वाले हथियार अवामी लीग के स्वय सेवको को बांट दिये जायेंगे।"

"मुझे ऐसा लगता है कि खून खराबा हुये बिना नही रहेगा। तुम किसी चक्कर मे न पडना।"

"वाह दादा! कैसी बाते करते हो? बंगाल का बच्चा-बच्चा देश की आजादी के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार है और तुम कहते हो कि मैं घर मे बैठूं? नही, मैं इतना कायर नही।"

'अच्छा भइया! जो तेरे मन मे आये कर, मैं देश सेवा के कार्य से तुझे रोक कर क्यो गुनाहगार बनूं? बस अपनी सुरक्षा का ध्यान रखना।"

उसी समय बाबा कमरे मे आ गये। उनके साथ मां भी थी। बाबा लम्बी सांस लेकर कुर्सी पर बैठते हुए धीमे से बोले "मुझे आसार अच्छे नजर नही आते।"

"मैं कहती हूं कि इस जफर को न जाने क्या हो गया है? दिन रात पागलो की तरह बाहर घूमता रहता है। अरे बेटा! मन लगा कर पढाई कर जिससे इम्तहान मे पास हो सके। फिर कही नौकरी वगैरह के लिये कोशिश की जाये। तेरे बाबा जी (पिता जी) रिटायर होने वाले हैं और दोनो बहनो की शादी करने को पडी है।"

"मां! हम यह सब अपने देश मे खुशहाली लाने के लिये ही कर रहे हैं।"

"भला, मैं भी सुनूं। इस तरह कैसे आयेगी खुशहाली?"

"पाकिस्तानी सरकार किसी बंगाली को अच्छे या ऊंचे पद पर नहीं पहुचने देती। मैं चाहे कितना पढ लिख जाऊं, उससे कोई फर्क पडने वाला नही। बंगला देश मे पाकिस्तान की साठ प्रतिशत आबादी है लेकिन हमारे यहां विकास कार्यो पर केवल पश्चिमी भाग से आधा रुपया ही खर्च किया जाता है। हम विदेशो को जो माल भेजते हैं उसका अस्सी प्रतिशत लाभ पश्चिमी भाग चाट जाता है। हमारे देश पर जब

भुखमरी, बाढ और भूकम्पो का प्रकोप होता है, तानाशाह कान मे उगली डाले बैठे रहते हैं।"

"जो चावल हम पैदा करते हैं वह पश्चिमी पाक मे आठ आने किलो बिकता है। हमे उसी के दाम डेढ रुपये चुकाने पडते हैं। विदेशो से आया खराब चावल ही हममे से अधिकाश के हिस्से मे पडता है। जफर ठीक ही कहता है। हमे इन पाकिस्तानी जोको से अपने को मुक्त करने के लिये कुछ न कुछ करना ही पडेगा।" कहते-कहते शराफत दादा को भी जोश आ गया।

माँ बिस्तर से उठकर मेरी चारपाई की तरफ ही आ रही हैं। अब आगे की बातें कल लिखूंगी वरना वह नाराज होने लगेंगी।

२५ मार्च-७१

कल रात मेरी आंख लगी ही थी कि उल्लू की भयानक आवाज सुन जाग उठी। पहले सोचा कि शायद मुझे भ्रम हुआ है। लेकिन तभी फिर किसी भावी अपशकुन की सूचना देती हुई उल्लू की मनहूस आवाज रात के सन्नाटे को चीर गई। उसी समय दादा अपने बिस्तर से उठ कर ...गये। वे किसी आदमी से बहुत धीमी आवाज मे बात करने लगे। मैं अपनी उत्सुकता रोक नही सकी। दबे पांव बाहरी बैठक के ...जे पर पहुँच गई।

"कोई नई खबर है?" अज्ञात व्यक्ति उर्दू मे बोल रहा था। "यह ...। इस कागज मे मैंने सब बातें लिख दी हैं। तुम यहाँ न आया करो। उन लोगो को मेरे ऊपर शक होने लगता है।" दादा ने कहा। "घबडाओ नही, सिर्फ एक दो दिन की बात और है फिर सब ठीक हो जायेगा। फौजी टैंको के सामने इन मूर्खो की पुरानी बन्दूकें और वतनपरस्ती की बातें हवा हो जायेंगी।"

"मेरा इनाम।"

"ये पाँच सौ रक्खो, बाकी परसो ले लेना।"

मुझे काटो तो खून नही। दादा बागला देश के साथ कुछ रुपयो के लालच मे गद्दारी कर रहे हैं, यह मुझसे छिपा नही रहा। छोटा भइया है कि देश की बेहतरी के लिये अपना सिर हथेली पर लिये घूमता है। दादा की नीचता पर मेरा मन अन्दर ही अन्दर रो पडा। उनकी हर बात मे धूर्तता भरी थी। वे जफर भइया से अवामी लीग के स्वयसेवको और छात्रो द्वारा की जाने वाली सशस्त्र तैयारियो के बारे मे हर बात खोद खोद कर पूछते थे। खुद भी दिन भर इधर उधर मारे-मारे फिरते थे।

मैं क्या करूं? चुपचाप वापिस आकर बिस्तर पर आंखें मीच कर लेट गयी। लगभग पांच-छै मिनट बाद दादा भी पजो के बल चलते हुए अन्दर आये और सोने का उपक्रम करने लगे। मेरे मस्तिष्क मे भीषण सघर्ष चल रहा था। एक विचार आता कि मैं सारी बातें जफर भइया को बता दूं। परन्तु इसका परिणाम बहुत भयानक होगा। मैं भइया का स्वभाव अच्छी तरह जानती हूँ। देश की खातिर दादा को क्या वे पूरे परिवार को बलिवेदी पर चढा सकते हैं।

यदि जफर भइया को अगाह नही करती हूँ तो इसमे सन्देह नही कि पाकिस्तानी फौजें बागला देश के नौजवानों के अरमानो को पहले ही हमले मे चूर-चूर कर देंगी। या अल्ला! मैं क्या करूं? जितना मैं दादा से स्नेह करती हूँ उतना ही जफर भइया से। दोनो मे किसी पर भी आंच आये बिना, क्या काम नही बन सकता? यदि मैं माँ से कहती हूँ तो वह ऐसी हाय तौबा मचायेगी कि सारे घर मे कोहराम मच जायेगा। बाबा से कहना कैसा रहेगा? पर उनका कहना न दादा मानता है और न भइया। बडी दुरूह समस्या है। चुप भी नहीं रहा जा सकता। हां, ठीक है। एक उपाय हो सकता है। मैं स्वय ही क्यो न दादा से बात करूं? आज तक मैंने कभी उनकी किसी बात का प्रतिवाद नहीं किया, अब करूंगी, जरूर करूंगी। मैं उन्हे देश के साथ गद्दारी नहीं करने दूगी। वे मेरा क्या कर लेंगे? ज्यादा से ज्यादा हाथ

उठा देंगे या सम्भव है कुछ भी हो, चाहे मुझे अपना जीवन भी क्यों न बलिदान करना पड़े मैं उन्हे देश के साथ विश्वासघात करने से रोकूगी। सुबह उठते ही उनसे एकात मे बात करूगी।

दादा से किस तरह बात करूगी, उनसे क्या क्या कहूगी ? इस प्रकार के प्रश्नोत्तरो पर विचार करती हुई मैं कब सो गयी, पता नही चला।

"मेहरुन्निसा ! उठो बहन ! आठ बजे गये। मेहरुन्निसा !" दादा ने मुझे हाथ पकड कर उठाते हुए कहा।

मैंने आँखें खोलते ही चारो तरफ देखा। घर मे दादा के सिवाय कोई नहीं था। मुझे कुछ आश्चर्य हुआ।

"दादा ! माँ और बाबा कहाँ हैं ?"

"जलूस मे गये हैं।"

"और जफर भइया ?"

"वह तो पाँच बजे ही उठ कर चला गया। पाकिस्तानी जासूसों ने मोहल्ले मे हिन्दू-मुस्लिम दगा कराने की कोशिश की थी, खबर पाते ही चला गया। अब वे जासूस उल्टे ही स्वयसेवको के हाथो मे पड गये हैं।"

"दीदी कहाँ चली गयी ?"

"यूनिवर्सिटी मे छात्राओ की एक सभा हो रही है, उसमे गई है।"

"दादा ! मैं तुमसे एक बात कहना चाहती हूँ पर मुझे वचन दो कि मेरी बात टालोगे नही। जीवन मे पहली बार एक अनुरोध कर रही हूँ।"

"मैं जानता हूँ कि तू क्या कहना चाहती है।"

"अच्छा ! बताओ तो जानूं ?"

"रात मे तूने मेरी बातें छिप कर सुन ली हैं और तू कहना चाहती है कि मैं देश के साथ गद्दारी न करूँ। यही न।"

"तुम ठीक कहते हो दादा ! यह साढे सात करोड लोगों के जीवन-

मृत्यु का प्रश्न है। यह मेरे लिये

'तू समझती है कि मैं इतना नीच और मूर्ख हूँ कि जिस मातृ भूमि के अन्न-जल से मेरा शरीर बना है, उसी के साथ विश्वासघात करूगा।"

"फिर तुमने उस पाकिस्तानी को कागज मे लिख कर क्या दिया था ?"

"मैंने आज तक अपने बारे मे सही सूचना किसी को नही दी। लेकिन आज अपनी बहन के सामने यह सिद्ध करने के लिये कि मैं मातृ-भूमि के साथ विश्वासघात नही कर रहा हूँ, सब बातें सच-सच बताये देता हूँ। तुझे भी एक वचन देना होगा कि मेरी असलियत किसी को बतायेगी नहीं।"

"परन्तु उससे पहले दादा ! तुम्हें मेरे सिर पर हाथ रख कर सौगन्ध खानी होगी कि तुम देश के साथ विश्वासघात नही करोगे चाहे उसका मूल्य तुम्हें अपने जीवन से क्यो न चुकाना पडे ?"

"सत्य को सौगन्ध के सहारे की आवश्यकता नही होती।"

"पर उसमे आपत्ति क्या है ?"

"तू नहीं मानती तो ले," दादा ने मुस्कराते हुये अपना हाथ मेरे सिर पर रखते हुये दृढता से कहा "मैं तेरे सिर की सौगन्ध खाता हूँ कि देश के साथ विश्वासघात नही करूगा चाहे मुझे जीवन से हाथ ही क्यो न धोना पडे।"

'मैं भी वचन देती हूँ कि आपकी बातें किसी को भी बताऊगी नही।"

"तुझे यह सुन कर आश्चर्य होगा कि मैं पाकिस्तान के केन्द्रीय गुप्तचर विभाग का कर्मचारी हूँ। प्राइवेट फर्म कैली एण्ड न्यूमेन्स लिमि-टेड जिसका मैं अफसर हूँ एक छद्म आवरण है। इसमे सन्देह नहीं कि दो महीने पहले तक मैं पश्चिमी पाकिस्तान के लिये पूरी ईमानदारी से जासूसी का कार्य कर रहा था। किन्तु जिस दिन से मैंने पश्चिमी पाकिस्तानी सैनिको को अहिंसक आन्दोलनकारियों पर मशीनगन चलाते हुये देखा, मेरी आत्मा ने पाकिस्तान सरकार के लिये कुछ भी

कार्य करने से इन्कार कर दिया। मैंने देखा है कि वे कितने अमानुषिक ढग से निहत्थे लोगो को कत्ल करते हैं। वे हर बगाली से नफरत करते हैं। उसे कुत्ता और कायर समझ कर उसके मुँह पर थूकते हैं। नन्हे नन्हे मासूम बच्चो और गर्भवती स्त्रियो पर गोली चलाते हुये भी वे तरस नही खाते।"

"इतना होने पर भी तुम उन्हे देश भक्त युवको की गुप्त सूचनायें देते रहते हो ?"

"नही, मैं एक तीर से दो शिकार कर रहा हूँ। उन्हें गुप्त सूचनायें देने के एवज मे उनसे लम्बी-लम्बी रकमे वसूल करके मैं उसे अवामी लीग को चदे मे दे रहा हूँ। जानती हो, उन गुप्त सूचनाओ मे क्या होता है, सिर्फ आम बातें जिन्हे ढाका का हर बच्चा जानता है।"

"दादा ! माफ करना। मैं अनजाने मे तुमसे न जाने कितनी न कही जाने योग्य बातें भी कह गयी।"

"नही बहन ! मुझे तेरी देश भक्ति पर गर्व है। जिस देश मे तेरी जैसी लडकियाँ हो उसे ससार की कोई भी शक्ति पराधीन नही रख सकती।"

"मेहरुन्निसा ! मेहरुन्निसा !" पडोसिन सहेली की पुकार सुन मैं ...की ओर चल दी।

"क्यो नसीमन, अरे कहाँ जाने की तैयारी कर दी ?"

"तुझसे विदा लेने आयी हूँ। बाबा घर की सभी स्त्रियो और बच्चो को गाँव भेज रहें हैं। अब यहाँ रहना खतरे से खाली नही।"

उसके इस कथन को सुन मैंने व्यग्य से कहा "अच्छा,, तो तुम लोग डर कर भाग रहे हो। हम इस तरह कब तक भागते रहेगे ?"

"नही, डर के कारण नही सुरक्षा के विचार से जा रहे हैं।

तुम नही जानती कि मेरे बाबा दादा सब अवामी लीग के स्वयसेवक हैं। छोटा भाई सुलेमान भी यही रहेगा। वह कहता है मैं मद ब...ा हूँ। बागला देश के एक-एक दुश्मन को गोली से भून दूगा। आगे

तुम्हें दिखाऊँ। उसने मेरी कलाई पकडी और बाहर ले आई।

सडक पर एक ट्रक खडा था। उसमे नसीम की मां, बहनें, एव छोटे-छोटे बच्चे वगैरह बैठ रहे थे। पुरुष ट्रक पर सामान चढा रहे थे।

"वह देखो!" नसीमन ने हाथ से अपने मकान की छत की ओर सकेत करते हुए कहा।

मैंने देखा छत पर लगे डडे मे बागला देश का झण्डा हवा मे शान से फहरा रहा था। धूप की रोशनी मे चमकते झण्डे के हरे लाल और सुनहरे रग हृदय मे उत्साह तथा वीरता के भाव भर रहे थे। कितना सुन्दर और ओजस्वी है हमारा राष्ट्रीय ध्वज। हरे रग की जमीन बग भूमि के हरे खेतो का प्रतिनिधित्व करती है, बीच मे बना लाल गोला शहीदो के खून का प्रतीक है और गोले के मध्य मे पूर्व बगाल का सुनहरा नक्शा हमारा सोनार बागला है। हर इमारत के ऊपर फहराते असख्यो झण्डे बगला देश के नवजागरण और सघर्ष का जयघोष करते हुये लगा रहे थे।

नसीमन के मकान की छत पर लगे झण्डे के नीचे एक दस-ग्यारह साल का कृषकाय बालक खडा था। नसीमन का छोटा भाई सुलेमान था वह। बडी शान और अकड के साथ उसने खिलौने वाली बन्दूक एक हाथ मे पकड रखी थी। मुझे देखते ही उसने जोश से नारा लगाया "जय बागला।"

बाहर खडे और चलते फिरते सभी लोगों के मुँह से अपने आप निकल गया "जय बागला।" और एक क्षण बाद मोहल्ले के हर घर से "जय बागला" का गगनभेदी नारा सुनाई देने लगा।

"बडा बहादुर है सुलेमान। मा ने बहुत कहा कि मेरे साथ गांव चलो पर उसके दिमाग मे बस एक ही धुन सवार है। मैं यही रहूंगा और देश के दुश्मनो से लडूंगा। बाबा ने उसे बहुत समझाया, लालच दिया, डांटा भी लेकिन वह अपनी जिद्द से रच मात्र भी नही हटता। आखिरकार हम लोगो को उसके सामने हार माननी पडी।

एक राहगीर सुलेमान के जोश को देख चलते चलते रुक गया। पास की दुकान पर लगे रेडियो से एक कविता प्रसारित हो रही थी—

राखाल शिशुर हाते तुमि तुले
दियेछ तलोआर
तुमि आमार सेई स्वप्न
तुमि आमार बागला देश—

(रखवाले शिशु के हाथ मे तुमने दे दी है तलवार
तुम हमारे वही स्वप्न हो ओ बगला देश।)

तारापद राय की कविता के स्वर वातावरण मे वीरता के भाव तरगित कर रहे थे और मैं सोच रही थी यह एक प्रेरणा मिश्रित सयोग है या भावी का सकेत।

"चलो नसीमन, देर हो रही है।" तभी उसका भाई सआदत आ कर बोला। उसने मुझे देख कर कहा "मेहरुन्निसा! तुम लोग भी इनके साथ चली जाती। यहाँ का कुछ भी ठीक नही है। पाकिस्तानी फौज किसी भी वक्त जनता पर कहर ढा सकती है।"

"मैं सुलेमान की तरह यहीं रह कर देश के दुश्मनो से लड़ूंगी।"

"अगर इतना साहस है, अपना नाम स्वयंसेविकाओ मे लिखवा लो।"

"आज ही लिखवा लूंगी।"

"अच्छा मेहरुन्निसा! मैं चलती हूँ। खुदा ने बेहतर किया तो तुम्हारे लिए गाँव मे खजूर का गुड और गरी लाऊँगी।

जय बागला!"

"जय बागला!"

सआदत मेहरुन्निसा के पीछे-पीछे चल दिया। वह मुड़ मुड़ कर मुझे देखता जा रहा था। उसकी नजरो मे छिपे प्यार को मैं समझती हूँ। वह मुझे दिलो-जान से प्यार करता है। लेकिन मैं उसे प्यार एर

अच्छे दोस्त की तरह मानती हूँ। प्यार, मैं उमा को करती हूँ। खुदा भी कभी-कभी कैसी गलती कर जाता है ? उसने जब सीने मे दिल रखा, उसी समय ऐसा इतजाम कर देना चाहिए था कि प्रेम के मामले मे कोई उलझन न पैदा हो। जब एक अनार और सौ बीमार की समस्या खडी होती है, बडी कशमोकश पैदा हो जाती है। बहुत दिनो तक मैं सम्रादत के दिल मे छिपे प्यार को नही जान पाई। अगर बीमार नही पडती तो शायद कभी जान भी न पाती।

मैं गम्भीर रूप से बीमार हो गई थी। जीवित रहने की आशा बहुत क्षीण हो चुकी थी। उमा और सम्रादत दोनो ही मुझे रोज देखने आते। मेरे लिये दवाइयाँ तथा फल भी ला देते थे। सम्रादत को पडोसी होने के कारण मेरी देख-रेख का ज्यादा अवसर मिलता रहता था।

एक दिन मैंने देखा कि वह मेरे पलग के पास कुर्सी पर बैठा आंसू बहा रहा है। उस समय मां बोतल मे पानी भरने गयी हुई थी। मुझसे उसके आंसू नही देखे गए। मैंने क्षीण आवाज मे कहा "तुम रो क्यो रहे हो ?"

"मुझसे तुम्हारी हालत नही देखी जाती। खुदा न करे कि तुम्हे कुछ हो जाय वरना मैं जिन्दा नही रहूँगा। मैं तुम्हे पूरे दिल से प्यार करता हूँ मेहरुन्निसा।"

"सम्रादत। धीरज और हिम्मत…रखो। मैं खुदा की मेहरबानी से जल्दी ठीक हो जाऊँगी।"

मुझे उसका प्यार पाकर खुशी से ज्यादा रहम आया था। वह बेचारा नही जानता कि मेरा हृदय पहले ही किसी को समर्पित हो चुका है।

जब मैं घर के अन्दर बैठी इन विचारो में तल्लीन थी, मां और दादा बाहर से वापिस आये। उन्हें सुरक्षित देखकर मुझे खुशी हुई वरना इन दिनो किसी बगाली का जलूस या प्रदर्शन से सही सलामत वापिस आ जाना एक आश्चर्य है।

"माँ ! मैंने चावल अगीठी पर चढा दिये हैं। अब जरा मैं अपना नाम स्वयसेविकाओ मे लिखा आऊँ।"

"अच्छा जा, जरा जल्दी आना।"

माँ का उत्तर सुन कर मुझे आश्चर्य हुआ। वे सिर्फ नवीं कक्षा तक पढी हैं। नये विचारो की होते हुए भी उन्हें राजनीति से हमेशा चिढ रही है। यह एक दो दिन मे क्या हो गया ? देश भक्ति का ऐसा तूफान उठा है कि वग भूमि का कण-कण शत्रु को ललकारने लगा है।

मैं जल्दी से कपडे बदल कर आवामी लीग के महिला कार्यालय को चल दी। सडकों पर मैंने देखा कि नौजवान चौराहो और मोडो पर पेड, पत्थर, काठ कबाड डाल-डाल कर रुकावटें खडी कर रहे हैं। स्वयसेवक हाथो मे लाठियाँ, भाले, तलवार, चाकू लिए अपनी-अपनी ड्यूटी पर तैनात हैं। एक दो लोगो के पास राइफल और पिस्तौल भी दिखाई पडी। सभी ओर उत्साह, कर्मठता और देश प्रेम की लहरें उमड रही थीं। कई लडकियाँ भी स्वयसेवको को सहायता देने मे जुटी थी। पूर्वी वगाल राइफल्स के सिपाही स्वयसेवको का नेतृत्व कर रहे थे।

प्रमुख स्थानो पर पश्चिमी पाकिस्तान के सैनिको के समूह मशीन गनो और ब्रेनगनो को कधे से लगाये घूम रहे थे। उनके चेहरे सख्त और क्रूर थे। वे मुझे राक्षसो जैसे मालूम पड रहे थे।

पार्टी दफ्तर मे जाकर मैंने स्वयसेविका बनने के लिए फार्म भर कर सेक्रेटरी को दिया। वह तत्काल स्वीकार कर लिया गया।

"तुम क्या-क्या काम कर सकती हो ?" महिला सेक्रेटरी ने पूछा।

"मैं फर्स्टएड, प्रचार, सगठन आदि का कार्य कर सकती हूँ। कालेज मे राइफल चलाने की भी ट्रेनिग ली हूँ।" मैंने उत्तर दिया।

इसके पश्चात वह मेरे परिवार और पृष्ठ भूमि के सबध मे बातें करती रही। अत मे बोली "महिलाओ मे हमारा काम उतना नही फैला है जितना फैलना चाहिये था। आप शिक्षित और आधुनिक विचारो वाले परिवार की युवती हैं। अपने मोहल्ले मे कम से कम पचास युवतियो

को स्वयसेविका वनाइए और कल सुवह नौ वजे मुझसे मिलिए। मोहल्ले मे अपने कार्य के सम्वन्ध मे आपके जफर भाई भी गाइड कर सकते हैं।"

मैं प्रसन्न मन से वापिस चली आई।

"अरे! ये गोलियां चलने की आवाज कहां से आ रही है? मुझे डायरी लिखना समाप्त करना पडेगा। इस डायरी को अव छिपा कर रखना जरूरी हो गया है। कई गुप्त वातें लिख दी है।

× × ×

मैं प्यासी हूं, खून की प्यासी और मेरी यह प्यास उस वक्त तक तृप्त नही होगी जव तक मैं एक-एक पाकिस्तानी सैनिक का खून नही पी जाती।

मन होता है कि महाकाली की तरह अपने सिर के वाल खोल, एक हाथ मे तलवार और दूसरे मे खप्पर लेकर ढाका के कैन्टूनमेण्ट एरिए मे घुस जाऊं और पाकिस्तान के जालिम, वर्वर और वेरहम फौजियो के सिर काट कर उनकी माला वना कर अपने गले मे पहन लूं।

मेरी समझ मे नही आता कि किस तरह और किन शब्दो मे अपने भाव प्रकट करू? मैं लेखिका नही किन्तु इस डायरी मे अपने हृदय मे मे आलोडित होते विचारो को लिख कर कुछ शान्ति पाने का प्रयास करने के अतिरिक्त मेरे पास अन्य कोई मार्ग भी तो नही।

मैं वहुत दुखी हूं और वहुत खुश भी। वहुत परेशान हूं और वहुत निश्चिन्त भी। मैंने जीवन की सवसे अनमोल वस्तु पा ली है और मेरा सर्वस्व लुट चुका है।

घटनाओ को शुरु से लिखना वेहतर होगा। उस रात वदूको और गनमशीनो से छूटने वाली गोलियो की आवाज रह रहकर तेज होती चली गयी। उसके साथ ही "जय वागला" का जय घोष भी ऊंचा होता चला गया और शीघ्र ही पूरे ढाके का आकाश "जय वागला! हानादार होशियार! वग वधु मुजीव जिंदावाद! के नारो से गूजने लगा।

हम लोग ऊपर छत पर चढ गये। सैनिक हवाई अड्डे, लक्ष्मीबाजार और यूनिवर्सिटी की दिशा मे आग की लपटें चमकती हुयी दिखायी दी।

"माँ! दीदी और भइया अभी तक नहीं आये। खुदा उनकी खैर करे!'

"जवानी का जोश है। देश की स्वाधीनता के लिए कही लड रहे होगे पाकिस्तानियो से।" दादा ने कुछ ऐसे स्वर मे कहा कि यह पता लगाना कठिन था कि वे व्यंग्य कर रहे हैं अथवा अपने देशभक्त भाई बहन पर गर्व।

बाबा हमेशा की तरह चुप रहे मानो उनके चारो तरफ कुछ भी घटित नही हो रहा है। माँ ने आकाश की ओर हाथ फैलाते हुए कहा था! खुदा! परवरदिगार! मेरे बच्चो की हिफाजत करना! खुदा इन पाकिस्तानियो पर कहर ढाये।'

उनकी आवाज दुख से भीगी हुई थी। अंधेरे मे यद्यपि मैं उनका चेहरा नहीं देख पाई मगर यह अनुमान लगाना कठिन नही था कि उनकी पलको पर आंसू तैर रहे हैं।

"अरे! वे कौन चले आ रहे हैं। पाकिस्तानी सैनिक हैं। वे कम से कम पचास होंगे, इधर ही आ रहे हैं।" दादा ने डरती हुई आवाज में कहा।

'माँ! बाबा! मेहरू! तुम सब जाकर घर मे कही छिप जाओ। इन शैतानो की औलादो का कुछ ठिकाना नहीं। ये देखो! वे अंधा धुंध गोली चलाने लगे।

चलो! जल्दी करो!"

"तुम भी चलो बेटा!"

"नही, मैं सरकारी आदमी हूँ। वे मेरा कुछ नही करेंगे। हां, मेरे न मिलने पर वे जरूर घर की तलाशी लेंगे।"

"नहीं, हम तुम्हे साथ लिये बिना नही जायेंगे।"

वावा ने कहा। उनके स्वर मे दृढता थी।

"अच्छा, आप मेहरुन्निसा को छिपा दीजिए कही।" दादा ने कहा।

मैं वावा के साथ चल पडी। दादा ने धीमे से कहा "वहन! मेरी अटैची मे एक ब्रीफकेस रखा है उसे अपने साथ ले जाना और जफर की आलमारी मे जो डायरी रखी है, उसे भी।"

"अच्छा दादा!" कह कर मैं वावा के पीछे चल दी।

सवसे पहले मैंने दादा की अटैची मे से ब्रीफकेस निकाला और उसके वाद भइया की अलमारी मे से डायरी। वावा मुझे अपने साथ बैठक मे ले गये। बैठक के एक ताख के अन्दर हाथ डाल कर उन्होंने कोई वटन दवाया और मैंने आश्चर्य से देखा कि दाहिनी ओर की दीवार मे जडी अलमारी धीमे धीमे एक तरफ को खिसक रही है।

"इसके अन्दर चली जाओ वेटी! मेरे वावा ने यह गुप्त कमरा ऐसे ही सकट मे काम आने के लिये वनवाया था।"

मैं सहमते डरते उस अधेरे भरे कमरे मे चल दी। "देखो! वेटी! इस कमरे के वायी तरफ एक स्विच है उसे दवाने से यह अलमारी तुम अन्दर से भी खोल सकती हो। दाहिनी ओर का स्विच विजली का है पर उसे अभी ऑन मत करना। अच्छा, घवराना नही। मैं ठीक कर लूगा। आखिर वे हमारे, पाकिस्तान के ही सैनिक हैं।" इतना कह, उन्होंने स्विच दवा कर फिर अलमारी को यथास्थान पर कर दिया।

मैंने अधेरे से घवरा कर विजली वाला स्विच दवा दिया। वह छोटा सा गुप्त कमरा रोशनी से भर गया। कमरा साफ सुथरा था। इससे पता चलता था कि मां या वावा उस कमरे की गुप्तरूप से सफाई करते रहते थे। उसी समय मेरी नजर अलमारी के पिछले भाग पर पडी। उसमें एक छेद था। मैंने उसमें आंख लगा कर देखा, पूरी बैठक का दृश्य स्पष्ट दिखायी देता था। मन मे अपने पूर्वजो की बुद्धिमानी

पर सराहना के भाव जाग उठे। मैंने बाबा के आदेशानुसार रोशनी बुझा दी।

अंधेरा होने के साथ ही मेरे मन मे तरह तरह की शकाये अपना सिर उठाने लगी। पता नही क्या हो ? दादा पाकिस्तानी गुप्तचर विभाग के कर्मचारी अवश्य हैं पर कही सरकारी अफसरो को उनकी ईमानदारी पर सन्देह न पैदा हो गया हो। कही दादा बागला देश के साथ विश्वासघात न कर रहे हो ? सौगन्ध केवल मेरा मन रखने के लिये खायी हो। गोलियो की आवाजें तेज होती जा रही थी। फौजी बूटो की आवाजें नजदीक आती गई और कुछ ही मिनटो बाद हमारी बैठक का दरवाजा किसी ने जोर से खटखटाया। दादा ने पूछा "कौन ?"

"उत्तर मे बाहर से कुछ कहा गया जो मुझे सुनाई नहीं पड़ा। दादा ने दरवाजा खोल दिया। इसी बीच मां और बाबा भी बैठक मे आ गये।

चार पाकिस्तानी सैनिक अफसर से दिखायी देने वाले लम्बे तगड़े जवान बैठक मे दाखिल हुये। उनमे से तीन के हाथो मे रिवाल्वर थे और एक के पास स्टेन-गन।

"मिस्टर शराफत आपने पाकिस्तान की जो बेशकीमती सेवायें की हम आपको उनका इनाम देने आये हैं।" कहते हुये फौजी अफसर अपना रिवाल्वर दादा के सीने पर तान दिया।

रिवाल्वर से गोली निकले कि इसके पहले ही बाबा अफसर और दादा के बीच मे आ गये।

"नही, नही साहब ! ऐसा · जुल्म ··

धांय की आवाज के साथ ही बाबा फर्श पर गिर पडे। गोली ठीक उनके हृदय पर लगी।

"या अल्लाह ! जालिमो ! यह तुमने ... कहती हुई मां आगे बढी कि क्रूर अफसर ने उसे भी गोली का निशाना बना दिया।

दादा ने इसी बीच जेब से रिवाल्वर निकाल लिया था। उन्होंने अपने

फुर्ती से दो अफसरो पर गोली चलायी। एक उसी वक्त फर्श पर लोट गया। दूसरा लडखडा कर गिर पडा। शेष दो पाक अफसरो ने दादा को रिवाल्वर की गोलियो से भून दिया।

"भागो! जल्दी करो! मुजाहिदो ने हमे घेर लिया है।"

दोनो अफसर यह सुनते ही बैठक से बाहर चल दिये। इतना देखते-देखते मैं मूर्छित हो गयी। जब मुझे होश आया, मैं मुश्किल से उठ कर खडी हो सकी। छेद से आंख लगा कर देखा। आंखें आंसुओ से इतनी भरी हुयी थी कि पहले तो कुछ दिखायी नही पडा। कुछ पल बाद दादा के घावो पर पट्टी बांधता हुआ सआदत दिखायी दिया। अलमारी हटाने वाला स्विच दबा कर मैं गुप्त कमरे से बाहर निकली।

"खुदा का शुक्र है मेहरुन्निसा कि तुम उन दरिन्दो से बच गयी। तुम्हारी मां और बाबा के शव को फौजी अपने साथ ले गये हैं। बद-माशो ने दादा के चार गोलियां मारी हैं। लेकिन इनके बचने की अभी काफी उम्मीद है। डाक्टर को बुलवाया है।"

दादा की दयनीया दशा और माता पिता के शोक ने मुझे पागल बना दिया था। इतनी जल्दी और इतनी बेरहमी से उन हैवानो ने मौत का कहर ढाया कि मेरी सोचने-समझने की शक्ति ही लुप्त हो गयी। मैंने दादा के सिर को अपनी गोदी मे रख लिया और उनके मूर्छित मुख को टकटकी बांध कर देखने लगी। दादा के चेहरे पर दुख या पीडा का जरा सा भी चिन्ह न था। इसके विपरीत जीवन मे प्रथम बार मैंने उनके मुख पर एक अपूर्व गौरव की आभा देखी।

"आह! कौन मुहरु

"हा दादा! आप

"पा पानी "

सआदत ने जल्दी से पानी लाकर दिया।

पानी पीने के बाद दादा ने बड़े गर्व से कहा "देखा बहन! मैंने उन दो बदमाशो को ओह मार कर अपना बदला ले लिया मेरी

देश भक्ति···पर विश्वास······

"हां, दादा ! मुझे आप पर गर्व है। ज्यादा बोलिये नही। अभी डाक्टर आने वाला है, आप ठीक हो जायेंगे।" मेरी बात सुन दादा को पीडा के उन क्षणो मे भी हल्की सी हसी आ गयी। हसी के साथ ही थोडा सा खून मुँह से बाहर निकल आया। अपने दुपट्टे से मैंने दादा का मुह पोछा और मेरी आंखो की कोरो पर डबडबाते आंसू लुढक कर उनके कपोलों पर चू पड़े।

'पगली !·· देश भक्तो के मरते वक्त रोते नहीं है।"

"नही · दादा ··तुम···मरोगे · नही···"

"मेहरु ! · प्यारी बहन 'आवार आसिबो फिरे' सुना दे, बस !"

मैं चुप रही।

"सुना···दे···न···बहन ·"

"दुख के आवेश को रोकने का प्रयास करते हुये मैंने रुंधे कंठ से गाना शुरू किया · 'आवार आसिबो फिरे, धान सिडिटर

तीरे, एई बागलाय

हयतो मानुप नय-हयतो शखचिल'

जीवनानन्द का वह मधुर गीत मैं जैसे गाती गई, दादा के चेहरे पर न्तोप के भाव छाते चले गये और मेरे आंसुओ का वेग भी धीरे धीरे मने लगा। मैं भाव विभोर हो गाती जा रही थी—शालिमेर वेशे,

हय तो भोरेर काक हये एई कार्तिकेर

नवन्नेर देशे' (फिर आऊँगा लौट कर, धान सीडिटि के किनारे—इसी बंगाल मे। हो सकता है मनुष्य नही चील या मैना के वेश मे। अथवा सुबह का कागा होकर—कातिक के नवान्न करने वाले देश मे।)

"आवार·· आसिबो फिरे " दादा अस्फुट स्वर मे बोले और गरदन एक ओर को झूल गई।

थमे हुए आंसू फिर वह निकले।

'धीरज रखो ! मेहरु ! इस तरह रोते नही । दादा शहीद हुये है और हमे उन्हे मरते समय एक महान वलिदानी जैसा सम्मान देना चाहिये ।" सम्रादत ने रूमाल से मेरे आँसू पोंछते हुये कहा ।

"सम्रादत !......

उसने धीरज वधाते हुये मेरी पीठ थपथपायी । सात्वना पाकर मैं उसके सीने से सिर टिका कर रोने लगी । शोक के उस सागर मे मुझे सम्रादत का वक्ष एक दृढ चट्टान की तरह सहारा देता हुआ लगा । हृदय और मस्तिष्क पर जमे दुख के मेघ अश्रुधारा वन वह निकले । कुछ क्षण ऐसे ही वीत गये । ओह, अब मुझमे आगे नही लिखा जायेगा । माँ, वावा और दादा की याद से मैं फिर कातर हो उठी हूँ ।

× × ×

'मेहरु ! रोना वन्द करो । आओ हम दादा के सम्मान मे राष्ट्र गान गायें ।" सम्रादत ने मेरे आँसू पोछते हुये मुझे उठाया ।

"आमार सोनार वागला देश

आमि तोमाय भालोवासि ..

धीरे धीरे मेरा दुख गीत की मधुरता में खोता चला गया । मैंने अनुभव किया कि जैसे वागला देश की जनता शहर-गांव, घर, हाट, घाट, वाट मे सिर पर कफन वांधे यही गीत गाती फिर रही है । पाकिस्तानी गोलियो की वौछारो और वमो की रचमात्र भी चिता किये विना देश के दीवाने आगे वढते जा रहे हैं । हजारो शराफत दादा, हजारो माँयें और वावा शस्य श्यामला भूमि को अपने रक्त कमल से श्रद्धाजलि अर्पित कर रहे हैं ।

"जय वागला ! जय जय जय वागला !"

'मेहर ! आओ हम प्रण करें कि चाहे कुछ हो जाय हम माँ, वावा और शराफत दादा जैसे निर्दोष लोगो की हत्या का वदला पाकिस्तानी सेना से लेकर रहेंगे ।"

"हाँ, सम्रादत जरूर ! चाहे इसके लिये हमे वडे से वडा त्याग

क्यो न करना पडे।"

"क्यो तुम्हारी दीदो और भइया अभी तक नही आये ?"

"वे पार्टी के निर्देश पर कही गये हैं।"

सआदत ने दीवान पर पडी चादर उठा कर दादा के ऊपर डाल दी।

"अच्छा, अब मैं चलता हूँ। गली के मोड पर हम लोगो ने अपना मोर्चा बना रखा है। हो सकता है कि वे दोबारा हमला करे।" कहते-कहते सआदत ने आगे बढ़ कर मेरी हथेली को पकड कर एक चुम्बन ले लिया. फिर। बोला "माफ करना ! पता नही तुमसे फिर मिल सकू या नही, इसीलिए इतना दुस्साहस कर बैठा।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूगी। मुझे राइफल चलाना आता है। यहाँ सूने घर मे हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहने से उन दरिंदो से लडते-लडते मर जाना बेहतर है।"

"हम पचास आदमियो के बीच केवल दस राइफलें है और वे हमने सबसे अच्छे निशानेबाजो को दे दी हैं, बाकी लोग पत्थरो, लाठियो और लोहे की छडो से दुश्मन का मुकाबला करते हैं।' सआदत ने कहा।

"कोई बात नही मैं भी पत्थरो और लाठियो से लडूंगी। अगर वे भी न मिलें तो अपने नाखूनो से उनका मुकाबला करूंगी।'

इसी समय सुलेमान ने कमरे मे प्रवेश किया। उसने सआदत से 'मोहल्ला कमाण्डर ने आपको फौरन बुलाया है।"

"आओ, तुम भी हमारे साथ चलो।" सआदत ने मुझसे कहा।

मैं दरवाजे की कुण्डी बन्द कर उसके साथ चल दी। सुलेमान जैसे दस वर्षीय बच्चे का साहस देख मेरे हृदय मे स्वतन्त्रता संघर्ष के लिए नया उत्साह हिलोरें मारने लगा। उस समय रात के करीब दो बज रहे होगे लेकिन बालक सुलेमान पूरी मुस्तैदी और हिम्मत के साथ सदेशवाहक का कार्य कर रहा था। उसने बगल मे गुलेल लटका रखी थी। दूसरे कधे पर काच की गोलियो से भरी थैली लटक रही थी।

उसके हाथ मे वेंत था जिसके अगले सिरे पर लोहे की नुकीली सलाख लगी थी। मेरे मन के टेपरिकार्डर पर फिर वही पंक्तियां गूंजने लगी "राखाल शिशुर हाते तुमि तुले दियेछ तलोवार!"

"दीदी! क्या तुम भी हमारे साथ चल रही हो? सचमुच तुम बहुत बहादुर हो।" सुलेमान बोला।

मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा "जब तुझ जैसे बच्चे देश के लिए लड रहे हैं, मुझे घर के अन्दर बन्द रहना शोभा नही देता।"

"हम जरूर जीतेंगे, है न दीदी?"

"हां, जरूर जीतेंगे। शहीदो की कुर्बानियां कभी बेकार नही जाती।"

गली के मोड पर बने मोर्चे पर पहुंचते ही मैंने अपनी इच्छा मोहल्ला कमाण्डर को बताई। उसने मुझे पास के एक मकान की छत पर जाने का आदेश दिया। उस छत पर जाकर मैंने देखा कि वहां ईंटो, पत्थरो, सोडावाटर की बोतलो, मिर्च मिले पानी के टबो आदि का ढेर लगा है। इस मोर्चे का नेतृत्व एक अधेड महिला कर रही थी। उसने मुझे सोडावाटर की बोतलो के पास बैठ जाने को कहा फिर बोली सुनो! जैसे ही मैं हमला करने का आदेश दूं तुम्हे बोतल को उठा कर बैठे-बैठे ही मुरेड पर पहुंचना है। नीचे फौजी लोग होंगे। बोतल हमेशा उनके बीच मे फेंकनी है, समझी। तुम्हारे साथ दस लडकियां और हैं। तुम्हे अपनी बोतल उनके साथ ही फेंकना है। बोतल फेंकने के बाद जल्दी से पीछे हट कर बैठ जाना है, समझ गयीं।"

"जी हां, समझ गयी।"

उस छत पर लगभग तीस महिलायें होगी। वे दस-दस की टोली मे अलग-अलग बैठी थी। सब मौन थी। इतनी स्त्रियो का एक जगह बैठ कर भी मौन रहना मुझे आश्चर्यपूर्ण लगा। शायद मौत का सामना करते वक्त स्त्री-पुरुष सभी समान गुण धारण कर लेते हैं।

मैंने दूसरी छतो की ओर ध्यान दिया। गली के दोनो ओर की कई

छतो पर महिलाओ के मोर्चे जमे हुये है और उनमे आपस मे टार्चो द्वारा साकेतिक भाषा मे सूचनाओ का आदान प्रदान चल रहा है।

रुक रुक कर दूर पर गोलियो के चलने की आवाजें सुनाई दे रही थी।

मैं जिस स्थान पर बैठी थी, वहाँ से सडक के नीचे का दृश्य स्पष्ट दिखाई दे रहा था। मुझे वह छत इस प्रकार की मोर्चेबदी के उपयुक्त नही लगी। छत की मुडेर केवल दो या तीन फीट ऊँची रही होगी। वह केवल एक ईंट की बनी हुई थी और उसमे झरोखे थे। मैं उन झरोखो से सडक का अधिकाश भाग देख सकती थी। गली के नुक्कड पर भारी रुकावट खडी कर दी गयी थी। उसके दोनो ओर बस इतना स्थान था कि एक आदमी गली मे आ सके।

लगभग बीस मिनट बाद सडक की ओर बने एक मकान की छत पर से लाल टॉर्च का प्रकाश हमारी छत की दिशा मे फेंका गया। मै समझ गई कि यह किसी भावी खतरे का सकेत है। तभी एक मिलेट्री ट्रक गली के आगे बनायी गयी रुकावट के समीप आकर रुक गया। रुकावट के दोनो ओर से मशीनगन और आटोमेटिक रायफल चलाते फौजी एक-एक करके अन्दर आने लगे। उन्होंने गली के दोनो ओर धुं फायर करने शुरू किये। उनमे से कुछ ने छज्जो और छतों की र भी गोलियां चलायी। हम सब अपनी-अपनी ईंटो, पत्थरो और ो को पकडे दम साध कर आक्रमण के आदेश की प्रतीक्षा करने े।

वे लगभग पचास फौजी रहे होंगे। जब वे गोलियो की क्षण भेदी बौछार करते हुये गली के अन्दर सौ डेढ सौ कदम आ गये [illegible] गगन भेदी नारा उठा।

"जय बागला!"

"जय बागला!"

और पांच मिनट तक ट्रटठाय! ट्रटठाय! ठाय ठाय ट ट ट ट ट ट··ट धाड, धाड, फटाक, फट, फटाक जय बागला ट ट ट ट

ट ठाय ! आटोमेटिक रायफलो, मशीनगनो, वन्दूको, पत्थरो और वोतलो के चलने, टूटने-फूटने और विखरने की इतनी तेज आवाजे सुनाई देती रही कि कान सुन्न पड गये।

इसके अतिरिक्त कुछ युवक युवतियाँ ऊपर से मिर्च मिले पानी की तेज जलधारायें भी नापाक दरिंदो के ऊपर फेंक रहे थे।

उन्होने सपने मे भी इतने वडे मुकाबले की कल्पना नही की होगी। हमारे पहले ही हमले मे वे पीछे भागने लगे। हमे रुक जाने का आदेश मिला और उन गुनाहगार भगोडो पर हमारे सामने वाली छतो से ईंटो तथा पत्थरो की बौछार की जाने लगी। इस वार फौजियो ने एक मकान पर पेट्रोल छिडक कर आग लगा दी। अब वे अधाधध गोलियाँ चलाने लगे।

"हमला करो !" अपनी कमाण्डर की आज्ञा सुन कर हमने इस वार मौत की विना परवाह करते हुये फौजियो पर भीषण हमला किया। गली के दूसरी तरफ के मकानो से भी उन पर आक्रमण किया गया। अपनी गली के एक मकान को जलते हुये देख कर हम क्रोधित नागिन की तरह लड रही थी। आग की रोशनी मे फौजियो पर आसानी से ताक कर निशाने लगाये जाने लगे। अब वे दीवारो से सट कर गोलियाँ चला रहे थे और धीरे धीरे पीछे हट रहे थे। गली से भागते हुये उन्होने एक मकान मे और आग लगा दी।

उनके भाग जाने के वाद मोहल्ले के लोग पानी से आग बुझाने का प्रयत्न करने लगे। फायर व्रिगेड को फोन किया गया। वहाँ से उत्तर मिला "हमे चारो ओर से फौजियो ने घेर रखा है। वे हमे शहर मे कही भी आग बुझाने के लिये नही जाने देते। हमे माफ करिये और अपनी मदद अपने आप करिये।"

मोहल्ले के अधिकाश लोग उन दो मकानो मे लगी आग और उसमे फसे हुये स्त्री पुरुषो और वच्चो को वचाने की कोशिश मे लगे थे। इनमे से पहला मकान अवामी लीग के एक नेता महमूद साहव का था और

दूसरे मे यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर मिस्टर वसत रहते थे। प्रोफेसर वसत यद्यपि आवामी पार्टी के सदस्य नही थे परन्तु उन्होने शेख मुजीब के सिद्धान्तो का प्रचार करने के लिए कई प्रसिद्ध पुस्तकें लिखी थीं।

प्रोफेसर वसत का मकान गली के अन्य मकानो के साथ सटा हुआ था। इसलिए उसमे रहने वाले अधिकाश लोगों को आस पास की छतो पर उतरकर अपनी जान बचाने की सुविधा थी। लेकिन महमूद साहब का मकान अन्य इमारतो से दूर था। इसलिये उस इमारत मे रहने वालो की जीवन रक्षा करना एक कठिन समस्या बनी हुई थी। दोमजिले पर आग की लपटो मे फसे लोग सहायता के लिए जोर-जोर से चीख-चिल्ला रहे थे। उन्हें बचाने के लिए पाँच-छ आदमी कही से मोमजामा ले आये। मोमजामे के कोनो को उन्होने चारो ओर से पकड रखा था और वे दूसरी मजिल मे फसे लोगो से उस पर कूदने को कह रहे थे। अधिकाश स्त्री पुरुष बाल्टियो मे पानी भर भर कर आग मे डाल रहे थे। तीन-चार पम्प भी आ गये थे और रबर की नालियो से पानी की तेज धारा आग की लपटो पर छोडी जा रही थी।

ट ट ट ट ठाय! ट ट ट ट ठाय! ट ट ट ट! अचानक फौजियो ने आग बुझाने वालो और आग मे फसे लोगो पर गनमशीनो से गोलियो की बौछार कर दी। फौजियो ने इतनी चालाकी से आक्रमण किया था कि हमारे सदेहवाहको को खतरे की सूचना देने का अवसर ही न मिला।

इस अप्रत्याशित आक्रमण से दर्जनो लोग गोली के शिकार बन गये और बहुत से घायल हो गये। लगभग पाँच मिनट के अन्दर ही हमारे स्वयसेवको ने फौजियो पर भयानक आक्रमण किया। वे फिर दुम दबा कर भागने लगे। किन्तु इस बार उनका पीछा किया गया और फौजी ट्रक मे आग लगा दी गयी। सडक पर तैनात मुजाहिदो की टोलियो ने जैसे ही फौजियो को दूसरी तरफ से घेर कर गोलियाँ दागनी शुरू कि कि वे सिर पर पैर रख कर भाग खडे हुए।

रात भर की लडाई मे केवल हमारे मोहल्ले मे ही सौ लोग शहीद हो गए थे और दो सौ घायल। महमूद साहब के घर मे रहने वाले निवासियो को आग से नही बचाया जा सका। उनके मकान मे इस वक्त सब स्त्री, पुरुषो और बच्चो को मिला कर तकरीबन बीस लोग होगे। अच्छा सिर्फ यह हुआ कि महमूद साहब और उनके परिवार के अधिकाश लोग शाम से ही शहर मे जगह-जगह पर बने मोर्चो और समितियो मे काम करने चले गये थे।

आसमान पर तारो की चमक हल्की पडने लगी थी। पूर्व दिशा मे सूरज निकलने से पहले की लालिमा धीमे-धीमे फैल रही थी सुबह की 'बादे-सबा' बारूद की गध से बोझिल और बासी मालूम पड रही थी और पूरब का आकाश घावो से क्षत-विक्षत, लहू-लुहान।

'अब आप सब लोग घर जाकर आराम कीजिए। रात ठीक ग्यारह बजे सभी बहने यही आ जाएँ।"

"मैंने अपने कदम घर की ओर बढाए कि मेरा दिल फिर से गमगीन और उदास हो गया। अब वहां रह ही क्या गया था सिवाय दादा की लाश के ? मां और बाबा ने भला क्या बिगाडा था कि इन बेदर्द पाक फौजियो ने उन्हे हमेशा के लिए मौत के मुह मे सुला दिया। मेरे पैर डगमगाने लगे फिर भी मैं अपने शरीर का बोझ ढोती हुई घर की तरफ बढने लगी। पता नही भइया और दीदी वापिस लौटे हो या नही ? यदि वे वापिस नही आए होगे तो मैं मोहल्ला कमाण्डर से उनका पता लगवाने की कोशिश करूंगी ? कही वे भी शहीद न हो गए हो ? या खुदा ! मेरे दिल पर इतना सदमा तो न तोड कि मैं उसे बर्दाश्त न कर सकू।

कुछ दूर से घर का दरवाजा खुला हुआ दिखाई दिया। एक दो लोग बाहर खडे थे। मुझे कुछ ढाढस बधा। इसके मतलब यह हुए कि भइया या दीदी मे से कोई जरूर वापिस लौट आया है।

मैंने जब बैठक मे कदम रखा अपने भइया को दादा के शव के पास

बैठा हुआ पाया। वह कुरानशरीफ पढ रहा था। पढते-पढते वह अपनी आँखो से बहते आँसुओ को पोछता जाता। उसे देखते ही मेरा दिल भर आया, आँखें नम हो उठी। दिल मे दर्द का एक गोला सा ऊपर उठता महसूस हुआ और मेरी सिसकियां कुरान की पाक आयतो के लफ्जो के साथ घुल मिल गई।

सआदत और अन्य स्त्री-पुरुष बैठक मे मौन साधे बैठे थे। शायद उन्होने भइया को सब कुछ बता दिया था। मैं भी जफर भइया के पास बैठ कर अपने आँसुओ को दुपट्टे से पोछने लगी।

हमारे पडोसी बुर्जुग चाचा अल्लाबख्श ने उठ कर जफर की पीठ थपथपाते हुए कहा 'इन्नल्लाहा मा अस साबेरीन" (अर्थात खुदा सब्र करने वालो के साथ है) उठो! अब इनकी अन्तिम क्रिया करने का इन्तजाम करो।

वे दादा के शव को लेकर चल दिये। मैंने मन ही मन दादा को आखरी सलाम किया। मुझे उनकी एक-एक बात याद आने लगी—'मैं तेरे सिर की सौगंध खाता हूँ कि देश के साथ विश्वासघात नही करूँगा चाहे मुझे जीवन से ही हाथ क्यो न धोना पडे।'

अपने सिर पर रखे उनके हाथ का कोमल स्पर्श एक बार फिर से अनुभव कर मैं रोमांचित हो उठी।

'पगली! देश भक्तो की मौत के वक्त रोते नही।"

"आबार आसिबो फिरे"।

और मेरे आँसू यकायक जहाँ के तहाँ थम गए। मेरी मुट्ठियाँ तन गईं और मैंने जोर से चीख कर कहा "खून का बदला खून से लूँगी।"

मेरी तेज आवाज सुन कर पडोस की स्त्रियाँ और बच्चे दौड़ कर मेरे पास एकत्रित हो गए। किसी महिला ने कहा "धीरज रखो बहन! हमारे भाइयो का खून बेकार नहीं जायेगा। उनके खून की एक-एक बूंद से सैकडो वतनपरस्त पैदा होंगे और इन जालिम आततायियों का सफाया करेंगे।"

"तुम्हारा रेडियो कहाँ है ? सुना है आज बगबधु मुजीब कोई खास एलान करने वाले हैं।" एक लडके ने आकर पूछा मैंने मेज पर रखे रेडियो की ओर इशारा किया। उसने आगे बढ कर स्विच ऑन कर दिया।

स्वाधीन बांगला देश के ढाका बेतार केन्द्र से लायला अजुमन बानो की मधुर आवाज सुनाई देने लगी—"अभी आपने कलामे पाक की आयतो का तर्जुमा सुना, अब गीता के श्लोक सुनिए—हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चय।"

इसके बाद बगला मे गीता के श्लोक का अनुवाद प्रसारित होने लगा—श्रीकृष्ण जी अर्जुन से कहते हैं कि जैसा मैंने तुझे समझाया है इससे युद्ध करना तेरे लिए सब प्रकार से अच्छा है क्योकि या तो मर कर स्वर्ग को प्राप्त होगा अथवा जीत कर पृथ्वी को भोगेगा, इससे हे अर्जुन ! युद्ध के लिए निश्चयवाला होकर खडा हो।

इसके बाद अब्दुल अलीम ने समाचार सुनाने प्रारम्भ किए। उनका सार यह था—पूरे बागला देश ने पाकिस्तानी फौजियो और हुकूमत के खिलाफ युद्ध छेड दिया है और अपने को स्वाधीन घोषित कर दिया है। याह्या खा और भुट्टो पाक फौज को स्वाधीनता की माग को दबाने और जनता के आदोलन को कुचलने की पूरी आजादी देकर कराची जा चुके हैं। फौजो ने कल रात लगभग ढाई सौ बगालियो को मौत के घाट उतार दिया, एक हजार को घायल कर दिया। बगला देश की नवगठित मुक्ति सेना ने फौज का कडा मुकाबला किया। बगाल के अधिकाश भागो पर मुक्ति सेना का अधिकार हो गया है। कई स्थानो पर पाकिस्तानी फौजियो ने मुक्ति सेना के सामने आत्म-समर्पण कर दिया है। मुक्ति सेना मे पूर्व पाकिस्तान राइफल्स, पुलिस और नागरिक बडी सख्या मे शामिल हो गए हैं। जनरल टिक्का खां को शमशुद्दीन नामक व्यक्ति ने गोली मार कर बुरी तरह घायल कर दिया है।

इसके बाद बगबधु शेख मुजीबुर्रहमान की घोषणा प्रसारित की

गई। उन्होंने बताया कि बागला देश की जनता को एक दो दिन मे पूर्ण विजय मिल जायेगी। लेकिन इसके लिए हमे बडी से बडी कुर्बानी देने के लिए सहर्ष तैयार रहना है। उन्होंने आदेश दिया कि जो लोग विदेशी सैनिको की मदद करेंगे उन पर मुकदमा चलाया जाएगा। जनता और मुक्ति सैनिको को चाहिए कि वे पश्चिमी पाकिस्तानी सैनिको को खोज-खोज कर उन पर हमला करें। सभी हवाई अड्डो को घेर कर उन पर कब्जा कर लें।

बगबधु की घोषणा और बागला देश की स्वाधीनता के समाचार ने मेरे हृदय के घावो पर जैसे ठडा मरहम लगा दिया। आजादी के लिए मर मिटने का नया उत्साह मेरी नस नस मे जोश मारने लगा। आंसुओ से भीगे मेरे होठो पर देश प्रेम की मुस्कान खिल उठी।

जफर भइया वापिस आ गए। उन्हे देख महिलाय और बच्चे धीमे-धीमे बाहर चल दिये। जाते वक्त हर एक ने हम दोनों से धीरज और खुदा पर भरोसा रखने का आग्रह किया।

"बहन! लोग समझ रहे हैं कि मैं, मां, बाबा और दादा की कुर्बानी से विचलित हो गया हूँ। नही, ऐसा नही है। मुझे गर्व है कि मेरे घर के बुजुर्गों ने खुद शहीद हो कर पूरे देश के सिर का ऊंचा कर दिया है। मुझे तुझ पर भी नाज है बहन! तूने अपने आंसुओं को क्रान्ति की चिंगारियों मे बदल दिया और मार्चे पर जा डटी। सभादा ने मुझे तेरी हिम्मत और बहादुरी के बारे मे सब कुछ बता दिया है।

उसी समय मुझे दादा के ब्रीफकेस और भइया की डायरी का [illegible] आया। मैं भी कैसी बुद्धू हूं? इस हत्याकाण्ड का [illegible] बैठी थी। गुप्त कमरे से बाहर निकलते समय मैंने शायद [illegible] अलमारी मे रख दिया था। मैं जल्दी से अलमारी खोल कर उन [illegible] खोजने लगी। वे मुझे अलमारी के किसी भी खाने मे [illegible] मैं घबरा उठी।

"क्या डायरी और ब्रीफकेस खोज रही हो?" भइया ने [illegible]

राहट देख कर पूछा ।

'हाँ, पता नही कहाँ रख दी ?"

"यहाँ आते ही मेरी नजर उन पर पड गयी थी। मैंने उन्हे सभाल कर रख दिया है। दादा के ब्रीफकेस मे एक रिवाल्वर, कुछ गोलियाँ और सरकारी कागज पत्र हैं। तुम्हें ऐसी चीजो का हमेशा बहुत ध्यान रखना चाहिए। मेरी डायरी और उस ब्रीफकेस मे इतनी महत्वपूर्ण सूचनायें हैं कि उनका दुश्मन के हाथ मे पड जाना देश के लिए बहुत खतरनाक साबित होता।"

"आइन्दा ऐसी भूल कभी नही करूगी।" इतना कहने के बाद मुझे ध्यान आया कि दीदी अभी तक नहीं आई हैं, कही वह भी फौजियो का

"भइया दीदी कहाँ हैं ? वह कल शाम से बाहर गयी हैं लेकिन अभी तक वापिस नही आयी।

"फिक्र न कर। दीदी यूनिवर्सिटी के रॉकिए होस्टल के पास बने नये अस्पताल मे घायल मुक्ति सैनिको की सेवा सुश्रूषा के कार्य मे लगी हैं।"

"मुझे भी उनके पास छोड आओ न।"

"इस तरह तू कर चुकी देश की आजादी के लिए सघर्ष। जब एक बार तेरी ड्यूटी मोहल्ले के मोर्चे पर लग गई फिर बिना अपने कमाण्डर की इजाजत के तू दूसरी जगह कैसे जा सकती है ? इस तरह हरेक अपनी ड्यूटी बदलता रहेगा तो सगठन और अनुशासन क्या रह जाएगा ?"

नफर भइया के उत्साह और धैर्य की मन ही मन प्रशसा करती हुयी मैं रसोई मे जाकर खाना बनाने लगी। भइया भी मेरे पास आकर बैठ गये।

"सुना है रात तूने सिर्फ सोडावाटर की बोतलो से चार पाँच फौजियो को मार डाला। कुछ मुझे भी सुना अपनी वीरता के

कारनामे ।"

भइया को रात की घटनायें विस्तार से सुनाने के बाद मैंने उनसे अपनी आपबीती बताने का आग्रह किया । उमने जो कुछ सुनाया पाकिस्तानी फौज के जिस लोमहर्षक अत्याचार की कथा बताई वह सक्षेप मे इस प्रकार थी —

आधी रात के वक्त नापाक फौज मशीनगनो, स्टेनगनो, मोर्टारो और हल्की तोपो से सुसज्जित होकर सडको पर निकल पडी । उन्होने अवामी लीग के प्रमुख नेताओ, पूर्वी बगाल रेजीमेट और बगाल राइफल्स के अफसरो के घरो पर धावे बोलने शुरू कर दिये । मुक्ति सैनिकों को जैसे ही इसकी सूचना मिली उन्होने पाकिस्तानी फौजो पर हमला बोल दिया । हर चौराहे और मोड पर घमासान युद्ध हुआ । पाक फौजो ने सडक पर बनी रुकावटो को मोर्टारो और तोप के गोलो से उडा दिया ।

हमने उन पर राइफलो और हथगोलो से हमला किया । लेकिन पाकिस्तानी फौजियो के पास हमसे कही बेहतर और आधुनिक किस्म के हथियार थे । इसलिए वे धीमे धीमे आगे बढने मे सफल होते गये । उनके पास दो टैंक भी थे । टैंक के आगे हम असहाय थे । फिर भी मुक्ति सैनिक उनके दांत खट्टे करते रहे ।

अवामी लीग के अधिकाश सदस्यो को फौजी पकड नही पाये थे। वे पहले से ही घरो से बाहर निकल कर सघर्ष चला रहे थे । पूर्वी पाक राइफल्स और रेजीमेट के जिन अफसरो को पकडने मे [illegible] गये, उन्हे उनके परिवार सहित उसी वक्त गोली से उडा [illegible] । इन बेचारो का बस इतना सा दोष था कि उन्होने [illegible] का हुक्म नही माना था ।

अवामी लीग के एक नेता जिन्हे मुक्ति सेना [illegible] छुडाने मे कामयाब हो गयी थी, उन्होने बाद मे [illegible] उनको रस्सियो से बांधने के पश्चात फौजियो ने [illegible] बेइज्जती की और नन्हे-नन्हे चार बच्चो के पेटो मे [illegible] दी ।

"नादान बच्चो की जान क्यो लेते हो ? इन बेचारो ने तुम्हारा क्या बिगाडा है ?" बच्चो की मां फौजियो के पैरो पर लोटती हुई प्रार्थना करने लगी ।

इसपर उनका अफसर हसते हुए बोला "हम नही चाहते कि ये बच्चे बडे होकर पाकिस्तान के दुश्मन बने ।" इतना कहकर उसने औरत की छाती पर जोर की लात मारी । औरत फुटबॉल की तरह दूर गिरी । अपने अफसर की नकल करते हुए दूसरे सिपाहियो ने भी औरत को ठोकरे लगानी शुरू कर दी ।

"दी पिपुल" और "इत्तफाक" अखबारो के दफ्तरो पर हल्की तोपो से गोले बरसाये गए । उनमे काम करने वाले सम्पादक मडल के सदस्य तथा सभी प्रेस कर्मचारियो को बेरहमी से भून दिया गया ।

मुक्ति-सैनिको ने पाकिस्तानी फौजियो की बढती हुयी क्रूरता को रोकने के लिए उनके दोनो टैको को नष्ट करने का निश्चय किया । चार युवा विद्यार्थी अपने सीने पर बारूदी सुरगें लपेटे रात के अधेरे मे धीमे-धीमे आगे बढे और टैको के सामने लेट गए । जैसे ही चालक ने टैक को चालू किया, वीर युवको के सीनो पर लिपटी सुरगें फट पडी । युवको के शरीर चिथडें-चिथडे हो हवा मे उड गए पर उनके साथ ही दोनो टैक भी ध्वस्त हो गये । टैको को नष्ट करने के बाद मुक्ति सैनिको ने पूरे जोश से फौजियो पर हमला किया । इस भयानक हमले के सामने किराये के टट्टू भागते नजर आने लगे ।

जब हम भागते हुए फौजियो का पीछा कर रहे थे, खबर मिली कि सरवर टोला और लक्ष्मी बाजार के हिन्दू भाइयो पर नापाक सैनिको ने जुल्म ढाने शुरू कर दिए हैं । नरिंदा गली तथा इस्लामपुर बाजार के मुसलमान भाई हिन्दुओ की हिफाजत के लिए जी तोड सघर्ष कर रहे हैं ।

हमने अपने सैनिको का एक दल अखबार 'इत्तफाक' के जलते हुए कार्यालय के पास छोडा और सरवर टोला की तरफ बढे ।

वहाँ का दृश्य बडा ही दर्दनाक था। फौजियो ने कई मकानो मे आग लगा दी थी और आग मे फसे लोग सहायता के लिए चिल्ला रहे थे। अनेको घरो मे घुस कर पाकिस्तानी कायरो ने निहत्थे स्त्री-पुरुषो और बच्चो को गोली का निशाना बना दिया था। वे कुछ जवान लडकियो को घरो से बाहर खीच लाए थे और उन्हे जबर्दस्ती अपने ट्रको मे भर रहे थे। वे खुलेआम उनकी इज्जत लूटने मे बडी मर्दानगी महसूस कर रहे थे।

बगाली हिन्दू और मुसलमान लाठी, चाकू और कुल्हाडी जैसे हथियारो से लडते हुए कीट-पतगो की तरह मशीनगन के शिकार बन रहे थे। लेकिन मरने से पहले वे एकाध फौजी को जरूर घायल कर देते।

हमने पहुँचते ही जोर से नारा लगाया।

"हानादार—होशियार !"

'बागला देश—अमर रहे।"

हमारे नारो की गगनभेदी आवाजे सुन फौजियो की सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी और बगाली भाइयो ने पूरे जोश से नारो को दोहराया। हमने फौजियो को चारो तरफ से घेर कर गोलियाँ बरसानी शुरू कर दी। पांच मिनट बाद ही वे दुम दबा कर भाग निकले।

जफर भइया द्वारा बतायी गयी दिल हिला देने वाली घटनाओ को सुन मेरे क्रोध और प्रतिशोध की भावनाये जोर से भडक उठी। मेरा हृदय पाकिस्तान के प्रति घोर घृणा से भर गया। क्या वे पाकिस्तानी मुसलमान कहे जाने लायक हैं ? इन्हें पाकिस्तानी नहीं नापाकिस्तानी कहना ठीक रहेगा। इस्लाम धर्म मे कहाँ लिखा है कि अपने ही भाइयो पर हैवानियत से भरे अत्याचार करो। ये लोग इस्लाम धर्म के नाम पर कलक हैं। इस्लाम जैसे महान और मानवतावादी धर्म पर इन्होंने कालिख पोतने की कोशिश की है। खुदा इन्हें कभी माफ नहीं करेगा। इतिहास मे उनका नाम काले अक्षरो से लिखा जायगा।

× × ×

खाना बनाने के वाद मैंने भइया की थाली मे दाल भात परोसा।

"आ तू भी आ जा।"

"नही, भइया! मुझे भूख नही लगी है।"

भइया ने चावल का कौर मेरे मुंह मे रखते हुए कहा "खाना नही खाएगी तो फिर दुश्मनो से लड़ेगी कैसे? मां, दादा और वावा का वदला कैसे लेगी? लडने के लिए शरीर मे शक्ति चाहिए।"

वक्त की नजाकत को मैं अच्छी तरह समझ रही थी। आंखो मे आंसुओ की झलक न आ जाये कही, और भइया भी कही अधीर न हो उठें, इसलिए मैंने आवाज को सयमित करते हुए कहा "हाथ मुंह धो आऊं जरा, अभी आती हूं।"

स्नानगृह मे जाकर मैंने अपने चेहरे को अच्छी तरह धोया। आंसू का नन्हा कतरा भी न रहने दिया।

'पूर्वेर आकाशे सूर्य उठेछे
आलोके आलोकमय
जय जय जय जय वागला जय

(पूर्व क्षितिज मे उदित हुआ है सूर्य। आलोकित है जिसके प्रकाश से समस्त धरा, वगला देश। जय जय वागला देश।)

गाती हुई मैं स्नानगृह से वाहर आयी। गीत मे कितनी शक्ति होती है और कितनी प्रेरणा, यह मैंने उसी क्षण भली प्रकार अनुभव किया। गीत के स्वरो मे मेरा सारा दुख-दर्द जैसे वह गया हो।

मुस्कराने का प्रयत्न करते हुए मैं भइया के साथ वैठ कर भोजन करने लगी। भूख फिर भी न थी। खाने मे कोई स्वाद नही आ रहा था फिर भी जितना कुछ पेट मे डाला जा सका डाल लिया।

भोजन करने के वाद जफर भइया वाहर जाने की तैयारी करने लगे मैंने कहा "रात भर के जगे हो, कुछ आराम कर लेते फिर जाते।"

"जब तक पाकिस्तानी फौज का एक भी सिपाही वगला भूमि पर है, आराम कहां वहन? तू जानती नही मैं अपनी टुकडी का नायक

हूँ। मेरे लिए एक-एक सेकण्ड कीमती है। वैसे ही 'लेट' हो गया हूँ।"

"ऐसी बात है तो मैं रोकूँगी नही पर सूने घर मे मेरा मन पल भर के लिए भी नही लगता। मैं दीदी के पास जाना चाहती थी।"

भइया ने आगे बढ कर मेरे सिर पर हाथ फेरा और बडी भावुकता के साथ मेरे कपोलो का चुम्बन लेते हुए बोला "भयानक से भयानक लडाई मे भी मेरा दिल घबडाता नही है पर जब तुझ जैसी बहादुर लडकी कायरता भरी बातें करने लगती हैं, बहुत दुख होता है।"

उसने अपनी जेब से एक छोटा सा रिवाल्वर निकाल कर मेरे हाथ मे रख दिया। कंधे पर से उतार कर गोलियो की पेटी मेरे कंधे मे डाल दी। रिवाल्वर हाथ मे आते ही मुझे अपने मे एक नया साहस और आत्मविश्वास अनुभव होने लगा।

"यह दादा के ब्रीफ केस मे से निकला है। इसे अपने पास सावधानी के साथ रखना, वक्त पर बडा काम आएगा।"

"फिर तुम क्या करोगे ?"

"मेरे पास राइफल है।"

"अच्छा, खुदा हाफिज! जय बांगला!"

"जय बांगला।" और वह चला गया।

घर का सूनापन मुझे फिर खाने को दौडने लगा। बिस्तर पर लेटी पर लगा जैसे मैं कांटो पर लेट गई हूँ। मन [illegible] लगा। मन संतुलित करने के लिए डायरी भरने बैठ गई। सोचा था कि [illegible] एक-एक बात खूब विस्तार से लिखूँगी ताकि खूब [illegible] और फिर नीद मुझे अपने आगोश मे जकड ले। लेकिन [illegible] और भी नीद है कि पास फटकने का साहस भी नहीं कर रही है। [illegible] दरवाजा खटखटा रहा है, देखूँ कौन है ?

× ×

दरवाजा खोलने मे पहले मैंने खिडकी [illegible] बाहर देखना ठीक समझा। पडोस का बालक सुलेमान [illegible]

उसका चेहरा सुर्ख हो रहा था और बाल अस्त व्यस्त।

मैंने दरवाजा खोलते हुए पूछा "क्यो सुलेमान, क्या बात है ?"

"दीदी मेरे बाबा शहीद हो गये। बदमाशो ने उन्हे पुरानी ईदगाह के पास मार डाला। मैं एक एक पाकिस्तानी को बीन-बीन कर मार डालूंगा।"

"तू एक बहादुर बाबा का बहादुर बेटा है। तेरे बाबा का खून बेकार नही जाएगा।'

'बाबा! जिन्दाबाद!'

'खून का बदला खून से लेंगे।'

अचानक उत्तेजना मे भर कर सुलेमान नारे लगाने लगा। उसका साहस बढाने के लिए मैंने भी अपनी आवाज उसकी आवाज के साथ मिला दी।

फिर वह चुपचाप कुर्सी पर बैठने के बजाय फर्श पर बैठ गया। मैंने उसके सिर को सहलाते हुए अपने सीने से लगा लिया। उस बच्चे के मासूम दिल पर अपने बाबा के शहीद हो जाने की, सूचना सुन कर क्या बीत रही होगी, यह मैं भली प्रकार अनुभव कर रही थी। मुझे खुशी थी कि वह अपने नन्हे से दिल को पत्थर बनाए हुए था वरना उसकी भोली भाली आंखो मे तैरते आंसू मैं सहन नही कर पाती।

"भइया तू बहुत बहादुर है। धीरज रख, हिम्मत से काम ले। तूने भगतसिंह की कहानी सुनी है न, वह कितना वीर था और अश्फाक-उल्ला का बलिदान भी तुझे याद होगा। हमे वीरता और साहस से इन नापाक दरिंदो को अपने देश से भगाना है। अगर हमने हिम्मत तोडी तो मेरी बात को बीच मे ही रोकते हुए सुलेमान सिर उठा कर बोला "देखो! दीदी मैं कहीं रो रहा हूँ ?"

हृदय की आन्तरिक वेदना से उसके चेहरे पर खून उतर आया था, होंठ कुछ फैल गए थे और लाल आंखो मे ठहरे हुए आंसू उन्हे शोलो की तरह दहका रहे थे। उसके रुंधे कंठ से एक-एक लफ्ज रुक-रुक कर निकल रहा था।

'तू सचमुच बहुत बहादुर है। तेरे जैसे वीर बच्चे ही बांगला देश से पाकिस्तानियो को भगायेंगे।" मैंने उसके सिर को फिर से अपने सीने से लगा लिया ताकि उसके उमडते हुए आँसू मेरे कुर्ते से पुछ जायें और उस नादान देशभक्त बच्चे को मेरे सामने आँसू बहा कर कमजोर [illegible] न बनना पडे। वह एक बार सिसका फिर न जाने कैसे अपने उमडते हुए दर्द को पी गया।

कुछ क्षणो बाद वह मुझसे अलग होते हुए बोला "काश! मेरे पास एक छोटी सी बन्दूक होती! लेकिन कोई बात नही। मैंने लोहे के फल वाले तीर बनाए हैं। दीदी! मैं उन जालिमो को खोज-खोज कर मारूँगा।' इतना कह कर वह तेजी से बाहर निकल गया।

"अरे सुलेमान कहाँ जा रहे हो! रुक जाओ।"

उसने जैसे मेरी आवाज ही न सुनी हो।

"मैं उन्हे खोज-खोज कर मारूँगा!" बडबडाता हुआ वह सडक पर भागने लगा। मैंने उसे दौड कर पकडने की कोशिश की पर मुझे एक महिला ने बीच मे ही रोक लिया।

"उसे जाने दो मेहरुन्निसा! तुम किस किस को रोकोगी? आज का की सडको पर सैकडो बच्चे अपने माँ-बाप का बदला लेने के लिए निकल पडे हैं। उन्हे दुश्मन से भिडने दो। आज हमारा देश बलिदान माँग रहा है, मातृभूमि प्यासी है, खून की प्यासी।"

"परन्तु वह जरा सा बच्चा क्या करेगा?"

"घर के अन्दर बंद होकर रोने से बेहतर है कि वह बाहर निकल कर अपने देश पर आए संकट को समझे, कुछ करे।"

मैं वापिस लौट आई। पता नही सुलेमान पर क्या बीत रही हो? मेरा और उसका घर एक दूसरे से बिलकुल पास पास लगा हुआ था। [illegible] दुख के इस क्षण मे उसे साहस बंधाना मैंने अपना [illegible] । मैं अपनी छत पर जाकर मुंडेर पार कर उसकी छत पर [illegible]।

वह कमरे मे अपने बाबा की फोटो के सामने [illegible]

क्या बुदबुदा रहा था। उसके चेहरे पर कठोरता चमक रही थी और हाथो की मुट्ठियाँ भिची हुई थी।

'सआदत'! मैंने कमरे मे प्रवेश करते हुए धीमे से पुकारा।

'तुम! उसने मुडते हुए आश्चर्य से कहा। उसकी आंखो मे शोले दहक रहे थे।

"हिम्मत और धैर्य से काम लो सआदत।" मैंने उसके कधे पर हाथ रखते हुए कहा।

वह विस्तर पर बैठ गया। मैं उसके पास बठते हुए बोली "तुम्हारे बावा महान थे। वह देश के लिए लडते हुए वीरता के साथ शहीद हुए।"

"मेहरू! हत्यारो ने उन्हे टैक के नीचे कुचल दिया। मैं ·· · उनकी · अन्तिम कहते कहते उसका गला भर आया।

मैं उसके और समीप खिसक गई। उसके सिर को अपने कधे पर रख सहलाने लगी।

मेरी समझ मे नही आ रहा था कि मैं उसे किस तरह सान्त्वना दूं? मैंने उसे एक नन्हे बच्चे की तरह अपने सीने से लगा लिया। मेरी आंखें भी गीली हो चली और मैं सुबक सुबक कर रोने लगी। उसने मुझे अपने आलिंगन मे बांधते हुए कहा "मेहरू! रो मत! हम उन हत्यारो से एक-एक जुल्म का हिसाव लेंगे।'

पता नही किस क्षण आपसी सहानुभूति के धागो मे बधे हमारे हृदय एकाकार हो गए। दुख के मारे दो तन मन प्यार की गगा मे नहा कर मृत्यु से जूझने जीवन मे आशा के नए अकुर विकसित करने का प्रयत्न करने लगे। आंसुओ से खारे बने दो जोडी अधर परस्पर मिल कर नयी मधुरता की खोज मे खो गए।

जीवन भी कितना विचित्र है? अब लिखने मे हर्ज क्या है? लिखे ही देती हूं मैंने प्यार उमा को किया था। उमा लडकी नही है, वह है उमाशकर घोष, अवामी लीग का एक कर्मठ कार्यकर्ता और आज समर्पण कर बैठी सआदत के सम्मुख। पर इसका मुझे कोई पश्चाताप नही।

सआदत ने मोहल्ला कमाण्डर से कह कर मुझे यूनिवर्सिटी के रोकिए होस्टल मे पहुँचा दिया। यह छात्राओ का होस्टल था। इसे ढाका नगर के अन्य स्थानो की अपेक्षा अधिक सुरक्षित समझा जाता था। इसके समीप ही छात्रो का होस्टल था।

यूनिवर्सिटी क्षेत्र मे चारो तरफ उत्साह और हलचल नजर आ रही थी। सभी छात्र सशस्त्र थे। यह बात दूसरी है कि उनमे से अधिकाश के पास लाठियाँ, भाले, तलवारें और छुरियाँ थी। राइफल या पाइपगन कम ही छात्रो के पास देखने को मिली। यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर भी गम्भीर मुद्रा मे आते जाते दिखायी पडे। ऐसा प्रतीत होता था कि पूरी यूनिवर्सिटी युद्ध का एक विशाल मोर्चा बन गई है। भला इसी जगह आकर पाकिस्तानी सिपाहियो को अपनी कब्रगाह थोडे ही बनानी थी।

दीदी मुक्ति सेना के घायलो की सेवा सुश्रूषा मे जुटी थी। वे मुझसे कुछ मिनटो के लिये बडी मुश्किल से मिल पायी। वे बिल्कुल टूट गयी थी। माँ, बाबा और दादा के शहीद हो जाने की सूचना मैंने पहले ही उन्हें सुना दी थी। उन्होने मुझे साहस बंधाते हुए कहा “आजादी की लडाई मे शहीद होने का सौभाग्य किसी को ही मिलता है। यह हमारे लिये दुख से अधिक गर्व की बात है।”

होस्टल की मेट्रन से इजाजत लेकर मैं छात्राओ की सशस्त्र टोली मे शामिल हो गई। बडी कठिनाई के बाद मुझे एक पुरानी किस्म की दोनाली बन्दूक और बीस कारतूस मिल गये। इसे देखने पर पता चलता था कि बन्दूक देसी थी और साइकिल के पाइप का उसकी नली के रूप मे इस्तेमाल किया गया था।

हमारी टोली मे दस लडकियाँ थीं। हमारा काम होस्टल की रक्षा करना था।

आशा के विपरीत पाकिस्तानी सैनिको ने शाम होते होते पूरे यूनिवर्सिटी क्षेत्र को घेर लिया। उनके पास आर्टिलरी, टैंक [illegible]

-बद गाडियां और मशीनगनें थी। सबसे पहले उन्होंने यूनिवर्सिटी की इमारत और छात्रो के होस्टल पर घुग्रांधार गोलावारी की। छात्रो ने रायफलो, पाइपगनो, पत्थरो और हथगोलो से उनका कडा मुकावला किया। किंतु वे अधिक देर तक आधुनिकतम अमरीकी और चीनी अस्त्र शस्त्रो क सामने नही टिक सके। पाक फौजी मशीनगनो और ब्रेनगनो से गोलियो की वर्षा करते हुये यूनिवर्सिटी तथा होस्टल मे घुस गये। उन्हे जो भी छात्र या प्रोफेसर मिला उसे गोली का निशाना वना दिया। अनुमान है कि इस प्रकार उन्होने करीव तीन सौ छात्रो को मौत के सुपुर्द कर दिया। जिन छात्रो और प्रोफेसरो ने आत्म समर्पण किया, उन्हे एक पंक्ति मे खडा कर गोली से उडा दिया गया।

इसके वाद वे खूनी दरिंदे हमारे होस्टल की तरफ वढने लगे। हमने निश्चय किया कि जब तक वे पास नही आ जाते, गोलियां नही चलायेंगे। मुमकिन है कि वे हमे विना कोई नुकसान पहुंचाये पास से गुजर जायें।

किन्तु नही, उनमे इतनी शराफत कहां वची थी ? जल्दी ही उन्होंने हमारे होस्टल को चारो तरफ से घेर लिया। जैसे ही उनके नापाक कदम होस्टल के अन्दर पडे उन्होने चारो तरफ गोलियो की बौछार करनी शुरू कर दी। अव हमारे पास लडते लडते मर जाने के अलावा और कोई उपाय न था।

हम दस लडकियां अपनी पुराने किस्म की वदूको और राइफलो से उन पांच सौ खूनी भेडियो का मुकावला करने के लिये तैयार हो गयी। हमने निशाने ताक ताक कर गोलियां चलानी शुरू कर दी। उधर होस्टल की छत से लडकियो ने ईंट, पत्थर, वोतलें, आदि फेंकनी शुरू कर दी। दगावाज दुश्मनो ने आड लेकर लडना जारी रखा।

हममे से हरेक के पास सिर्फ वीस-वीस गोलियां थी। उन्हे खत्म होने मे दस मिनट भी न लगे। हम मे से आठ लडकियां पाक फौजियो की गोलियो का शिकार वन शहीद हो गयी। टुकडी की नायक रोशन-

आरा बेगम नाम की एक खूबसूरत और दिलेर युवती थी। उसके पास सिर्फ एक हथगोला और एक बारूदी सुरग शेष थी। वह झाड़ियो की ओट लेती हुई सडक की तरफ बढी जहाँ एक नापाक टैंक हमारे होस्टल की तरफ आ रहा था। रोशनआरा सडक पर पहुँचते ही उस टैंक के आगे लेट गयी। टैंक आगे बढा कि बारूदी सुरग के विस्फोट के साथ वह बेकार हो गया। वीराङ्गना रोशनआरा मरते-मरते दुश्मन के एक टैंक को तोड कर शहीद हो गई। उसका नाम विश्व की महान नारियो मे सदैव श्रद्धा के साथ लिया जायेगा।

मेरी स्थिति बहुत दयनीय थी। सब गोलियाँ खत्म हो चुकी थीं। केवल दादा का रिवाल्वर शेष था। लेकिन जिस झाडी के पीछे मैं छिपी हुई थी उससे नापाक फौजी इतनी दूर थे कि निशाना लगाना बेकार था।

मैंने बन्दूक को बगल मे रख दिया और रिवाल्वर निकाल कर लडने के लिये तैयार हो गई। निश्चय किया कि जैसे ही वे मेरे रिवाल्वर की रेंज मे आयेंगे, मैं गोली चला दूंगी और अगर कुछ भी न बन पडा तो कम से कम अपने-आपको ही गोली मार कर एक सम्मानित मृत्यु को वरण करूंगी।

होस्टल की छात्रायें पन्द्रह मिनट तक पूरी शक्ति तथा [illegible] पत्थरो की बौछार करती रही। इससे चार पाँच फौजी घायल भी हुए। इस बीच कम से कम दस लडकियाँ फौजियो की गोली का निशाना बन चुकी थी।

पत्थरो की बौछार हल्की पडते ही लगभग दो सौ फौजी होस्टल मे घुस पडे। उन्होने कमरो के दरवाजो और खिडकियो को तोड डाला। इसके बाद जो बर्बर, पाशविक तथा शर्मनाक अत्याचार उन नापाक फौजियो ने किये, उन्हें लिखते हुए मेरी कलम कांप रही है और [illegible] है। उस घृणित दृश्य के चित्रण का विचार करते हुए भी मेरा रोम रोम कांपने लगता है। मैंने उसमे पहले कभी यह [illegible]

इन्सान इतना नीच बन सकता है कि जानवर भी लजा जायें ? मेरा मन होता है कि उन बातो का इस डायरी मे जिक्र भी न करूँ।

लेकिन यह डायरी, जिसे मैंने केवल अपने मन के दबे हुए भावो को लिखने व समय काटने के लिये शुरू किया था, धीमे धीमे एक सच्चे ऐतिहासिक दस्तावेज का रूप धारण करती जा रही है और इसलिये उन बातो का जिक्र करना भी जरूरी हो गया है जिनको मुंह पर लाते हुए हर शरीफ लडकी की गर्दन शर्म से नीचे झुक जाती है।

मेरी दिली ख्वाहिश है कि एक दिन यह डायरी पुस्तक के रूप मे दुनियां के सामने आये और पाकिस्तान के नापाक शासको का असली घृणित चेहरा लोग साफ साफ देख सकें।

मेरी दिली ख्वाहिश है कि एक दिन पाकिस्तान की पजाबिन, बिल्लोची और पठान युवतियां इस डायरी को पढें और अपने भाइयो, बाप-दादाओ की वहिशयाना हरकतो से परिचित होकर उनसे पूछें कि क्या उन्होने कभी शैतान को भी शर्मा देने वाली ये हरकतें की थी ? और अगर की थी तो क्या वे भूल गये थे कि उन्हें जन्म देने वाली भी कोई स्त्री थी ? क्या वे भूल गये थे कि उनके घरो पर भी जवान बहने, बेटियां और बहुये हैं। अगर कोई खुले आम उनकी लाज लूटने लगे तो उनके दिल पर क्या बीतेगी ?

इन सब कारणो से यह जरूरी हो जाता है कि मैं उन शर्मनाक घटनाओ का भी जिक्र करू जो उन हैवान फौजियो ने कमरो के दरवाजे तोडने के बाद की।

वे जवान लडकियो के बालो को खीचते हुए उन्हें बाहर लाये। उन्होने लडकियो की साडियां, ब्लाउज और पेटीकोट फाड कर अलग फेंक दिये। बुर्के और सलवार पहनने वाली लडकियो को भी नगा कर दिया। इसके बाद वे उनके स्तनो और नितम्बो पर बेरहमी से लाते तथा घूसे मारने लगे। कुछ लडकियो ने उन भेडियो के हाथो मे काट खाया और चेहरे को नाखूनो से नोच दिया। बस, फिर क्या था ?

छोड़ दो। तुम लोगो ने बहुत ज्यादतियाँ कर ली हैं। अब मेरे बर्दाश्त के बाहर हो रहा है।" एक जूनियर अफसर सा दिखायी देने वाला नौजवान बोला।

'अल्ला बख्श! वे जो कुछ कर रहे हैं, मेरे हुक्म से कर रहे हैं, तुम्हे बीच मे टाग अडाने के लिये किसने कहा?' जीप मे बैठा फौजी अफसर गरज पडा।

"सर! यह सरासर ज्यादती और हैवानियत है।"

'हैवानियत के बच्चे" और अफसर ने रिवाल्वर निकाल लिया। लेकिन अल्लाबख्श उनसे ज्यादा तेज निकला। उसने बडी फुर्ती से अपनी मशीनगन से अफसर पर गोलियो की बौछार कर दी।

मेरी हिम्मत बढ गई। कोहनियो के बल घिसटते हुए मैं आगे बढी और पेड की आड लेकर सिपाहियो पर रिवाल्वर से गोलियाँ दागने लगी।

वे आपसी लडाई और मेरी गोलियों से इतना घबरा गये कि भागते हुए अपने ट्रको पर चढ गये। इसी बीच उनमे से किसी ने अल्लाबख्श को गोली मार दी। मुक्ति सेना का जयघोष बहुत समीप आ चुका था। कायर फौजियो ने भागने मे ही खैरियत समझी।

मैं अल्लाबख्श के पास पहुँची। गोली ठीक उसके दिल पर लगी थी। और वह मर चुका था। मैंने उसकी मशीनगन उठा ली। अल्ला-बख्श की वीरता और इन्सानियत से भरे विद्रोह के प्रति मेरा सिर अपने आप श्रद्धा से झुक गया। काश! उस जैसी इन्सानियत हर पाक सैनिक मे आ सकती।

मुक्ति सेना ने घायल व मूर्छित छात्राओ को कपडो मे लपेट कर ट्रक मे लिटाया और उन्हे अस्पताल मे भर्ती करा दिया। उन लोगो की दुर्दशा देख कर हरेक मुक्ति सैनिक क्रोध से अपने दांत किटकिटा रहा था। याह्या खां के अत्याचारो के सामने नादिरशाह और हिटलर के कारनामे भी साधारण मालूम पड रहे थे।

उनके गुस्से का पारा एकदम चढ़ गया। उन्होंने ऐसी लड़कियों के स्तनों और नितम्बों को मशीनों से काट दिया। और फिर से एक-एक की बोटी बोटी काट कर फेंक दी, प्रत्येक छात्राओं के साथ साथ कई कई फौजियों ने जबरदस्ती बलात्कार कर दिया और फिर उन्हे गोली से उड़ा दिया।

उनका अफसर मजा ले लेकर अपने सिपाहियों को इस नीच काम के लिए प्रोत्साहित कर रहा था। उसने दस बारह सुंदर छात्राओं के हाथ पैर बंधवा कर उन्हें एक ट्रक मे डलवा दिया।

लगभग चालीस छात्रायें अपने को बचाने के लिये होस्टल की छत पर चढ गयी थी। फौजियों ने जीने से चढ कर उनको पकड़ना चाहा। छात्राओं ने अपनी लाज बचाने के लिये छत से नीचे कूद कर जान दे दी। उनकी हृदयविदारक चीखें इस वक्त भी मेरे कानों मे गूंज रही हैं। दूर पर गोलियों के चलने की आवाजे सुनाई देने लगी।

"जय बांगला" का उत्साहपूर्ण नारा आकाश में गूंज उठा। फौजियों के अफसर ने हुक्म दिया 'वापिस चलो।" वे मशीनों को तान कर खडे हो गये और नग्न युवतियों को आगे बढ कर ट्रक में बैठने का आदेश दिया। उनके मुंह से धाराप्रवाह रूप मे गालियां और अश्लील बातें निकल रही थीं।

एक युवती ने हाथ जोड कर विनती करते हुए कहा "हम भी मुसलमान हैं। हमारे ऊपर रहम करो भाई, खुदा तुम्हें [illegible] बख्शेगा।"

'चुप रह हरामी की बच्ची! मुसलमान है तो क्या, बंगाली है। आज हमे अपनी जवानी का मजा चखा दे, कल छोड़ देंगे।"

"खुदा से डरो भाई! इस्लाम पर कालिख न पोतो। हम [illegible] खुदा तुम्हे तरक्की और खुशहाली देगा।"

फौजी ने आगे बढ कर एक जोर की लात [illegible] जमाई। जोर से बोला "बड़ी आई खुदा वाली, चलती है [illegible]"

"आगा खां! जवान सम्मान पर दान करो और [illegible]

छोड दो। तुम लोगो ने बहुत ज्यादतियां कर ली हैं। अब मेरे बर्दाश्त के बाहर हो रहा है।" एक जूनियर अफसर सा दिखायी देने वाला नौजवान बोला।

"अल्ला वख्श! वे जो कुछ कर रहे हैं, मेरे हुक्म से कर रहे हैं, तुम्हे बीच मे टाग अडाने के लिये किसने कहा ?' जीप मे बैठा फौजी अफसर गरज पडा।

"सर! यह सरासर ज्यादती और हैवानियत है।"

'हैवानियत के बच्चे" और अफसर ने रिवाल्वर निकाल लिया। लेकिन अल्लावख्श उससे ज्यादा तेज निकला। उसने बडी फुर्ती से अपनी मशीनगन से अफसर पर गोलियो की बौछार कर दी।

मेरी हिम्मत बढ गई। कोहनियो के बल घिसटते हुए मैं आगे बढी और पेड की आड लेकर सिपाहियो पर रिवाल्वर से गोलियां दागने लगी।

वे आपसी लडाई और मेरी गोलियो से इतना घबरा गये कि भागते हुए अपने ट्रको पर चढ गये। इसी बीच उनमे से किसी ने अल्लावख्श को गोली मार दी। मुक्ति सेना का जयघोष बहुत समीप आ चुका था। कायर फौजियो ने भागने मे ही खैरियत समझी।

मैं अल्लावख्श के पास पहुंची। गोली ठीक उसके दिल पर लगी थी। और वह मर चुका था। मैंने उसकी मशीनगन उठा ली। अल्ला-बख्श की वीरता और इन्सानियत से भरे विद्रोह के प्रति मेरा सिर अपने आप श्रद्धा से झुक गया। काश! उस जैसी इन्सानियत हर पाक सैनिक मे आ सकती।

मुक्ति सेना ने घायल व मूर्छित छात्राओ को कपडो मे लपेट कर ट्रक मे लिटाया और उन्हे अस्पताल मे भर्ती करा दिया। उन लोगो की दुर्दशा देख कर हरेक मुक्ति सैनिक क्रोध से अपने दांत किटकिटा रहा था। याहया खां के अत्याचारो के सामने नादिरशाह और हिटलर के कारनामे भी साधारण मालूम पड रहे थे।

मैंने दीदी की खोज मे होस्टल के समीप स्थित अस्पताल का चप्पा चप्पा छान मारा पर वे कही नही मिली। निराश होकर मैं मुक्ति सेना की जीप मे बैठ घर वापिस आ गई। आते ही डायरी लिखने लगी हूँ।

अब रात का अंधेरा छटने लगा है और पूरब मे नया सूर्य उदय हो रहा है। पता नही हम अभागे बंगालियो के भाग्याकाश मे कब खुशहाली का सूर्य उदय होगा ? शायद जल्दी ही। उसी के लिये हम इतना बलि-दान और त्याग कर रहे हैं।

× × ×

"जदि तोर डाक सुने केउ ना आसे, एकला चलो रे।" (अगर तुम्हारी पुकार सुन कर कोई न आये, अकेले ही चलो) गुरुदेव रवीन्द्र की यह कविता आज मुझे बहुत याद आ रही है। माँ, दादा, बाबा सब कैसे एक साथ चल दिए मुझे छोड कर। भइया और दीदी को बहुत खोजा और अनेको लोगो को पूछ-ताछ के लिए भेजा किन्तु उन दोनो का कही पता न चला। अब मैं निपट एकाकी रह गई हूँ और शायद एकाकी ही मर जाऊँ।

सआदत और सुलेमान घर पर बहुत कम आते हैं। मैंने आज एक ऐसे खतरनाक काम के लिए अपनी स्वीकृति सहर्ष दे दी है जिसको पूरा करके जीवित वापिस लौटना असम्भव नही तो अत्यन्त कठिन अवश्य है। मुझे अपने जीवन से जरा भी मोह नही रह गया है। इसलिए मैं चाहती हूँ कि आज मन मे एकत्रित समस्त सूचनाओं और [illegible] डायरी मे उतार दूँ ताकि मरते वक्त अपना एक स्मृतिचिह्न [illegible] सुख अनुभव कर सकूँ।

आज पूर्वी बंगाल मे चटगांव से लेकर सिलहट तक और [illegible] दिनाजपुर तक, हर शहर, गाँव, और कस्बे मे रक्तपात [illegible] होता जा रहा है। प्रतीत होता है कि जैसे गंगा ब्रह्मपुत्र [illegible] नदियो का जल रक्ताभ हो उठा है। सब स्थानों से [illegible] की खबरें आ रही हैं। केवल लाठियो और [illegible]

स्तानी सेना के भयानक अस्त्र-शस्त्रो का सामना कर रही है। शहीदो के रक्त से बागला के सभी करुण-सवुज, ताल-तलैये और पुष्करणी मे नित्य रक्त कमलो के दल के दल खिल रहे हैं। नारिकेल, सुपारी, खजूर, आम, जाम, कटहल और अशोक के वृक्षो तथा वनो मे आग लग गयी है।

पाकिस्तानी फौज हवाईजहाजो, बमो और तोपो से बागला देश पर अग्नि वर्षा कर रही है। केवल ढाका नगर मे ही दो तीन दिन के अन्दर दस हजार से अधिक नर-नारी पाकिस्तानी रक्त पिपासुओ का शिकार बन चुके हैं। ढाका की सडकें लाशो से पटती जा रही हैं। गिद्धो और कुत्तो के सिवाय उनकी तरफ ध्यान देने की फुर्सत किसी को नही।

तेजी से बदलती हुई परिस्थितियो के अनुसार मुक्ति सेना ने अपने को एक शक्तिशाली तथा चपल सगठन के रूप मे गठित कर लिया है। रोज सैकडो जवान लडके-लडकियां और बगाल के सभी मुजाहिद (होम गार्ड) मुक्ति सेना मे भर्ती हो रहे हैं। मौलाना भसानी की पार्टी के सदस्य भी इस स्वतन्त्रता सघर्ष मे हमारे साथ हैं।

हमने पाकिस्तानी फौजो के प्रथम आक्रमण को बेकार कर दिया है। ढाका मे फौजियो की हुकूमत हवाई अड्डो, कैन्टोनमेण्ट क्षेत्रों और दो चार खास जगहो को छोड कर कही नही चलती। वे जैसे ही शहर पर हमला करने के लिए निकलते हैं मुक्ति सेना उन्हें घेर लेती है।

शेख मुजीब ने ससार के अन्य राष्ट्रो से बागला देश की सरकार को मान्यता देने, अस्त्र-शस्त्र देने और सहायता देने के लिए अपील की है। लेकिन आश्चर्य है कि भारत के निवासियो और सरकार को छोड कर ससार के बडे बडे देश तथा सयुक्त राष्ट्र सघ आंखो व कानो पर पट्टी बाधे हुए बैठे हैं।

प्रजातन्त्र का जन्मदाता फ्रान्स, जनतन्त्र के हामी इग्लैंड और अमरीका ऐसे चुप हैं मानो कुछ हुआ ही न हो। मुझे विश्वास नही आता कि अब्राहम लिकन, वाशिंगटन और थोरो तथा इमर्सन जैसे महानपुरुषो को जन्म

देने वाले अमरीका को क्या हो गया है ? हमें उसके द्वारा दिए गए अस्त्र-शस्त्रो से निर्ममता के साथ रौंदा जा रहा है और अमरीका खामोशी से कह रहा है कि यह पाकिस्तान का अन्दरूनी मामला है। लगता है अमरीका, फ्रास और इग्लैंड की आत्मा मर चुकी है। वे महज व्यापारियों और पूजीपतियो के देश बन कर रह गए हैं।

मेरी अक्ल हैरान है कि विश्व के महान साहित्यकार ज्यांपाल सात्र खामोश क्यो हैं ? कम्युनिस्ट चीन जिसके नेता माओत्सेतुग अपने को ससार के समस्त शोषितो का पक्षधर कहते है, आज क्यो चुप हैं ? महान लेनिन का देश सोवियत रूस भी मौन है। ससार के अन्दर सत्य और न्याय के लिए सघर्ष करने की चेतना मर चुकी है। निश्चय ही यह मनुष्य जाति के सर्वनाश की पूर्व-सूचना है।

ठीक है, ससार हमारा साथ न दे फिर भी हम लडेंगे, आखरी दम तक लडेंगे। आज बागला देश के तीन चौथाई भाग पर स्वतन्त्रता सेनानियो का अधिकार है। यदि इस वक्त कोई शक्तिशाली देश हमें मान्यता अथवा सशस्त्र सहायता दे दे तो पाकिस्तान की पूरी सेना भी बागला देश की स्वतन्त्रता का अपहरण नही कर सकती।

भारत से हमे हर प्रकार की नैतिक और वैचारिक प्रेरणा मिल रही है। इसके लिए बागला देश हमेशा उनका आभारी रहेगा। उनके रेडियो स्टेशनो तथा समाचार-पत्रो द्वारा सम्पूर्ण ससार का ध्यान बागला देश के नरसहार की ओर आकर्षित किया जा रहा है। काश! वह इस मौके पर वह हमे आधुनिक अस्त्र-शस्त्रो की मदद भी दे। यदि यह मौका हाथ से निकल गया और पाकिस्तानी सेना को नयी कुमक मिल गयी, हमारा सघर्ष बहुत लम्बा खिच जाएगा।

कुछ भी हो, अब बागला देश की स्वतन्त्रता को ससार की कोई भी शक्ति नही रोक सकती। जिस देश मे [illegible] से छोटे लडके [illegible] आजादी के लिए सिर कटाने को तैयार हो, वह देश अधिक दिनो तक गुलामी की जजीरो में जकडा नही रह सकता।

× × ×

सुलेमान को देखकर मुझे हमेशा नया उत्साह मिलता है। वह छोटा सा बच्चा जिद्द करके हथगोले चलाना सीख रहा है। वह नन्हा सिपाही दिन भर साइकिल से इधर उधर दौड-दौड कर मुक्ति सेना के सदेशो और समाचारो का आदान प्रदान जारी रखता है। उसने अपनी छोटी सी साइकिल को लाल रग मे पेण्ट करवा लिया है "जय बागला देश"। उसने अपनी टोपी पर भी यही शब्द लाल डोरे से कढ़वा लिए हैं।

सुलेमान अकेला नही है। ढाका मे उस जैसे कम से कम दो दर्जन बच्चे है जो स्वतन्त्रता सघर्ष मे महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

स्वतन्त्रता की प्रचण्ड भाव-लहरो मे गरीब अमीर और ऊँच नीच का भेद भाव जैसे सदैव के लिए समाप्त हो गया है। हिन्दू और मुसलमान कधे से कधा मिला कर पाकिस्तानी साम्राज्यवाद के विरुद्ध उठ खडे हुए हैं। कौन कह सकता है कि भारत विभाजन के समय इन्ही जातियो के कुछ लोगो ने धर्म के नाम पर एक दूसरे का खून बहाया था ?

हमे शिकायत है तो सिर्फ बिहारी मुसलमानो से, उसमे से अधिकाश पाकिस्तान के शासको को हमेशा से हमारे खिलाफ मदद देते रहे हैं। परन्तु उनमे जो गरीब हैं, वे बागला देश के साथ हैं।

जनता मे कितना उत्साह है, आज मैं देख कर दग रह गई। घर मे आटा, चावल, दाल आदि जरूरी चीजें बहुत कम मात्रा मे बची थी। मैंने सोचा कि अगर भइया या दीदी आ गए, तब कैसे काम चलेगा ? सन्दूक मे टटोलने पर दस रुपए निकल आए। मैं मोहल्ले के दुकानदार के घर गयी।

मैंने देखा कि उसने पाकिस्तानी दियासलाई की डिब्बियो, सिगरेटो, नोट के पैकटो आदि पर "आमार सोनार बागला" के लेबिल चिपका दिए हैं। उसने मुझे बताया कि जनता ऐसी कोई भी चीज नही खरीदती जो पाकिस्तान की बनी हो।

चावल, दाल, आटे, नमक आदि के रेटस भी तीन चार दिन पहले वाले ही थे। मैंने अपना दस रुपये का नोट देकर सामान खरीदा।

उसने मेरा नोट वापिस करते हुए कहा "इस पर अवामी पार्टी की मोहर नहीं है। यह नोट नही चलेगा। तुम सामान ले जाओ, बाद म नोट पर मोहर लगवा कर मुझे दे जाना।'

मुझे उसकी बात सुन कर बडी खुशी हुई। दोपहर ढल गई पर भइया या दीदी कोई वापिस नही लौटा।

खाना खाकर मैं लेटने जा रही थी कि दरवाजे पर किसी की दस्तक सुन बैठक मे दौड गई। सआदत को देख कर खुशी हुई। दरवाजा बन्द कर उसने मुझे भुजाओ मे भर लिया।

"दीदी या भइया का कुछ पता चला ?" मैंने पूछा।

"मैंने हर जगह सूचना भिजवा दी है, कल तक सही बात का पता चल जाएगा।"

तुम्हारी शक्ल तो अब देखने को नही मिलती ?"

"क्यो कल शाम को मिला नही था ? तुम जानती हो कि इस वक्त पूरा देश कितने नाजुक दौर से गुजर रहा है। पता चला है कि कराची से लका होते हुए आज शस्त्रो से लैस पाकिस्तानी जहाज तीन चार रोज के अन्दर आने वाले हैं। हमें अभी अनेको अग्नि परीक्षाओं से होकर गुजरना है।"

"काश ! भारत की तरह लका भी पाकिस्तानी जहाजों को अपनी सीमा से गुजरने नही देता या उन्हे पेट्रोल भरने की सुविधा न देता' मैंने निश्वास छोडते हुए कहा।

"तुम्हें यह जान कर खुशी होगी कि बर्मा ने हमारे आग्रह पर पाक जहाजों को पेट्रोल की सप्लाई बन्द कर दी है।"

"आओ ! खाना खा लो।" मैंने सआदत का हाथ पकड़ कर कुर्सी पर बैठाते हुए कहा।

मैं उसे अपने हाथो से खाना खिलाने लगी। वह हंस कर बोला

"मेहरु ! मैं जीवन भर स्वतन्त्रता सग्राम का कृतज्ञ रहूँगा। यदि हम पाकिस्तानियो के खिलाफ हथियार नही उठाते, मैं शायद तुम्हारा प्यार पाने के लिए जीवन भर तरसता रहता।"

"हां, वाहरी सकट और दुख हमे एक दूसरे के अधिक नजदीक ले आता है।"

खाने के बाद, सआदत की मुख मुद्रा गम्भीर हो गई।

"अचानक सुस्त कैसे हो गए ?"

"मैं सोच रहा था कि अगर हमारे व्यक्तिगत प्यार और देश प्रेम के मध्य सघर्ष हो जाय, पता नही तुम उन दोनो मे से किसको चुनो।"

"निश्चय ही मैं देश प्रेम को चुनूगी क्योकि हमारे प्यार का गौरव देश की आजादी पर निभर करता है।" मैंने तत्काल उत्तर दिया।

"शाबाश ! मेहरुन्निसा ! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।" उसने मेरी पीठ थपथपायी फिर बहुत धीमी आवाज मे बोला "हमे यानी मुक्ति सेना को पाकिस्तानी फौजो की गुप्त सूचनायें ठीक से नही मिल पा रही हैं, इसके विपरीत वे हमारी अधिकाश गतिविधियो की जानकारी पा लेते हैं। हमने उनके बीच जासूस भेजने की योजना बनाई है। क्या तुममे यह काम करने का साहस है ?"

एक मिनट तक मैं सआदत की बात का मन ही मन जायजा लेने के बाद बोली "जो लडकी मौत से नही डरती हो उसकी हिम्मत को और किस चीज से तौला जा सकता है ?"

"इस काम मे केवल हिम्मत नही, बुद्धि, चतुरता और सावधानी भी चाहिए।"

'मैं तैयार हूं। अब यह तय करना कि मुझमे जासूस बनने के गुण हैं या नही तुम्हारा अथवा मुक्ति सेना के अफसरो का काम है।"

"हम सबकी राय मे इस समय तुम से बेहतर महिला गुप्तचर शायद ही और कोई लडकी नही बन सकती।"

"ऐसा क्यो ?"

चावल, दाल, आटे, नमक आदि के रेटस भी तीन चार दिन पहले वाले ही थे। मैंने अपना दस रुपये का नोट देकर सामान खरीदा।

उसने मेरा नोट वापिस करते हुए कहा "इस पर अवामी पार्टी की मोहर नहीं है। यह नोट नही चलेगा। तुम सामान ले जाओ, बाद मे नोट पर मोहर लगवा कर मुझे दे जाना।'

मुझे उसकी बात सुन कर बडी खुशी हुई। दोपहर टल गई पर भइया या दीदी कोई वापिस नही लौटा।

खाना खाकर मैं लेटने जा रही थी कि दरवाजे पर किसी की दस्तक सुन बैठक मे दौड़ गई। सआदत को देख कर खुशी हुई। दरवाजा बन्द कर उसने मुझे भुजाओ मे भर लिया।

"दीदी या भइया का कुछ पता चला ?" मैंने पूछा।

"मैंने हर जगह सूचना भिजवा दी है, कल तक सही बात का पता चल जाएगा।"

तुम्हारी शक्ल तो अब देखने को नही मिलती ?"

"क्यो कल शाम को मिला नही था ? तुम जानती हो कि इस वक्त पूरा देश कितने नाजुक दौर से गुजर रहा है। पता चला है कि कराची से लका होते हुए आज शस्त्रो से लैस पाकिस्तानी जहाज तीन चार रोज के अन्दर आने वाले हैं। हमे अभी अनेकों अग्नि परीक्षाओं से होकर गुजरना है।"

"काश ! भारत की तरह लका भी पाकिस्तानी जहाजो को अपनी सीमा से गुजरने नही देता या उन्हे पेट्रोल भरने की सुविधा न देता' मैंने निश्वास छोडते हुए कहा।

"तुम्हें यह जान कर खुशी होगी कि बर्मा ने हमारे अनुरोध पर पाक जहाजो को पेट्रोल की सप्लाई बन्द कर दी है।"

"आओ ! खाना खा लो।" मैंने सआदत का हाथ पकड़ कर कुर्सी पर बैठाते हुए कहा।

मैं उसे अपने हाथो से खाना खिलाने लगी। वह हम [illegible]

"मेहरु ! मैं जीवन भर स्वतन्त्रता संग्राम का कृतज्ञ रहूँगा। यदि हम पाकिस्तानियो के खिलाफ हथियार नही उठाते, मैं शायद तुम्हारा प्यार पाने के लिए जीवन भर तरसता रहता।"

"हाँ, बाहरी सकट और दुख हमे एक दूसरे के अधिक नजदीक ले आता है।"

खाने के बाद, सआदत की मुख मुद्रा गम्भीर हो गई।

"अचानक सुस्त कैसे हो गए ?"

"मैं सोच रहा था कि अगर हमारे व्यक्तिगत प्यार और देश प्रेम के मध्य सघर्ष हो जाय, पता नही तुम उन दोनो मे से किसको चुनो।"

"निश्चय ही मैं देश प्रेम को चुनूगी क्योकि हमारे प्यार का गौरव देश की आजादी पर निर्भर करता है।" मैंने तत्काल उत्तर दिया।

"शाबाश ! मेहरुन्निसा ! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।" उसने मेरी पीठ थपथपायी फिर बहुत धीमी आवाज मे बोला "हमे यानी मुक्ति सेना को पाकिस्तानी फौजो की गुप्त सूचनायें ठीक से नही मिल पा रही हैं, इसके विपरीत वे हमारी अधिकाश गतिविधियो की जानकारी पा लेते हैं। हमने उनके बीच जासूस भेजने की योजना बनाई है। क्या तुममे यह काम करने का साहस है ?"

एक मिनट तक मैं सआदत की बात का मन ही मन जायजा लेने के बाद बोली "जो लडकी मौत से नही डरती हो उसकी हिम्मत को और किस चीज से तौला जा सकता है ?"

"इस काम मे केवल हिम्मत नही, बुद्धि, चतुरता और सावधानी भी चाहिए।"

'मैं तैयार हूँ। अब यह तय करना कि मुझमे जासूस बनने के गुण हैं या नहीं तुम्हारा अथवा मुक्ति सेना के अफसरो का काम है।"

"हम सबकी राय मे इस समय तुम से बेहतर महिला गुप्तचर ढाका की और कोई लडकी नही बन सकती।"

"ऐसा क्यो ?"

"इस क्यो के उत्तर को छोड मेरी योजना ध्यान से सुनो। आज पाकिस्तान के फौजी जनरल ढाका मे स्थित विदेशी हाई कमिश्नरो, विदेशी सूचना कार्यालयो आदि के लोगो को रात्रि भोज पर आमंत्रित कर रहे हैं। तुम्हे हम अपने एक विश्वस्त मित्र के साथ उस भोज मे भेज देंगे। वहाँ नाचने-गाने और पीने पिलाने का भी प्रोग्राम होगा। तुम कानवेन्ट स्कूलो की पढी हो। अंग्रेजी और उर्दू फर्राटे के साथ बोल सकती हो। रग भी तुम्हारा पश्चिमी देशो की नारियो जैसा गोरा है। तुम एक टूरिस्ट विदेशी नवयुवती के रूप मे उस पार्टी मे शामिल होकर·· ·· · कहते कहते रुक गया वह।

"उसके बाद क्या करना होगा मुझे ? रुक क्यो गये ?"

"क्या बताऊँ मेहरुन्निसा ! मैं भी आखिर इन्सान हूँ। अपनी प्रेमिका को अपने ही हाथो उन खूनी दरिन्दो के बीच भेजते हुए दिल काप रहा है। तुम चाहो तो जाने से मना कर सकती हो। इस काम मे, तुम्हें अपने शरीर का व्यापार भी करना पड सकता है। मैं नही चाहता पर देश की खातिर" बोलते बोलते उसका स्वर करुणा से आर्द्र हो चला।

"मैं अपने कर्त्तव्य को भली प्रकार समझ चुकी हूँ। मुझे वहाँ पहुँच कर किसी पाकिस्तानी फौजी अफसर पर प्रेम के डोरे डालने होगे। उसके पेट से गुप्त सूचनायें निकालनी होगी और सम्भव हुआ तो कैन्टून-मैन्ट एरिया मे रहना भी पडेगा। तुम भावुक न बनो सआदत। जब से मैंने पाकिस्तानी फौजियो को भोली-भाली लडकियो पर बलात्कार करते हुए देखा है, मैं उनको बरबाद करने के लिये घृणित से घृणित काम कर सकती हूँ।"

भावावेश मे सआदत ने मुझे अपने आलिंगन मे बाँध कर माथे पर चुम्बन अंकित कर दिया।

"आधे घण्टे के बाद मैं एक महिला के साथ आऊँगा। वह तुम्हारे बाल, तुम्हारा मेकअप वगैरह ठीक कर देगी। वही तुम्हें कपडे [illegible]

भी देगी।"

इतना कह कर सम्रादत चला गया।

मैंने अपने तन-मन को नये कर्त्तव्यो को निभाने के लिए पूरी तरह तैयार कर लिया है। खुदा की मेहरबानी से यदि जीवित लौट आई तो फिर डायरी भरूगी। तब तक के लिए इसे मैं अलमारी मे छिपा कर रख आऊँगी।

नोट यदि मैं अपने कार्य मे मृत्यु को वरण कर लूं और वापिस न लौट सकूं तो जिस व्यक्ति को भी यह डायरी मिले वह इसे मुक्ति सेना के प्रचार कार्यालय मे भेज दे।

—मेहरुन्निसा
२८ मार्च, ७१

× × ×

प्रिय बहन मेहरुन्निसा!

सुभाषचन्द्र बोस की जीवनी खोज रहा था कि अलमारी मे रखी तेरी यह डायरी मेरे हाथ लग गई। तेरे घर से चले जाने के कुछ ही देर बाद मैं वापिस आ गया था। अपने हिस्से का खाना रसोई मे देख कर मुझे खुशी हुई। मेरी बहन मेरा कितना ख्याल रखती है!

दीदी की खोज मैंने भी की पर उनका अभी तक कोई पता नही चला है। जिस समय पाकिस्तानी हैवानो ने रॉकीए होस्टल पर हमला किया, दीदी वही समीप मे बनाए गए मुक्ति सेना के अस्पताल मे थी। पाक जाबाजो ने अस्पताल के सभी मरीजो, डाक्टरो और घायलो को बेरहमी से मार डाला। कुछ नर्सो की खून मे लथपथ नगी लाशें भी मिली है।

माफ करना बहन! मैं अपनी उत्सुकता को रोक नही सका और तुम्हारी डायरी पढ ली। सम्रादत और तुम्हारे प्यार के प्रति अपनी शुभकामनाए भेंट करता हूं। युद्ध समाप्त होते ही मैं तुम दोनो की खूब धूम-धाम से शादी करवा दूंगा।

देश प्रेम और साहस मे तुम मुझ से भी आगे निकल गई। एक जासूस के रूप मे उन हैवानो के बीच मे जाकर काम करना तुझ जैसी महान युवती के योग्य ही है। मुझे पूरा विश्वास है कि तू अपने काम मे सफल होकर सकुशल वापिस लौट आएगी। बस, तुझसे एक अनुरोध है, निराशावादी विचार मत रखा कर। जीवन मे सफलता पाने के लिए आत्मविश्वासी और आशावादी होना बहुत आवश्यक है।

तू घर आने पर हमेशा पूछती है कि मैं कहां-कहां गया और क्या-क्या किया ? तो ले सुन, मैं भी अपने खट्टे मिट्ठे अनुभव तेरी जानकारी के लिए लिखे देता हूं।

मैं मुख्य सडको से दूर रहता हुआ अपनी साइकिल से हेड क्वार्टर जा रहा था। अपने मोहल्ले से लगभग दो मील दूर निकल गया हूंगा कि राइफल की आवाज सुन चौंक पडा। हाथो ने अपने आप मशीन की तरह ब्रेक लगा दिए। मेरी गली ठीक अजीमपुर नगर की छोटी मस्जिद के सामने खुलती थी। मैंने देखा कि मस्जिद को चारो तरफ से पाक फौजियो ने घेर रखा है।

मेरा एक दोस्त अब्दुल फजल वही पास म रहता था। उसे भी मेरे साथ हेड क्वार्टर चलना था। मैं तेजी के साथ उसके घर की तरफ चल दिया। सौभाग्यवश वह मेरा ही इन्तजार कर रहा था। मैंने उसके द्वारा यूनिवर्सिटी मे स्थित मुक्तिसेना की टुकडी को बुलवाने के लिए संदेश भेजा। वह साइकिल पर बैठ यूनिवर्सिटी की तरफ चल पडा और मैं उसकी बन्दूक उठा कर छत पर चढ गया। एक छत से दूसरी छत पर कूदता हुआ मैं ठीक मस्जिद के सामने वाली छत पर पहुंच गया। वहां मुझे चार नौजवान मोर्चा सम्भाले हुए मिले। लेकिन उनके पास ... पत्थरो के अलावा और कुछ न था। मुझे देख कर और विशेष रूप से मेरे सिर पर लगी मुक्ति सेना की 'जय बांगला' अंकित टोपी को देख कर उनके चेहरो पर स्वागतपूर्ण मुस्कानें खिल उठी।

उन्होंने धीमे से "जय बांगला" कह कर मेरा अभिवादन किया।

'दोस्तो ! हिम्मत न हारो। मैं जैसे ही इशारा करूं तुम सडक पर खडे फौजियो पर हमला कर देना।" इतना कह कर मैंने पोजीशन ली और बन्दूक कधे मे लगा कर पट्ट लेट गया।

मस्जिद के अन्दर आठ-दस फौजी आटोमेटिक राइफल लिए मौजूद थे। लेकिन वाह रे बगाली मुसलमान ! तेरी हिम्मत और दिलेरी इतिहास मे सोने के अक्षरो से लिखी जाएगी। वे सब बडे शान्तिपूर्वक और अनुशासित तरीके से नमाज पढने मे मशगूल थे। उन्हे अपनी मौत का खौफ नही था। भला जब इसान समस्त ब्रह्माण्ड के स्वामी परवरदिगार की इबादत मे तन्मय हो उसे मिट्टी का पुतला इसान क्या डरा सकता है? लेकिन वे इसान थे कब? वे तो शैतान की औलाद थे, इसानियत और मजहब के दुश्मन।

उन्होने बिना कुछ कहे खुदा की इबादत करते हुए कुछ भाइयो को वहीं गोली मार कर ढेर कर दिया। इतना होने पर भी बाकी लोग नमाज़ पढते रहे। फौजियो ने अपने द्वारा मारे गए लोगो को घसीट कर मस्जिद के बाहर फेंक दिया।

नमाज़ खत्म हो जाने के बाद एक पाक सैनिक मुल्लाजी के पास पहुंच कर बोला 'तुम इन बेवकूफो को समझाओ कि पाक की खिलाफत करने वाले इस्लाम के दुश्मन हैं। पाकिस्तान सरकार का साथ देने मे ही मजहब और मुल्क की बेहतरी है।"

मुल्ला चीख कर बोला 'अय हैवानो ! मजहब और मुल्क के दुश्मन तुम हो। नमाज़ियो पर गोली चलाते हुए वह अपनी बात पूरी कर पाए कि इससे पहले फौजी ने एक जोर का मुक्का उसके मुंह पर मारा। वृद्ध मुल्ला जी के मुंह और नाक से खून निकलने लगा।

मैंने उन नौजवानो को इशारा किया और वे बाहर खडे फौजियो पर पत्थर बरसाने लगे। मस्जिद के अन्दर खडे पाक फौजी ईंट पत्थरो के गिरने और घायलो की चीख पुकारें सुनने के बाद बाहर निकले। तभी वक्त मैंने उनको निशाना बनाना शुरू कर दिया। मैंने दस गोलियो

मे सात पाक फौजियो को मौत के घाट उतार दिया ।

वे भी समझ गए कि गोलियाँ और पत्थर किस मकान से [illegible] जा रहे हैं । गनमशीनें गरज उठी । इसके साथ ही उन्होंने मकान पर पेट्रोल छिडक कर आग लगा दी ।

"तुम मे से तीन बायी तरफ के मकानो की छत पर [illegible] और एक मेरे साथ दाहिनी ओर चलो । हमे मस्जिद मे फसे लोगो की जीवन रक्षा के लिए अपनी लडाई कम से कम पन्द्रह मिनट [illegible] और जारी रखनी है ।

उन्होने फौरन मेरी आज्ञा का पालन किया । मे जिस छत पर पहुंचा वहाँ पाच आदमी पहले से ही मौजूद थे । उनके पास कुछ हथगोले और ईट पत्थरो के ढेर पडे थे ।

अब हम दस आदमियो ने लगभग सौ सशस्त्र फौजियो का [illegible] मुकाबला करना शुरू कर दिया । हम इस बात का [illegible] ध्यान [illegible] थे कि किसी भी फौजी को मस्जिद के अन्दर न जाने दे ।

हमारी लडाई करीब सोलह सत्रह मिनट चली होगी कि [illegible] जय-घोष सुनाई देने लगा । [illegible] फौजियो ने जल्दी से जल्दी भागने ही अपनी भलाई समझी ।

शाम को जिस समय मैं यूनिवर्सिटी के सामने से गुजरा शहीद [illegible] पास बीस विद्यार्थियो की लाशें पडी हुई दिखाई दीं । [illegible] [illegible]थियो के पास पडे छुरे और चाकू अब भी उन [illegible] भरी गाथा को कह रहे थे ।

यह वही शहीद मीनार है जहाँ सन् ५२ मे बंगला [illegible] पद दिलाने की मांग करते हुए इक्कीस विद्यार्थी फौजियो [illegible] शिकार हो गये थे । उन शहीदो के खून की एक-एक बूंद से [illegible] और लाखो शहीद जन्म ले चुके हैं ।

फौजियो ने जनता का मनोबल तोडने के लिए शहीद मीनार [illegible] गोले बरसा कर उसे ध्वस्त करने का प्रयत्न किया था । [illegible]

देशवासी का हृदय अभेद्द दुर्ग का रूप धारण कर ले फिर किस में शक्ति है जनता के मनोवल को कम करने की ?

कल रात अपनी ड्यूटी पूरी कर मैं मोती झील के नजदीक से गुजर रहा था। चारो तरफ अधेरा था कि मैंने एक छाया को सरोवर मे कूदते हुए देखा। टॉर्च की रोशनी पानी पर फेंकने के बाद मैंने देखा कि एक युवती गहरे पानी मे डूब रही है। वह निपट नग्न थी।

मैं कपडे उतार कर जल्दी से पानी मे कूद पडा और नवयुवती को बाहर निकाल लाया। टॉर्च के प्रकाश में मैंने जब उसके चेहरे को देख तो खुदा की कारीगरी पर ताज्जुब करने लगा।

वह इतनी खूबसूरत थी कि उसका जिक्र लफ्जो मे नही किया जा सकता। एडी छूने वाले लम्बे-लम्बे घुघराले बाल, बडी बडी पलको मे छिपी खूबसूरत आंखे, गुलाबी कपोल और फूल की पंखुरियो से होठ। लेकिन जिस्म पर कोडो के निशान उभरे हुए थे और दो चार जगह इसानी दांतो के दाग एक हैवानियत भरी दास्तान कह रहे थे। वह बेहोश थी। मैंने अपनी पैंट और कमीज उसे पहना दी।

आगे क्या किया जाय, यह सोच ही रहा था कि एक जीप सडक से गुजरी। मैंने हाथ के इशारे से उसे रोका और नवयुवती को जीप मे बैठा कर अस्पताल ले गया।

होश आने पर उसने अपनी जो रोमाचक कथा सुनाई, मेरे दिल का तार-तार दर्द से चीख उठा।

वह बंगला के एक लेखक श्री अद्वीत्यकुमार चक्रवर्ती की इकलौती बेटी थी। पाक फौजियो ने पच्चीस मार्च को रात को उसके घर पर हमला बोला। उन्होंने चक्रवर्ती को हाथ पैर बांध कर डाल दिया और कहा "अगर तुम अब भी शेख मुजीब के खिलाफ लेख लिखने का वायदा करो, हम तुम्हे न सिर्फ छोड देंगे बल्कि सरकार से काफी इनाम दिलवायेंगे।"

लेकिन इन महान और देशभक्त लेखक ने बुरी तरह पिटने के बाद

भी किसी तरह का वायदा करने से इकार कर दिया।

इस पर उन जानवरो ने दो महीने के शिशु से लेकर बारह साल तक के चारो बच्चो को गोली मार दी। बच्चो की माँ की बेइज्जती करने के लिए वे जैसे ही आगे बढे, उसने छुरी मार कर आत्महत्या कर ली।

फौजियो ने अद्वीत्य कुमार के दोनो हाथ काट कर घर के दरवाजे पर लटका दिए और उनके सिर को काट कर दरवाजे के बीच मे रख दिया। फर्श पर उन्होने खून से लिख दिया—जो नेपाक पाकिस्तान की खिलाफत करेगा उसका यही अजाम होगा।

जाते वक्त उनकी नजर शौचालय मे छिपी अद्वीत्य कुमार की पुत्री कुमारी प्रतिभा पर पडी और वे उसे पकड कर अपने साथ ले गए। फौजी छावनी मे ले जाकर प्रतिभा के कोमल और सुन्दर तन पर कितने घृणित तरीके के जुल्म ढाए गए उसे लिखते हुए शर्म से मर जाने की इच्छा होने लगती है।

उन जुल्मो के चिन्ह आज भी प्रतिभा के शरीर पर मौजूद हैं। उसने कई बार आत्महत्या करने की कोशिश की पर सफल न हो सकी। [illegible] मे वह एक कूडा ढोने की गाडी मे छिप कर फौजी कैम्प से निकल [illegible]।

बाहर आकर उसने पाया कि सारा [illegible] शहर [illegible] [illegible] बन चुका है। सडती हुई लाशो की बदबू [illegible] [illegible]। उसके अधिकाश नातेदार या तो मौत के घाट उतारे जा चुके हैं या भाग गए है।

अत मे निराश होकर उसने सरोवर मे [illegible] आत्महत्या [illegible] प्रयत्न किया। अब वह जीवित भी रहे तो [illegible] [illegible]? प्रतिभा ने रोते हुए मुझे अपनी पूरी कहानी सुनाई [illegible] कहा।

"मेरे माँ-बाबा और दादा को भी इन जालिमो ने मौत [illegible] उतार डाला है, लेकिन मैंने आत्महत्या नहीं की। [illegible]

आत्महत्या करते रहेंगे तो उनसे कैसे जीतेंगे, कैसे अपना बदला लेंगे ? यदि बंगाल के नौजवान और प्रतिभाएँ अपने शत्रुओं से बदला नहीं लेंगी तो मरने के बाद भी उनकी मृतात्माओं को शान्ति नहीं मिलेगी। प्रतिभा ! तुम्हें उनसे अपना बदला लेने के लिए जीवित रहना है, अपने देश को आजाद करने के लिए जीवित रहना है। मेरा और देश का सारा स्नेह तुम्हारे साथ है। तुम्हारा दर्द देश का दर्द है और देश की गुलामी, तुम्हारी गुलामी।" भावावेग में मैं कहता गया।

"उन हत्यारों ने मेरे शरीर को अपवित्र कर दिया है। मुझे कौन स्वीकारेगा ?" प्रतिभा रुंधे गले से बोली।

"मैं स्वीकार करूँगा प्रतिभा ! मुसलमान हूँ और तुम हिन्दू पर धर्म इन्सान में अलगाव नहीं लाता है, उन्हें नजदीक लाता है। शादी के बाद भी हम दोनों अपने-अपने धर्मों को मानते रह सकते हैं।" मैंने उसके कोमल हाथ पर अपना हाथ रखते हुए कहा।

मेरी बात का उसने कोई उत्तर नहीं दिया। हाँ, उसने मेरे फैले हुए हाथ को अपनी मुट्ठी में जरूर दबा लिया।

मैंने बात बदलते हुए कहा "डाक्टर का कहना है कि अभी दो-तीन दिन तुम्हें आराम की जरूरत है। मैं वक्त निकाल कर तुमसे मिलता रहूँगा।"

मैं वापिस चला आया। क्यों बहन, तेरा क्या ख्याल है, मैंने ठीक किया न ? मुझे विश्वास है कि तू मेरे विचारों की पुष्टि करेगी।

सुबह मैं अपने काम पर चला जाऊँगा। इस डायरी को अलमारी में ही रखे जा रहा हूँ। अच्छा, 'जय बांगला !'

—तेरा भाई जफर

× × ×

आज भी तू वापिस नहीं आई। भात खुद पकाना पड़ा। खाना पकाने में जो तकलीफ और परेशानी हुई उससे ज्यादा फिक्र मुझे तेरी है। खुदा तेरी हिफाज़त करे, तेरी मुसीबतों को मेरे हिस्से में डाल दे

और मेरी खुशियो को तुझे वख्शे।

दीदी का अभी तक पता नही लगा है। जाने क्यो मुझे ऐसा यकीन होता है कि वह जहाँ है, जीवित है।

प्रतिमा एक दिन मे बिलकुल बदल गई है। आज वह मुझसे मुस्कराते हुए मिली। उसने मुक्ति सेना मे मेरे साथ काम करने की ख्वाहिश जाहिर की।

मैं बहुत कोशिश करने के बाद दो सेब उसके लिए खरीद सका था। मैंने उसे जब वे सेब भेंट किये, उसने उन्हे स्वीकार करने के बाद कहा, "आप की मेहरबानी के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया। लेकिन अब मैं तन्दुरुस्त हूँ। मुझे बडी खुशी होगी अगर आप इन्हे किसी घायल मुक्ति सैनिक को खिला दे।"

मुझे उसके इस उत्तर को सुनकर बेहद खुशी हुई। सेब लेकर मैंने उसी अस्पताल के एक मुक्ति सैनिक को दे दिए।

प्रतिभा ढाका कालिज मे बी०ए० के प्रथम वर्ष की छात्रा है। कविता कहानी लिखने का उसे शौक है। बांगला देश की आजादी के लिए किए जाने वाले जद्दोजहद का महत्व वह अच्छी तरह समझती है। आज उसने मुझे अपनी एक नई कविता सुनाई। उसकी कुछ पंक्तियाँ मुझे इस समय भी याद आ रही हैं—

तुम मेरे शरीर को
छलनी कर सकते हो
बदूको की गोलियो से
पर
तुम मेरे खून की हर बूंद मे
घुले देश प्रेम को
खत्म नही कर सकते।
बगला देश की धरती पर
फेंका गया हर गोला

शहीदो पर चलाई गई
हर एक गोली
पाकिस्तान की जर्जर नीव को
खोखला कर रही है।
शहीदो की मौत पर
व्यग्यपूर्ण अट्टहास करने वालो।
तुम नही जानते कि
हिटलर और मुसोलिनी भी
कुत्तो की मौत मरने से पहले
ऐसी ही कुत्सित हसी से
पागल बने थे।

आदमी को उसकी मनोभावनाएँ कितना शक्तिशाली बना देती हैं, यह आज मैंने प्रतिभा को देखकर महसूस किया। कल जिसे देखकर ऐसा लग रहा था कि शायद यह ज्यादा दिनो तक जिंदगी का बोझ नही ढो सके, वही लडकी आज देशभक्ति और वीरता से पूर्ण कविता सुना रही थी। मेरी बातो और मोहब्बत भरे व्यवहार का उस पर बहुत अच्छा असर पडा है।

सुलेमान के बारे मे बिना कुछ लिखे डायरी खत्म करना अपने जज्बातो के साथ ज्यादती करना होगा। आज हर मुक्ति सैनिक के दिल और जबान पर सुलेमान का नाम है।

सुना जाता है कि सुलेमान एक बहुत महत्वपूर्ण सूचना लेकर जा रहा था। नूर नगर के पास चार सशस्त्र पाकिस्तानी जासूसो ने उसे घेर लिया। वे उसकी साइकिल का काफी देर से पीछा कर रहे थे। सुलेमान साइकिल दौडाते-दौडाते थक चुका था। दस-ग्यारह साल का बच्चा अकेला चार आदमियो से कैसे अपना पिड छुडाता। वह इधर-उधर गलियो मे बहुत घूमा पर जासूसो ने उसका पीछा नही छोडा। उसे जान पहचान का कोई स्त्री-पुरुष भी रास्ते मे नही मिला जिससे वह

मदद ले सके ।

मौका पाते ही सुलेमान ने सामने से आते दो पाक जासूसों को हथगोला फेंक कर खत्म कर दिया । इतने मे ही पीछे से आने वाले जासूसो ने उसकी टाग मे गोली मारी । गोली लगने से सुलेमान सड़क पर गिर पड़ा । जासूसो को पास आते देखकर उसने मुक्ति सेना के कप्तान का सदेश मुंह मे रख लिया । कागज चबा कर वह उसे निगल गया ।

पाक जासूसो ने उसे पकड कर बहुत पीटा । जब वह कुछ नही बोला, उन्होने उसका पेट फाड कर उस कागज को निकालने के उद्देश्य से उसके पेट मे छुरा घोप दिया और पेट फाड कर उस कागज को हासिल कर लिया । किन्तु उसी समय कुछ छात्रो ने जासूसो पर हमला कर उन्हे मार डाला ।

सुलेमान की मौत का सम्वादता को अपने बाप की मौत से भी ज्यादा सदमा पहुँचा है । लेकिन उसकी आंखो मे जैसे रेगिस्तानी तूफान थम कर रह गया है । भाई के शहीद हो जाने की खबर पाकर उसने [illegible] कहा—"सुलेमान को कोई नही मार सकता ।"

सचमुच सुलेमान को कोई नही मार सकता । [illegible] सैकडो सुलेमान छिपे हैं । उन्हे मारने वाले [illegible] कब्र खोद रहे है जो हर दिन और हर रात गहरी होती [illegible] है ।

आज मुक्ति सेना ने पूरे [illegible] पर अपना अधिकार [illegible] है, सिर्फ हवाई अड्डे और कैन्टूनमेन्ट [illegible] पर पड़ी हजारो लाशों को सम्मानपूर्वक दफना [illegible] जायेगा । लड़ाई दिन-प्रतिदिन ज्यादा लम्बी [illegible] नहीं सोचा था कि महान् इस्लाम [illegible] हो सकते हैं कि अपने ही देशवासियों [illegible] हवाई जहाजो से हमला कर दे ।

चाहे कुछ भी हो हमारी विजय निश्चित है । [illegible]

आदि कई जगहो पर हमारी सेना को पाकिस्तानी भगोडो द्वारा छोडी गई काफी युद्ध सामग्री मिल गई है।

३० मार्च, ७१—जफर

× × ×

मुझे विश्वास नही था कि अपना कार्य पूरा करके जीवित लौट आऊँगी पर खुदा की मेहरबानी से दुश्मन के अड्डे मे से जरूरी खबरे पता लगा कर वापिस लौट आई हूँ।

भाइया ने मेरी डायरी पढ ली और आपबीती भी लिख गये। चलो अच्छा हुआ। इस सकटकाल मे जब जीवन का कोई भरोसा नही, आपस मे कुछ छिपाना ठीक नही लगता। भइया ने मुझे शुभकामनायें दी हैं, खुदा उनको भी मनोकामनायें पूरी करे। प्रतिभा को देखने की बडी लालसा है।

सुलेमान के शहीद हो जाने का समाचार पढ कर मुझे बेहद दुख हुआ है। इस वक्त भी आंखें गीली हैं। बेचारा जरा सा बच्चा और उसे कितनी भयावनी मौत का सामना करना पडा। वीरता उसमे कूट-कूट कर भरी थी। दस-ग्यारह साल के बच्चे ने दो आदमियो को खत्म कर दिया। उफ! आंसू हैं कि रुकते नही।

"जय बांगला!"—"हम जरूर जीतेंगे, है न दीदी।"

"देखो दीदी! कही मैं रो रहा हूँ।"

'काश! मेरे पास एक बन्दूक होती।"

'मैं उन्हे खोज-खोज कर मारूंगा।"

उसकी हर बात मन मे गूंज रही है और आंसू थमने का नाम नही लेते।

'दीदी! इस तरह रोओगी तो फिर उन जालिमो के चगुल से मातृभूमि को कैसे मुक्त करोगी?"

हैं, यह कौन बोल रहा है? मैं चारो ओर देखती हूँ। कही कोई नही है। सभी तरफ मौन का भयानक सन्नाटा छाया हुआ है। मेरे मन

मे विराजा नन्हा सुलेमान रात के इस सूनेपन मे मुझे ढांढ़स बँधा रहा है।

अच्छा भइया ! नही रोऊँगी। उन दरिंदो से जिन लाखो जुल्मो का बदला लेना है, उसमे एक इजाफा और हो गया है।

अगर तू जीवित होता सुलेमान ! मैं बताती कि तेरी दीदी ने इस बीच कितनी बहादुरी के काम किये हैं। परन्तु तू तो अब भी जीवित है और जब तक बगाल की खाडी मे सागर की लहरें हिलोरें ले रही हैं, पद्मा नदी मे पानी है और बग भूमि पर जीवन का एक भी चिह्न शेष है तू जीवित रहेगा। तेरी वीरता के सामने तेरी दीदी की वीरता बहुत तुच्छ है, फिर भी मैं तुझे सब कुछ सुनाऊँगी ताकि तेरी रूह को शान्ति मिल सके।

उस रात सम्रादत के साथ आने वाली महिला ने मेरा रग रूप बदल कर रख दिया। रगीन फूलो की डिजायन वाले फ्रॉक मे, मेरे शरीर का सौन्दर्य आकर्षक रूप से निखर उठा। मुझे मेरे नये पार्ट की पृष्ठभूमि और आवश्यक सूचनायें देने के बाद उस महिला ने एक बहुत पैनी दुरगी हेयर पिन देते हुए कहा, "इसका लाल रग वाला सिरा आदमी को आधे मिनट मे समाप्त कर सकता है, हरी नोक को चुभाने से दूसरे को बेहोश किया जा सकता है। इसे बहुत सावधानी से बालो मे लगा लो। लापरवाही करने से यह तुम्हारी ही मौत का साधन बन जायेगा। बहुत जरूरत पडने पर इसका उपयोग करना।"

मैं आधे घण्टे के अन्दर सिखायी गयी सारी बातो को मन ही मन रटती अज्ञात मित्र के साथ फौजी छावनी मे दी जाने वाली दावत मे मे पहुँच गयी। रास्ते भर डर के मारे दिल बुरी तरह धडकता रहा। राइफल लेकर शत्रु का सामना करने और अकेले ही उसके केन्द्र स्थल मे पहुँच कर जासूसी करने मे बहुत फर्क है।

किन्तु सबके बीच पहुँचते ही मेरा भय और सकोच समाप्त हो गया।

"हलो ! हॉउ आर यू ?"

"हलो ! हॉउ आर यू !"

"आप हैं मेरी नयी मित्र मिस क्रिस्टीना ! अमरीका से यहाँ घूमने आयी हैं, अब जाने की तैयारी मे है।" मेरा दोस्त परिचय कराता।

"मिस क्रिस्टीना ! आप से मिलकर खुशी हुई।" लोग औपचारिक सज्जनता दिखाते हुए अंग्रेजी मे कहते।

"मैं भी आप से मिलकर बहुत खुश हुई।" मैं अंग्रेजी के अमरीकी उच्चारण की भरसक नकल करने की कोशिश करते हुए उत्तर देती।

कुछ देर बाद अपने अपरिचित साथी की बाँहो मे बाँहें डाले आर्केस्ट्रा की मधुर ध्वनि पर मैं बाल डास करने लगी। अन्य जोडे भी डास फ्लोर पर थिरकने लगे अधुनातन शैली मे बँधे-सवरे मेरे लम्बे खुले बाल नृत्य के साथ-साथ हवा मे इधर-उधर लहरा जाते। मुझे ऐसा प्रतीत होता मानो ये लहराते, बलखाते बाल काले रेशम के धागे से बना जाल है। पता नही कोई मछली फँसती है या नही ?

मुझे ज्यादा देर इतजार नही करना पडा। प्रथम नृत्य के बाद मैं कुर्सी पर बैठी अपनी थकान उतार रही थी कि "क्या आप जैसी सुन्दरी के साथ नृत्य करने का सौभाग्य मुझे मिल सकता है ?" सुनकर चौंक उठी।

सुन्दर नयनो की प्रत्यचा पूरी चढाकर मैंने उसकी ओर ताका और नजरो के तीखे बाण छोडते हुए बोली "थक गई हूँ। माफ करिए, पांच मिनट बाद आपके साथ नाच सकूंगी।"

मछली के गले मे काँटा भली प्रकार अटक जाय इसके लिए डोरी को हल्का-सा पीछे खीच कर ढीला छोडना जरूरी था।

ठीक पाच मिनट बाद वह मेरे साथ नृत्य कर रहा था। "आप बहुत सुन्दर है।"

"थैंक यू वेरी मच !"

नृत्य करते-करते उसने पूछा, "आप पाकिस्तान घूमने आयी थीं ? कैसा लगा ? आप नाचती बहुत अच्छा है।"

उसका नाम मेजर जिया खाँ था। लगभग तीस-बत्तीस वर्ष का सुन्दर और स्वस्थ पुरुष। हर पाकिस्तानी फौजी की तरह मुझे उसके चेहरे पर मक्कारी और नीचता के भाव छिपे हुए दिखाई पडे।

'पश्चिमी पाकिस्तान की जनता पूरब से अधिक सभ्य और उन्नतिशील है। बगाल के लोग तमीज से बात करना तक नही जानते। ये मूर्ख और कायर हैं पर दिल के बहुत साफ।"

"आप ठीक कहती हैं। मूर्खों का दिल बहुत साफ होता है। इस बार हम इनकी पूरी तरह सफाई कर देंगे।"

उसकी आँखो मे एक हिंसक चमक दिखाई पडती है। मासाहारी चीते और भेडिये जब अपने शिकार पर उछलने वाले होते हैं उनकी आँखो मे ऐसी ही चमक कौंधने लगती है।

नाच खत्म होने के बाद हम दोनो मेज के पास बैठ कर सूप पीने लगते हैं। वह मेरे बारे मे बडी उत्सुकता दिखाता है। मेरे जीवन के बारे में सब कुछ जानने को लालायित है। मैं समझ रही हूँ। वह शिकार पर जाल फेंकने के लिए उसके चारो ओर की परिस्थितयो का जायजा ले रहा है।

रटाई गई कहानी सुना देती हूँ। मेरे पिता पजाबी मुसलमान थे और माँ अमरीकन। पिता व्यापार के सिलसिले मे अमरीका गए और वही शादी करके बस गये। बचपन से ही पाकिस्तान देखने की बडी बलवती कामना थी। पिता का स्वर्गवास हो जाने के बाद पाकिस्तान आने का सौभाग्य मिल सका पर यहाँ आकर बुरी तरह फँस गयी हूँ। ढाका के लडाई-झगडो से मेरा दिल बहुत घबराता है। एक हफ्ते से कोशिश कर रही हूँ पर हवाई जहाजो पर सीट बुक नही की जाती। मैं अब जल्दी से जल्दी अमरीका वापिस जाना चाहती हूँ।

मेरी कहानी वह अच्छी तरह गटक गया। इसके पीछे उसका है स्वार्थ था। आँख मारते हुए बोला, "मेरे साथ चलो। रात मेरे बंगले पर आराम से काटना, कल एक सैनिक विमान कराची जाने वाला है,

तुमको अपना रिश्तेदार बताकर उसमे भिजवा दूंगा।"

"सच ! मैं आपका अहसान जिन्दगी भर नही भूलूंगी। यहां मुझे हर क्षण मौत का डर सताता रहता है। लेकिन कही आप मजाक न कर रहे हो ?"

"बाई गॉड ! मेरा एक-एक लफ्ज सच है। इतनी छोटी-सी मुलाकात मे मेरे हृदय पर तुम्हारे रूप ने जादू सा असर किया है। अगर तुम मेरे साथ रात बिताने का वायदा करो मैं कल सुवह तुम्हें प्लेन से कराची भिजवा दूंगा।"

"मुझे बहुत खुशी होगी। लेकिन मेरा दोस्त बुरा मान जाएगा।"

"क्या उसे किसी तरह मनाया नही जा सकता है ?"

"वह मारिजुआना का शौकीन है। केवल उसके बदले मे ही वह मुझे रात भर के लिए भूल सकता है।"

'लेकिन कल मैं सिर्फ तुम्हे ही भेज सकूंगा। तुम्हारे साथी के लिए सीट नही मिल सकती।"

"इस वक्त मुझे सिर्फ अपनी जान की परवाह है।"

"फिक्र न करो मारिजुआना का इतजाम कर दिया जाएगा।"

पार्टी के बाद मैं उसके बगले मे पहुँच गई। प्रेम का अभिनय करते हुए मैंने पूछा "मैं नही जानती थी कि तुम इतने खुशदिल और मस्त आदमी निकलोगे। जिन्दगी मे आज पहली बार महसूस कर रही हूँ कि एक बलिष्ठ पुरुष के आलिगन मे कितना सुख होता है।"

"जो लडकी मिलती है, यही या इसी से मिलती जुलती बात करती है, शराब लाऊं पिओगी ? असली फ्रेंच वाइन है।" अपनी प्रशसा पर खुश होते हुए वह बोला।

"नही, मैं पार्टी मे काफी पी चुकी हूं।"

'मैं तो कहो अभी एक बोतल और चढा जाऊं।" और वह शराब पीने लगा।

"तुम लोग इन बगालियो से कब तक हार खाते रहोगे ?"

"क्या मतलब ?" वह गरजा। मैं उसकी अकड की बिना चिन्ता किए सोफे पर लेट गयी। कुछ सेकिण्ड चुप रह कर उसने फिर बोलना शुरू कर दिया। अब वह बिना रुके बोलता ही जा रहा था। मुझे लगा कि वह हीन भावना से बुरी तरह ग्रस्त है।

"हमने तीन चार दिन के अन्दर दो लाख से ज्यादा बगालियो को मार डाला है और तुम कहती हो कि हम पिट रहे हैं ? जानती हो "अकेले सिर्फ मैंने एन० सी० सी० के तीन सौ बगाली जवानो को मौत के घाट उतारा है। पच्चीस तारीख की घटना है। एक कैम्प मे तीन सौ बगाली स्टूडेन्ट्स थे। हमने सोचा यह सब साले एक न एक दिन हमारे खिलाफ लडेंगे। हम उन्हें ट्रको मे भर कर शहर से बाहर एक गोदाम मे ले गये। उन्हें हमारी नियत पर शक होने लगा था। वे घर जाने के लिए बेचैन थे। हमने उनसे कहा कि चाय और नाश्ता कराने के बाद तुम सबको घर भिजवा दिया जाएगा। हमने उन सबको गोदाम मे बन्द कर ताला लगा दिया फिर खिडकियो पर मशीनगन लगा कर भून दिया। एक साले को भी नही छोडा।"

मैं उसकी नृशसता सुनकर अन्दर ही अन्दर तिलमिला उठी। मौका मिलते ही मैं इसके शरीर मे मौत की सुई चुभाना नही भूलूगी। मैंने उसे और उत्तेजित करने के लिए कहा, "इतना होने पर भी ढाका और चटगांव पर अभी बगालियो की हुकूमत चल रही है। वे हमेशा तुम लोगो को कैन्टनमैन्ट एरिया मे भागने के लिए मजबूर कर देते हैं।"

शराब का जाम चढाकर वह बोला, "बस, देखती जाओ। हमारा गोला बारुद कम पड रहा है। हमने यह कभी नही सोचा था कि ये डरपोक बगाली अपनी आजादी के इतने दीवाने निकलेंगे कि बच्चा-बच्चा मरने मारने को तैयार हो जायेगा। हम कराची मे आने वाले समुद्री जहाजो का इन्तजार कर रहे हैं। जैसे ही वे आ गए हम पूरे बगाल पर बम वर्षा कर सब कुछ तबाह कर देंगे। पश्चिम से सेना की और डिवीजनें भी आ रही हैं।"

"अब छोडो मार-काट की इन बातो को। मुझे नीद लग रही है।" मैंने उसके समीप खिसकते हुए कहा।

"अरे, सोने के लिये पूरी रात पडी है, पूरी जिन्दगी है। तुम जैसी विदेशी सुन्दरी से बात करने का मौका रोज-रोज नही मिलता। अच्छा, तुम्हारा क्या ख्याल है ? क्या मुजीब की सेना को हिन्दुस्तान मदद दे रहा है ?"

"मुझे ऐसा ही मालूम पडता है वरना अमरीकी और चीनी हथियारो के सामने ये लोग ज्यादा देर तक नहीं टिक पाते। मुझे हिन्दुस्तान से सख्त नफरत है।" मैंने मुंह बनाते हुए कहा।

वह जोर से हसने लगा। "तुम कूटनीति के मामले मे अभी दूध पीती बच्ची हो। अरे, इन बेवकूफो को कोई मदद नही दे रहा है। हिन्दुस्तान सिवाय बातें बनाने के और कुछ नही कर रहा है। शायद इससे ज्यादा करने की उसमे हिम्मत भी नही। हमने कुछ गलतियां की हैं, जैसे बगालियो को पुलिस और सेना मे भर्ती करने की गलती। अब हमारी वही गलतियां जान की ग्राहक बनी हैं। इन जानवरो को तो शुरू से पूरा गुलाम बना कर रखना चाहिये था।"

'अब छोडो भी इन बातो को। आओ हम प्यार करें। जिन्दगी का क्या ठिकाना ? कही उन्होंने यहां भी हमला कर दिया, हम मारे जा सकते है। प्यासा मरने से कही बेहतर है अपने तन-मन की प्यास बुझा कर मरना।" मैंने उसके गले मे बांहे डालते हुए कहा।

"वे कैन्टूनमैंट एरिया मे नही आ सकते। चारो तरफ सुरगे बिछी है। हल्की और भारी तोपें लगी हैं। हमने अपने ठिकाने की हिफाजत लायक काफी गोला बारूद जमा कर रखा है। इसीलिये हम धीमे-धीमे शहरी इलाके से पीछे हट आये हैं।" उसने मेरे कपोलो पर चुम्बन अंकित करते हुए कहा।

मैंने अपने को उसकी बाहो मे ढीला छोडते हुए पूछा, "अगर मान लो कल यहां से कोई जहाज नही उडा, मैं क्या करूगी ?"

"हमारे एक हजार जवान बुरी तरह घायल हो चुके हैं। उन्हें ले जाने के लिये समुद्री जहाज हर हालत मे जायेंगे।"

"तुमने हवाई जहाज से भेजने के लिये कहा था। क्या नशा चढ़ने लगा है ?"

"ओह . हाँ जहाज, कल कम से कम चार हवाई जहाज हथियारो और फौजियो से भर कर आयेंगे। यहाँ से फौजी अफसरो के बीवी बच्चे वगैरह भेजे जाएगे। मैं ऐसे ही किसी जहाज से तुम्हे भेज दूंगा। देखो ! मुझे नशा नही चढा है। यही...वायदा किया था... न .मैंने ?" अब उसकी जवान शराब के नशे से ऐंठने लगी थी। उसे अपने हाथ पैरो पर काबू नही रह गया था। वह मेरी कमर मे हाथ डाल कर खडा हुआ और धडाम से फर्श पर गिर गया। नीचे गिर कर उसने हाथ पैर फैलाये जिससे हल्की मेज एक तरफ को खिसक गई। उस जालिम के हाथो अपनी लाज लुटने से बच जाने के कारण मैं बहुत खुश हुई। मैंने अपने बालो मे से रगीन पिन निकाली और उसकी हरी नोक उसके कान के पिछले भाग मे चुभो दी। अब उसे कम से कम चार घण्टे से पहले किसी तरह होश नही आ सकता था।

मैं कमरे की अलमारियो, सन्दूको और अटैचियो को सावधानी से खोल-खोल कर उनमें रखी चीजो का निरीक्षण करने लगी। उसके ऑफिशयल कागजात की फाइलें देखने से पता चला कि वह सेना के गुप्तचर विभाग का एक उच्च अधिकारी है। यह जानते ही मैं सावधान हो गई। कहीं ऐसा न हो कि मुझ पर शुरू से ही शक किया जा रहा हो। सम्भव है इस समय भी किसी गुप्त स्थान या वैज्ञानिक उपकरण से मेरी गतिविधियो पर नजर रखी जा रही हो। उसी समय मैंने कुछ आहट सी सुनी। रोमाच हो आया मुझे। हर चीज को यथास्थान रखने लगी और आने वाली मुसीबत के लिये तैयार हो गई। कुछ भी हो, मरने से ज्यादा क्या हो सकता है ? एक न एक दिन सभी को मरना है, फिर देश कार्य करते हुए मरने से बेहतर क्या हो सकता है ?

'तुम क्या कर रही हो ?' अगर किसी अज्ञात आदमी ने आकर पूछा, मैं क्या उत्तर दूंगी ? कह दूंगी कोई अच्छा-सा नॉवल खोज रही थी।

कुछ देर बाद एक बिल्ली अन्दर के कमरे से निकल कर आगन मे भाग गयी। मुझे अपनी घबराहट पर हसी आने लगी। हथेली पर सिर रख कर जासूसी करने निकली हूँ और बिल्ली से डर गई।

रात के डेढ बज रहे थे। यद्यपि खिडकियो पर पर्दे पडे थे और अलमारी मे रखी सैक्सी पुस्तको व युवतियो के नग्न चित्रो से स्पष्ट था कि वह बगला रोज नही तो दूसरे-तीसरे दिन काम लीलाओ का केन्द्र अवश्य बनता है फिर भी मैंने बिजली बुझा देनी ठीक समझी। जिया खा की जेबी टॉर्च निकाल कर मैंने फिर से गुप्तचर विभाग की उस महत्वपूर्ण फाइल को खोल कर पढना शुरू किया।

रावलपिंडी से आने वाले खतो मे ढाका के गुप्तचर विभाग को निकम्मा और बेकार का बोझ बताते हुए कडी डांट लगाई गयी थी। २५ मार्च से पहले हिन्दू मुस्लिम दगा कराने और अवामी लीग मे फूट डालने मे असफल रहने पर बहुत मजम्मत की गई थी।

नये हुक्म थे कि जैसे भी हो मुस्लिम लीग के सदस्यो और मुल्ला-मौलवियो को रुपये पैसे व पद का लालच देकर अपनी तरफ मिला लिया जाए। उनसे जासूसी का काम लिया जाय और मुक्ति सैनिको मे फूट डलवा दी जाये। शेख मुजीब की गिरफ्तारी और मुक्ति फौज को हिन्दुस्तान द्वारा मदद दिये जाने का ज्यादा से ज्यादा ढोल पीटा जाये। विदेशी पत्रकारो और फोटोग्राफरो पर सख्त नजर रखी जाये और उन्हे किसी भी हालत मे पूर्व पाक मे न टिकने दिया जाये। उनकी फोटो, रीलें और डायरियां छीन ली जायें। अवामी लीग के उच्च नेताओ का पता लगाकर उन्हे परिवार सहित मौत के घाट उतार दिया जाये। उन्हे उसी हालत मे जिन्दा रहने दिया जाय, जब वे पश्चिमी पाकिस्तान के रूप मे लिखित बयान देने या रेडियो से बोलने के लिए तैयार

हो जायें।

१९६५ की भारत-पाक लडाई के दौरान हिन्दुस्तान के जो अस्त्र-शस्त्र पाकिस्तान के अधिकार मे आ गये थे, उन्हे शीघ्र ही ढाका भेजा जायेगा। स्वदेशी और विदेशी पत्रकारो और महत्वपूर्ण व्यक्तियो को ये हथियार दिखाकर बताया जाए कि उन्हे सरपरस्तो से छीना गया है। भारत का पाकिस्तान के अन्दरूनी मामलो मे टाग अडाने का इससे मजबूत सबूत क्या हो सकता है?

हिन्दुस्तान के डिप्टी हाई कमिश्नर के कार्यालय व कर्मचारियो पर सख्त निगरानी रखी जाए।

किसी भी बगाली मुसलमान को सरकारी नौकरी या महत्त्वपूर्ण स्थान पर न रहने दिया जाय, चाहे वह कितना भी पाकिस्तान परस्त बनता हो। ऐसे सभी लोगो पर नजर रखी जाय जिनके रिश्तेदार या मित्र बगाली थे।

कुछ सरकुलर और आदेश (कोड) कूट भाषा मे लिखे थे, मैं उन्हें समझ नही सकी। फाइल को अच्छी तरह बद कर मैंने उसे ठीक जगह पर रख दिया।

अन्त मे कपडे उतार कर मैं जिया खाँ की बगल मे लेट कर सोने का प्रयत्न करने लगी। लेकिन शत्रु की प्रेमिका का अभिनय करते हुए मुझे नीद कैसे आती? दिमाग मे नफरत की एक तेज लहर-सी उठती और अन्दर से कोई चीख कर कहता, 'चुभा दे इस भेडिये के शरीर मे जहर बुझी सुई!' मैं अपने को समझाती "अभी वक्त नही आया है। मुझे और भेद पता लगाने दो!" इसी तरह के मानसिक सघर्ष मे रात का आखिरी पहर बीत गया।

पक्षियो का कलरव सुनते ही मैं नहा धोकर तैयार हो गई। स्टोव पर चाय तैयार की और जिया खाँ को जाकर जगाया। जैसे ही वह उठ कर बैठा मैंने नखरे दिखाते हुए कहा, "तुम बडे जालिम आदमी हो। शराब के नशे मे मस्त होकर यह भी भूल गए कि मैं भी हाड मांस से

वनी लडकी हूं इस्पात की नही। मेरा अग-अग दुख रहा है। भगवान बचाए तुम्हारे प्यार से।"

उसने प्यार जताते हुए कहा, "मुझे माफ करो स्वीटहार्ट! कल रात काफी नशा हो गया था। कुछ भी याद नही आता।" "लो, चाय पिओ और मेरे कराची जाने का इतजाम करो। मुझे अभी अपने होटल से वीसा और दूसरी जरूरी चीजें व सामान लाना है।"

उसने घडी देखी। सात वज रहे थे। फुर्ती से उठ कर पास मे रखे टेलीफोन से एयर फोर्स हेडक्वार्टर का नम्बर मिलाया और मेरे लिए जहाज मे एक सीट बुक करने के वारे मे वात करने लगा। पाँच मिनट तक हर तरह से प्रार्थना करने के वाद भी वायुसेना अधिकारी ने उसकी वात को कल पर टाल दिया।

"अब मैं एक मिनट भी यहाँ नही रुक सकती हूँ। तुम मुझे होटल पहुंचा आओ।" मैंने नाराज होते हुए कहा। एक दिन और रुक जाने के लिए वह मेरी तरह-तरह से मिन्नतें और खुशामदें करने लगा। मैंने उसकी वात तभी मानी जव वायदा करा लिया कि वह मुझे परेशान नही करेगा।

कामी पुरुप एक खूवसूरत लडकी के सामने कितना कमजोर होता है, यह मैंने उसी दिन जाना। मुझे मनाने के लिए वह मेरे पैर तक छू रहा था और मैं उसे कुत्ते की तरह दुतकार रही थी। मैंने सोचा कि सम्भव है एक दिन और रुक जाने से नयी सूचनायें और गुप्त खवरो का पता लग जाय। आखिरकार मैंने उसकी प्रार्थना को मजूर कर लिया। पालतू कुत्ते की तरह एक विदेशी युवती का प्यार पाने के लिए वह सब कुछ करने को तैयार था। उस वक्त उसके हाव-भाव देखकर यह कल्पना भी नही की जा सकती थी कि यह वही आदमी है जिसने एन० सी० सी० के तीन सौ वगाली युवको को जान से मरवा दिया था।

उसे मेरे ऊपर किसी तरह का सन्देह न हो, इसलिए मैंने उसी वक्त अपने होटल का नम्बर मिलाकर फोन करना चाहा पर ऑपरेटर ने

बताया कि कैन्टूनमैण्ट एरिया से बाहर की सब लाइनें बेकार पडी हैं। मैं उदास हो गई।

"तुम फिक्र न करो। एम्बेसी होटल पर सेना का सख्त पहरा है और तुम्हारे दोस्त को मैंने रात मे ही तुम्हारे कराची जाने के बारे मे बता दिया था।"

"और अगर मुझे कल भी जहाज मे सीट न मिली?"

"मैं तुम्हें एम्बेसी होटल पहुंचा आऊंगा। सुना है परसो एक प्लेन अमरीकी टूरिस्ट को लेकर जरूर जाएगा।"

"लेकिन मैं दिन भर यहां बैठी क्या करुगी?"

"यह जगह उस एम्बेसी होटल से कही ज्यादा सेफ है। तुम यहां उपन्यास पढो, रेडियो सुनो। वक्त आसानी से कट जाएगा। रात को मैं तुम्हे एक ऐसे रात्रि क्लब मे ले चलूंगा जैसा तुमने अमरीका मे भी नही देखा होगा।"

"उसके बाद फिर तुम मुझे परेशान करोगे। तुम बहुत चालक हो। मैं खूब समझती हूँ।" मैंने हसते हुए कहा।

"नही बिलकुल नही। मैं जो कुछ करुगा, तुम्हारी इजाजत लेकर करुगा।"

नहा धोकर वह कार मे बैठ अपने दफ्तर चला गया। उसके जाने के बाद मैंने फ्रिज से डबल रोटी, मक्खन, अडे वगैरह निकाले और डट कर पेट भरा।

किसी ने पिछले दरवाजे पर दस्तक दी। मैंने दरवाजा खोलने से पहले हर तरह की स्थिति के लिये तैयार हो जाना जरूरी समझा। बालो वाली जहरीली रगीन चिमटी निकाल कर बाएं हाथ मे ले ली और दाहिने मे वही पडा हुआ एक मजबूत डडा। मरने से पहले और कुछ नही तो कम से कम एक आदमी की जान जरूर ले लूंगी। इन पाकिस्तानियो की बातो का कोई ठिकाना नही। क्या पता मेरी सच्चाई का भेद उन्हे मिल गया हो?

बंद दरवाजे मे न कोई सेंध थी और न दरार। इस तरह मैं यह जानने मे बिलकुल असमर्थ थी कि दरवाजे के बाहर कौन है ? बाहर खड़ा व्यक्ति जोर-जोर से दरवाजे पर हाथ मारने लगा। स्पष्ट था कि वह क्रोध मे है।

मैंने सावधानी से दरवाजा खोला और झट से दीवार की ओट ले ली। लेकिन उस एक पल मे, मैंने जो कुछ देखा वह जिन्दगी का सबसे बड़ा आश्चर्य था। जो छाया मूर्ति दरवाजे से अन्दर आ रही थी, उसके एक हाथ मे गंदगी उठाने की डलिया और दूसरे मे झाड़ थी। वह अन्य कोई नही मेरी अपनी प्यारी दीदी थी। उसके शरीर पर केवल अधफटा ब्लाउज और पेटीकोट था। आँखें सूजी हुई थी और पूरे शरीर मे जगह-जगह पड़े हुये निशान साफ जाहिर कर रहे थे कि उसे बुरी तरह मारा पीटा गया है। उसके पैरो मे बेड़ियाँ पड़ी हुयी थी।

इससे ज्यादा ताज्जुब की बात यह हुई कि एक बार मुझे देखने के बाद भी उसने दुबारा मुड़ कर मुझे पहचानने की कोशिश नही की। मैंने आगे बढ़ कर दरवाजे के बाहर झांका। वहाँ एक हट्टा कट्ठा जमादार जमीन पर बैठा बीड़ी पी रहा था।

'मेम साब ! साहब कहाँ हैं ?" दीदी की आवाज बिलकुल अर्ध मूर्छित आदमी की तरह बेजान थी।

"साहब दफ्तर गये हैं।" मैंने दीदी को बांहो मे भरते हुये कहा "दीदी ! तुम यहाँ कैसे ? तुम्हारी यह हालत कर दी इन जानवरो ने।"

दीदी बिना कोई उत्तर दिये दरवाजे पर गई, जमादार को कुछ इशारा किया और किवाड़ बंद कर दिये। हम दोनो बहनें एक दूसरे को बांहो मे भर कर अपने दुख को मौन अश्रु प्रवाह द्वारा प्रकट करने लगी। मैंने स्नानगृह का नल खोल दिया ताकि पानी गिरने की आवाज मे हम दोनो की बातें कोई सुन न सके। दीदी ने अपने को बहुत जल्दी संयत कर पूछा "मुक्ति सेना की गुप्तचर क्रिस्टीनी तुम ही हो न ?"

"हाँ, मैं ही हूँ।"

"कोड नम्बर बताओ ?'

"खुदा पर एतबार रखो।" मैंने परिचय के लिये बताया गया वाक्य कह दिया।

"खुदा उनकी मदद करता है जो अपनी मदद आप करते है।" दीदी का उत्तर ठीक था।

"अच्छा, अब सबसे पहले मुझे वे सूचनायें बताओ जो तुम्हे मुक्ति-सेना के अफसरो के पास भेजनी हैं।"

रात मे मैंने जिन गुप्त कागजातो को देखा था, उनकी एक-एक सूचना मन की किताब मे दर्ज कर रखी थी। मैंने सभी बाते दीदी को बता दी।

"लेकिन तुम ये सूचनायें उन तक पहुचाओगी कैसे ?"

"यह जानना तेरा काम नही।"

"तुम्हे ये बदमाश अस्पताल से पकड कर यहाँ ले आये दीदी ! भइया और मैं, दोनो तुम्हारे लिये बहुत परेशान थे।"

"अरे ! कुछ पूछ न बहन ! ये बदमाश इन्सान नही हैवान है।" इन्होंने मेरे देखते-देखते सैकडो घायल और बीमार मरीजों को गोली मार दी। नर्सों को जबर्दस्ती हाथ पैर बांध कर यहाँ लाये। दिन भर हमसे कूडा उठवाने, मल मूत्र साफ करवाने का काम लेते हैं और रात मे हमे नहा धोकर वैश्या बनने के लिये मजबूर किया जाता है। जो लडकियाँ इनका हुक्म नही मानती उनके सभी अंगो मे सुइया चुभाई जाती हैं, हंटरों से पीटा जाता है और ऐसे-ऐसे कुकर्म करते कहते दीदी फफक-फफक कर रो पडी।

"रो मत दीदी ! तेरे एक-एक जुल्म का बदला न लिया, मेरा नाम मेहरुन्निसा नही। खुदा हमारे साथ है। वह इन गुनाहो को कभी माफ नही करेगा। अच्छा, यहाँ से भाग निकलने का कोई रास्ता है ?" मैंने दीदी के आँसू पोछते हुये प्रश्न किया।

"क्यों, क्या तुझे भी इन लोगों ने कैद कर लिया है ?"

"नहीं, मैं सिर्फ इसलिये पूछ रही थी कि अगर कभी अचानक भागना पड़ा

"इस घर के पिछवाड़े जो गली है उसमें बायें हाथ की तरफ एक फर्लांग जाने के बाद एक कच्चा नाला आता है, वह यहाँ से सीधा मुक्ति सेना के कैम्प की तरफ हो जाता है। लेकिन अब उसमें भी जगह-जगह बारूदी सुरंगें बिछा दी गयी हैं।"

"दीदी ! तुम रात बारह बजे यहाँ आ सकती हो। अगर आ सको तो हम दोनों उस नाले से भागने की कोशिश करें।"

"बारह बजे तो नहीं, हाँ साढ़े बारह बजे जरूर आने की कोशिश करूँगी वरना किसी से सन्देश भिजवा दूंगी।"

इतने में ही बाहर की कॉल बैल घनघना उठी। दीदी झट से बाहर निकल गई और मैं दरवाजा खोलने के लिये चल दी। दरवाजे के किवाड़ों में बाहर के आदमी को देखने के लिए एक गोल छेद बना था और उसमें शीशा लगा था।

एक क्षण को मैंने अपने मानसिक विचारों को बदल डाला। अब मुझे फिर से एक अमरीकन टूरिस्ट युवती का अभिनय करते हुये सिर्फ अंग्रेजी या टूटी फूटी उर्दू में बोलना था।

शीशे में आंख लगा कर मैंने बाहर खड़े दो आदमियों को देखा। उनमें से एक जिया खां था और दूसरा हमारे मोहल्ले का अधेड़ मुस्लिम लीगी नेता इदरीस। वह मुझसे परिचित था। मैं तत्काल सारी बातें समझ गई। इनके मतलब थे कि मेरे ऊपर शुरू से नजर रखी जा रही थी और अब इदरीस को मेरी शिनाख्त करने के लिये बुलवाया गया है। मेरा हाथ अपने आप हेयर पिन तक पहुँच चुका था। लेकिन क्या पिछवाड़े से भाग जाना ठीक नहीं रहेगा ? पर भाग कर जाऊँगी कहाँ ? ठीक है, फिलहाल मुझे अमरीकन युवती के पार्ट को ही अच्छी से अच्छी तरह निभाना चाहिये।

होठों पर मुस्कराहट लाते हुये मैंने दरवाजा खोल दिया।

"क्रिस्टीना! मेरे दोस्त इदरीस से मिलो। ये तुमसे मिलने के लिये बेताब हो रहे थे।"

"हलो! मिस्टर इदरीश! हाउ आर यू!" मैंने माथे पर आ जाने वाली बालों की लट को गरदन के झटके से पीछे फेंकते हुये कहा।

"हलो! क्रिस्टीना! गलेड टू मीट यू!" इदरीस ने अपनी आवाज में ज्यादा से ज्यादा मिठास घोलने की कोशिश की।

"अच्छा इदरीस! तुम इसकी मीठी बातों का मजा लो, मैं अभी अन्दर से जरूरी कागजात ले कर आता हूँ।" जिया खाँ ने उर्दू में कहा और तेज कदमों से अन्दर चला गया।

मैं मुस्कराते हुए इदरीस के सामने वाले सोफे पर बैठ गई। इदरीस मुझे बडे गौर से देख रहा था। उसके चेहरे पर कभी एक भाव आता और कभी दूसरा। अचानक वह उठ खड़ा हुआ और मेरे पास धीमे से उर्दू में बोला। "मेहरुन्निसा! तुम अंग्रेजी लिबास में इतनी खूब-सूरत लग सकती हो, मैंने ख्वाब में भी नहीं सोचा था। जिया खाँ का दिल तुमने खुश कर दिया अब मेरा पहलू भी गर्म कर दो।"

मैंने बिना डरे अंग्रेजी में कहा "मेरुन्निसा! व्हाट आर यू टाकिंग? आइ डॉन्ट अन्डरस्टैण्ड उर्दू।"

"अब यह नाटक बंद करो। एक घंटे बाद रन्दे नाले के पास वाले बाग में जरूर मिलना वरना तुम्हारा सारा भेद खोल दूंगा।"

"क्यों! इदरीस! कैसी लगी तुम्हें मेरी नयी गर्ल फ्रेण्ड?" जिया खाँ ने कमरे में प्रवेश करते हुए पूछा।

"डेजरमली ब्यूटीफुल।"

वे दोनों हँसते हुए बाहर जाने लगे। जिया खाँ ने मेरी ओर मुड़ कर कहा "रसोई में मास मछली के टिन रखे हैं, फ्रिज में ब्रेड और बियर वगैरह है। खाने पीने में संकोच न करना। इसे अपना ही घर समझना!"

कार के चले जाने की आवाज सुनने के बाद मैं धम्म से सोफे पर गिर पडी। मेरा भेद खुल चुका था और मौत के खूनी पजे मुझे चारो तरफ से घेरने लगे थे। जो होगा, देखा जायेगा। मैं रसोई मे पहुँच कर मांस, मछली पर हाथ साफ करने लगी। फ्रिज खोल कर वियर की बोतल निकाली। मांस मछली के खाने के साथ बियर का अपना अलग मजा होता है।

घोर सकट के समय खाने-पीने से आदमी का मानसिक तनाव कुछ कम हो जाता है। उसे नये-नये ख्याल सूझने लगते हैं। एक घटे बाद मिलने वाले बगाल के विभीषण मुस्लिम लीगी इदरीस को मैं अपने रूप जाल मे फांस कर परास्त करने की योजना बनाने लगी।

जब स्त्री का शत्रु पुरुष हो और शत्रु होते हुए भी वह स्त्री के यौवन पान का प्यासा हो जाय तब उसे परास्त करने मे अधिक समय नही लगता।

परन्तु एक घटे बाद जब मैं इदरीस द्वारा निर्देशित स्थान पर पहुँची, मेरा दिल अन्दर ही अन्दर कांप रहा था।

इदरीस बाग के मुख्य द्वार के पास खडा सिगरेट पी रहा था। मुझे देखते ही वह मेरी ओर लपका। मेरी कलाई थामते हुए उसने धीमे से कहा "मुझे पूरा यकीन था कि तुम जरूर आओगी। अमरीकन हिप्पी लडकी की नकल करने मे तुमने कमाल कर दिया। एक मिनट के लिए मैं भी धोखे मे पड गया, लेकिन गौर से देखने पर मैं तुम्हारी असलियत समझ गया। तुमने बडा अच्छा किया कि मुझसे मिलने चली आई। मैं तुम्हारी रिपोर्ट करने के लिए जाने वाला था। तुम अच्छी तरह जानती हो कि पाकिस्तानी जासूस कितने जालिम होते हैं। उन्हें जैसे ही यह पता चलता कि तुम्हारा भाई मुक्ति सेना मे है, वे तुम्हारी खाल तक उतार लेते।"

"इदरीस! तुम्हे पता होगा कि मैं अनाथ हो चुकी हूँ। पाकिस्तानी फौज ने मेरे पूरे परिवार को मार डाला है। भइया और दीदी का पता

नही है । मैं पाकिस्तानी फौजियो से बचने के लिए भागती फिर रही थी कि सडक पर मुझे एक विदेशी मिल गया । उसी की मार्फत मैं जिया-खा के पास तक पहुँची । जिया खाँ मुझसे प्यार करने लगा है । वह मुझसे शादी करना चाहता है । मेहरबानी करके तुम मेरी जिन्दगी बर्बाद न करो । जिया खाँ के साथ घर गृहस्थी बसा कर मैं सुख से रहूँगी । मुझे राजनीति और पूरब-पश्चिम के झगडो मे नही फँसना ।"

इदरीस मेरी बात सुन कर जोर से हँस पडा फिर उसने कहा "इस तरह टहलते हुए बातचीत करना ठीक नही । आओ ! हम उस झाडी के पास बैठ कर इत्मीनान से बाते करे । मुझे तुमसे एक बहुत जरूरी बात करनी है ।"

हम उस झाडी के पास पहुँचे । वह काफी बडी और घनी झाडी थी एक झाडी के अन्दर बैंच पडी हुई थी । इदरीस ने मेरा हाथ पकड कर बैंच पर बैठा दिया । मेरी बगल मे बैठते हुए वह बोला "जानती हो मैं क्यो हँसा था । जिया खा शादीशुदा है । दो बीवियाँ और चार बच्चे पहले ही है उसके । वह हर रात किसी नयी लडकी से प्यार करने का आदी है । वह तुमको किसी बहुत बडे अमरीकी रईस की लाडली लडकी समझता है । वह बेवकूफ तुम्हारी जायदाद हडप करने के ख्वाब देख रहा है ।"

मैंने अदाजा लगाया कि या तो इदरीस मुझे अपनी मोहब्बत मे फाँसने का जाल बुन रहा है या सचमुच जिया खाँ ने अपनी डींग हाँकने के लिए उससे मेरे बारे मे तरह तरह की बात कही हैं । इदरीस के बर्ताव से साफ जाहिर था कि वह पाकिस्तानियो के लिए जासूसी कर रहा है । उसे अपना दुश्मन न बना कर दोस्त बनाना ज्यादा बेहतर था ।

"उफ ! इतना बडा धोखा ! हाय ! मैंने कभी

'ये पश्चिमी पाकिस्तानी होते ही धोखेबाज और बदमाश है' । मुझे मुक्ति सेना की खबर देने पर पाँच हजार रुपये देने का वायदा किया था

मार साले ने केवल दो हजार टिपाये।"

"लेकिन मैं कही की न रही। मैं बेसहारा कहाँ जाऊँ?" रो पड़ी मैं।

"तू फिक्र न कर। मैं तुझने, न जाने कब से, दिल ही दिल मे मोहब्बत करता रहा हूँ। आज खुदा ने मेरी आरजू पूरी करने का मौका दिया है। तू हाँ कर दे, मैं कल ही तेरे साथ निकाह कर लूँ। इस वक्त मुझे सरकार से हजार रुपये महीने तन्ख्वाह मिल रही है। फौजी हुकूमत ने मुझे मिनिस्टर तक बनाने का वायदा किया है।" इदरीस ने मेरे आँसू पोंछते हुए कहा।

"तुम सच कह रहे हो? कहीं तुम भी धोखा न देना।"

"खुदा की कसम! मेरी जान!" कहते हुए उसने मुझे अपने आलिंगन मे जकड, कपोलो पर चुम्बन की मोहर लगा दी। पता नही मुझे क्या हुआ? यन्त्र चालित से मेरे हाथ बालो पर पहुँचे और मैंने जहरीली हेयरपिन का लाल नुकीला सिरा इदरीस की पीठ में पूरी ताकत से घोंप दिये।

"ओह! किसी कीडे ने काट खाया· मेरी पीठ मे उफ! मेरे दिल को हाय! मै मेरा· दम· मै· इतनी जल्दी मेहरू तू मैं हाय! कहते कहते वह कटे वृक्ष की तरह नीचे गिरा पर मैंने उसे सम्भाल लिया।

उसे मौत के दर्द से छटपटाते हुए देख कर मुझे बहुत खुशी हो रही थी। बंगाल का वह मीरजाफर जितना तडप रहा था मेरे दिल मे उतनी ही ठण्डक पड रही थी। मैंने अपने मां, बाबा और दादा का पूरे बंगाला देश का कम से कम एक आदमी से बदला ले लिया था।

मैंने उसकी लाश को सावधानी से खींच एक तरफ करवट देकर ऐसे लिटा दिया मानो वह सो रहा हो। फिर उसके जेब से रुमाल निकाल कर उसके चेहरे को ढांक दिया। झाडी से निकल कर चारो तरफ देखा आस पास कही कोई दिखायी नही पडा। मैं धीमे-धीमे कदम

बढाती हुई बाग के पिछले गेट की तरफ बढने लगी। मैंने अपनी घबडाहट काबू पाने के लिए लम्बी लम्बी सासे खीची।

बाग ज्यादा बडा नही था। कही-कही दो चार स्त्री-पुरुष वृक्षो की छाया मे बैठे या लेटे हुए थे। मैं गेट से बाहर निकल कर जैसे ही आगे बढी एक पाकिस्तानी फौजी ने मुझे रोकते हुए पूछा "आप यहाँ किसके घर आई हैं और इधर क्यो घूम रही हैं?"

"अप उर्दू नाई जानटा। अमेरिकन है। आय अम अमेरिकन। गेस्ट ऑफ मेजर जिया खाँ।"

जिया खाँ का नाम सुनते ही उसने मुझे सलाम किया। मैंने मुस्कराते हुए सिर झुका कर उसके सलाम का जवाब दिया और आगे बढ गयी। उसी वक्त दूर पर मशीनगनो और तोपो के चलने की गड़-गडाहट सुनाई दी। फौजी दौडकर मेरे पास आया।

"मेम साब! गो होम एटवन्स! दे हेव अटैक्ड द कैन्टूनमेन्ट।"

(मेम साब! फौरन घर जाइए। उन्होने कैन्टूनमैन्ट पर हमला कर दिया है।)

मैं जिया खाँ के बगले की तरफ दौड पडी। मुक्ति सेना द्वारा कैन्टा-मैन्ट पर हमला करने की खबर से मुझे बहुत खुशी हुई। बगले पर पहुँच कर मैंने दरवाजे बन्द कर लिए और आगे के कार्यक्रम पर विचार करने लगी।

तोपो के गोलो और मोर्टारो की गूज अब भी [illegible] रही थी। मैंने खिडकी खोल कर बाहर देखा। कैन्टोनमेन्ट [illegible] से आग की लपटें उठ रही थी। मेरा मन बच्चो की तरह ताली [illegible] बजा कर नाचने को हो रहा था। आकाश मे दो पाकिस्तानी [illegible] जहाज उडते हुए किसी अनजान दिशा की ओर चले जा रहे [illegible]। लगभग पाँच मिनट बाद मशीनगनो के चलने और बमो के [illegible] खिडकियाँ तथा दरवाजे कापने लगे। जाहिर था कि मुक्ति [illegible] टुकडियो पर जहाजो से आग बरसायी जा रही थी। [illegible]

गोलियो की आवाजें धीमी पडते हुए शात हो गई। मुझे यह शाति बहुत अखरी।

कहाँ सोच रही थी कि मुक्ति सेना जब कैन्टूनमैन्ट और हवाई अड्डे पर कब्जा कर लेगी, हम चगेज खाँ की इन सन्तानो को जेल मे बन्द कर मुकदमे चलायेंगे, इन्होने हैवानियत से भरी जो हरकते की हैं उनका जवाब तलब करेंगे, लेकिन हो गया बिलकुल उलटा। बेचारे स्वतन्त्रता के दीवाने खुद ही बमो और मशीनगनो का शिकार बन गए।

रात नौ बजे जिया खाँ बगले पर वापिस लौटा। इस बीच मैं उसके घर को अच्छी तरह तलाशी ले चुकी थी। तलाशी मे मुझे सिर्फ एक महत्वपूर्ण कागज मिला था। उसमे मुस्लिम लीग के उन नेताओ और सदस्यो के नाम लिखे थे जिन्होंने याहया खाँ की सरकार को गुप्त रूप से सहायता देने का वचन दिया था। ऐसे सात लोग थे। पाक गुप्तचर विभाग ने उनको अपनी तरफ मिलाने के लिए एक लाख रुपये खर्च किए थे।

मैंने उन सबके नाम और पते मन मे रट लिए थे।

जिया खाँ जैसे ही ड्राइग रूम मे दाखिल हुआ, देर से आने के लिए माफी मागने लगा। मैं पांच मिनट तक मुंह फुलाए चुपचाप अग्रेजी उपन्यास पर नजरें टिकाए बैठी रही। जब वह खुशामदें और मिन्नतें करके हार गया, मैंने गुस्से से कहा "क्या तुम्हारे मुल्क मे इस तरह अपने मेहमान की खातिर की जाती है कि उसे घर मे छोड जाओ और खुद बाहर ऐश मारते फिरो। तुम मुझ से कितनी मोहब्बत करते हो यह मैंने आज अच्छी तरह महसूस कर लिया।"

"मेरी पूरी बात सुन लो। अगर फिर भी तसल्ली न हो, जितना चाहो नाराज हो लेना।"

अच्छा सुनाओ।" और मैं सोचने लगी कि कितना अच्छा होता कि जिया खा मेजर न हो कर सिर्फ एक इसान होता ? उस वक्त इसकी यह मनुहार मुझे कितना पुलकित कर देती, कितनी खुशियो से भर

देती !

"हम लोग इस लड़ाई के बारे में एक जरूरी मीटिंग कर रहे थे कि मेरे जासूसों ने रिपोर्ट दी कि बंगाली फौजों और जनता ने कैन्टूनमैन्ट एरिया को चारों तरफ से घेर लिया है। हमारी फौजों से छीनी गई भारी तोपें भी उनके पास हैं। वहाँ बैठे सभी फौजी अफसर सकते में आ गए। एक की तो वहीं पैन्ट खराब हो गई और दूसरे बाथरूम की तरफ भागे। दो अफसर वहीं बैठे बैठे बेहोश हो गए। जनरल ने उन चारों को उसी वक्त सस्पेण्ड कर दिया। जनरल ने मुझे हुक्म दिया कि जाओ हवाई जहाज से जाकर पूरे हालात का ठीक ठीक जायजा लेकर आओ। मैं सेल्यूट मार कर शान से चल दिया और मेरे बड़े अफसर मुंह बाये मुझे देखते रह गए।

मैंने जहाज पर बैठे हुए दूरबीन से देखा कि हर तरफ दो तीन सौ से ज्यादा बंगाली नहीं थे। वे सब के सब अनाड़ी मालूम पड़ते थे। उन्हें युद्ध कला की जरा भी तमीज नहीं थी। उनके पास फौज से छीनी हुई दो तीन भारी तोपें, कुछ मशीनगनें और राइफलें थीं।

मैंने वापिस आकर जनरल को पूरी स्थिति समझाई। वे ज्यादा से ज्यादा सात-आठ सौ होंगे जबकि हमारे पास उस वक्त भी कम से कम दो हजार प्रशिक्षित सैनिक हैं। जनरल ने विद्रोहियों पर भारी तोपों और राकेटों से हमला करने का हुक्म दिया। बड़ी घमासान लड़ाई हुई पर वे साले बजाय पीछे हटने के आगे बढ़ते आए। तब हमने हवाई जहाजों से उन पर बम गिराए और मशीनगनों से गोलियों की बौछार की। कुछ ही घन्टों बाद उनकी हिम्मत पस्त हो गयी और वे भाग खड़े हुए। आज सुबह से जनरल बहुत खुश था।"

"माई गॉड! मैं तुम लोगों की इन लड़ाइयों से आजिज आ गई हूँ। तुम्हारे मुल्क में मानसिक शान्ति पाने की गरज से आई थी पर देखती हूँ कि तुमने पूर्व बंगाल को दूसरा वियतनाम बना या इससे ज्यादा कर दिया है। क्या तुम लोग डेमोक्रेटिक और शान्तिप्रिय नागरिक से [illegible]

प्राब्लम्स हल नही कर सकते।'

"या खुदा! धीमे बोलो धीमे। किसी ने सुन लिया, मेरी नौकरी चली जाएगी और तुम्हें यहाँ से निकाल दिया जाएगा।

"तुम ने खाना खा लिया?"

"हाँ, खा लिया और तुमने?"

"मुझे अपने अफसर के साथ खाना पडा। चलो तुम्हें रात्रि क्लब मे ले चलूं, तबियत बहल जायेगी।" उसने शराब का एक जाम मुझे पिलाया और एक खुद पिया।

वह मेरे हाथ मे हाथ डाले बाहर आया। दरवाजा खोल कर मुझे कार मे बैठाया और गाडी ड्राइव करने लगा।

"पता नही इदरीस को क्या हो गया है? उसने शाम छै बजे एक बहुत जरूरी खबर देने का वायदा किया था। बगले पर तो नही आया?"

"घर पर एक गन्दी बदसूरत लडकी को छोड और कोई नही आया।" मैंने खिडकी मे बाहर देखते हुए कहा।

"मारो गोली साले इदरीस को। सब बगाली कमीने होते हैं। डार्लिग! मैं तुम्हे ऐसे रात्रि क्लब मे ले जा रहा हूँ जिसमे सिर्फ पाकिस्तानी फौजी अफसर और उनके घर के लोग ही जा सकते हैं। वहाँ तुम चुप बैठी रहना। तुम्हारा अंग्रेजी का अमरीकी उच्चारण सुन कर उन्हे शक हो सकता है।"

"तुम्हारे कान मे तो कुछ कह सकती हूँ।" मैंने सटते हुए कहा। उसने बडी फुर्ती से मेरा चुम्बन लिया और हस पडा।

"शैतान!" मैंने भी मुस्कराने की कोशिश की।

इस रहस्यमय क्लब मे पहुँच कर मैंने देखा कि वहाँ गोलाकार मे आराम कुर्सियाँ पडी हैं। लोग बैठे हुए शराब पी रहे हैं। बीच मे एक मच है।

जिया खां मुझे लेकर सामने वाली कुर्सियो पर बैठ गया और एक

बोतल शराब लाने का आर्डर दिया। मैंने पीने से इन्कार कर दिया। लेकिन जब उसने बहुत कहा तो एक पैग ले लिया और धीमे धीमे सिप करने लगी।

तभी डास फ्लोर पर रगीन रोशनियाँ चमक उठी और अग्रेजी नृत्य का रिकॉर्ड गूजने लगा। दस बगाली लडकियाँ मच पर आकर नाचने लगी। उन्हे देखते ही मैं समझ गयी कि वे फौजियो द्वारा पकड कर लाई जाने वाली युवतियाँ है।

हर्ष और उत्साह हीन उनका नृत्य मृत्यु पूर्व की पीडा से छटपटाती नारियो की तडफडाहट सा कारुणिक प्रतीत हो रहा था। रो रोकर रीती हो जाने वाली आँखे आशका से फैली हुई थी। चेहरो पर पोती गई मेकअप की पर्ते अश्रुधाराओ के शेष चिन्हो को छिपाने मे जितनी सफल हो गई थी, उतनी ही उभर कर उजागर हो रही थी उन चेहरो के पीछे छिपी वेदना। बेचारे मूर्ख फौजी अफसर! वे नही जानते कि विज्ञान ने अभी तक कोई ऐसा प्रसाधन बनाने मे सफलता नही पाई है जो इन्सान के हृदय मे हाहाकार मचाती भावनाओ को हमेशा के लिए दबा सके। अगर ऐसा होता, तानाशाह हिटलर और मुसोलिनी को बेमौत नही मरना पडता।

"स्ट्रिपटीज दिखाओ!"

"कपडे उतारते हुए नाच दिखाओ!"

फौजी अफसर नशे मे चीखने लगे। कुछ ने [illegible] गालियाँ भी दी जिन्हे सुन कर शेष लोग [illegible] हसने लगे। सच कहती हूँ, अगर उस वक्त मेरे पास मशीनगन होती, मैं उन सब फौजी अफसरो की जान उतार देती।

वे नाचते हुए धीरे धीरे अपने वस्त्र उतारती जा रही थी और फौजी माँ-बहन की गालियाँ देते हुए उनके अंग-प्रत्यंगो की [illegible] वीभत्स चित्रण कर रहे थे। तभी मेरी दृष्टि अपनी [illegible] एक सुन्दर युवती पर पडी। हे खुदा! दीदी! मैं [illegible]

कही कोई सिपाही मशीनगन लिए खडा हो तो मैं उससे छीन कर इन सब गुण्डो को ·। लेकिन पास खडे थे सिर्फ लगोट पहने चार बलिष्ठ व्यक्ति जिनके हाथो मे बेंत और हटर वगैरह थे। उफ! बेचारी दीदी, को, किन्तु क्या ये अन्य युवतियाँ भी किसी की दीदी, किसी की बहन, किसी की बेटी और किसी की प्रेमिका नही। काश! एक मशीनगन होती। मैं खुद मर कर भी इनकी लाज बचाने की कोशिश करती,··· ··

उनमे से दो नवयुवतियो को अपने कपडे उतारने मे सकोच करते देखकर एक अफसर उठ कर मच पर गया उसने उनका एक एक कपडा बेदर्दी से फाड कर उतार डाला। क्लब मे बैठे हैवान उस अफसर की तारीफ करते हुए हसने लगे। उन लोगो की हसी सुन मुझे अपने गाँव मे अर्ध रात्रि को हसते उल्लू की याद हो आई।

अफसर को ज्यादा जोश आ गया। उसने उन दोनो नवयुवतियो के एक एक कोमल उरोज को पकड इतनी जोर से मसला कि वे चीखें मारने लगी। इसके बाद अन्य पाकिस्तानी अफसर उन लडकियो पर इस बुरी तरह टूट पडे कि उसका जिक्र न करना ही बेहतर रहेगा। हॉल मे अधेरा कर दिया गया। घायल हिरणियो और हलाल की जाती गायो की हृदय विदारक चीत्कारो की तरह उन बेबस युवतियो की करुण आवाजें उस अधेरे को चीर कर जैसे सब कुछ उजागर करने लगी।

जिया खाँ का हाथ मेरी जाघ पर ऊपर सरकता जा रहा था। उनके हाथ का स्पर्श मुझे किसी विषधर की तरह भयानक लगा।

"मैं अब और कुछ नही देखना चाहती, जल्दी यहाँ से चलो।"

"इतनी जल्दी है तो यही तुम्हारी खिदमत शुरू कर दू।"

"नानसेन्स! सीधे-सीधे चलते हो कि मैं खुद ही चली जाऊँ।" मेरा स्वर उत्तेजना से काप रहा था।

अचानक हॉल मे रोशनी हो गयी। पाशविक बलात्कार का सामूहिक दृश्य देख मैंने अपनी आँखो को हथेलियो से ढक लिया।

"अरे! तुम इतने से ही घबडा गई। वह देखो जानवरो की तरह

हाथ और पैरो के बल आ रही युवतियो को। उनके पीछे जो आ रही हैं उनके हाथ सिर के पीछे बंधे हैं।"

"बस बस चलो! मैं ज्यादा बर्दाश्त नही कर सकती।" जिया खाँ ने बची हुई शराब एक बार मे पूरी चढा ली।

"तुम नही मानती तो चलो! तुमने सारा मजा किरकिरा कर दिया। मैं तुम्हे बडा प्रॉग्रेसिव समझ रहा था। तुम बिलकुल हिन्दुस्तानी लडकियो की तरह हो।"

अन्तिम वाक्य ने मुझे सावधान कर दिया। उसके कान मे कहा "बगले पर चल कर बताऊँगी कि मै अमेरिकन लडकी हूँ या हिन्दुस्तानी? आज देखती हूँ तुम मे कितनी शक्ति है?' इसके साथ ही मैंने मुस्कराने का असफल प्रयास किया।

मेरी चुनौती सुन कर वह हँस पडा।

"अच्छा! आज डार्लिंग तुम्हे भी पता चल जाएगा कि किससे मुकाबला पडा है?"

वह मुझे कार मे बैठा कर अपने बगले चल दिया।

"देखा! कितना सैक्सी शो था? ये सब बगाली छोकरियाँ है। हम इन्हें इतना छका देना चाहते है कि बगालियो की सात पुश्तें तक पाकिस्तान के खिलाफ सोचने की जुर्रत न कर। इन्हें कभी मुर्गी बनाया जाता है तो कभी घोडी। आफीसर ज्यादा है और छोकरियाँ हैं कम सी। कल रात शो के दौरान दो लडकियों की जान निकल गई। सुना है बडी हसीन थीं। जो देखो वही उनकी जवानी [illegible]

शराब के नशे मे वह इतनी गन्दी गन्दी बात उस शो [illegible] बताए जा रहा था कि मेरे शरीर का एक एक रोम खडा हो गया।

जब हम बगले के [illegible] रूम मे दाखिल हुए उसने मुझे अपनी भुजाओं मे जकड कर बेरहमी से दाबना शुरू कर दिया।

"ओह मरी! मुझे कपडे उतार

वह वहशियों की तरह हँसते हुए बोला "बस! [illegible]

निकलने लगी। मैं बिना प्यास बुझाए तुम्हें छोड़ने वाला नही। हाँ, कपड़े उतार लो। तुम दूसरी जोड़ी फ्रॉक नही लाई

उसके वसन ढीले पड़े कि मैंने फुर्ती से जहरीली पिन उसकी पीठ मे चुभो दी।

"ओह! या खुदा! ये तुमने क्या नोच लिया ओह मैं और वह मुझे छोड़ कर अपने दिल को थाम कर बैठ गया।

मैंने उसे उठा कर पास पड़े दीवान पर लिटा दिया। कलाई घड़ी मे साढ़े ग्यारह बज रहे थे। मेरे पास एक घंटा शेष था। उसकी जेब टटोलने पर मुझे एक डायरी और पर्स मिला। डायरी और पर्स के रुपए मैंने अपने ब्लाउज मे छिपा लिए।

एक बार फिर से घर की तलाशी लेने से पहले मैंने जिया खाँ की लाश को चादर से ढाँक कर इस प्रकार लिटा दिया मानो वह सो रहा हो। इसके बाद मैं बड़ी बारीकी से घर की एक एक चीज को देखने और टटोलने लगी। बेड रूम मे रखी लिखने वाली मेज की दराज मे एक रिवाल्वर और कुछ गोलियां पाकर मैं बहुत खुश हुई। ड्रेसिंग टेबिल मे मैंने एक गुप्त खाने को खोज निकाला। उसमे एक पॉकेट डायरी रखी थी जिसमे आवामी लीग के सभी प्रमुख नेताओ और उनके नजदीकी रिश्तेदारो के नाम नोट थे।

घड़ी ने साढ़े बारह बजाए। मैं बगले के पिछले दरवाजे की तरफ चल दी। उसी समय बाहर बिल्ली की म्याऊँ सुनाई पड़ी। दीदी के गुप्त संकेत को सुन मैंने धीरे से दरवाजा खोला।

"हाथ ऊपर उठाओ! वरना गोली मार दूंगा।" मेरे सीने पर रिवाल्वर की नली लगाते हुए एक पुरुष कंठ ने धीमी आवाज मे आदेश दिया।

अपने ही जाल मे खुद फंस जाने पर मुझे आश्चर्य और दुख दोनो हुये। मैंने हाथ ऊपर उठाते हुए अंग्रेजी मे कहा "मैं अमरीकन हूं। मैंने अभी किसी का नुकसान नही किया। तुम क्या चाहते हो?"

"तुम्हारा भेद खुल चुका है मेहरुन्निसा ! इदरीस तुमसे मिलने से पहले एक कागज मे सब कुछ लिख कर रख गया था। हमे उसकी लाश और खत दोनो मिल चुके हैं। तुम्हारा ड्रामा ।

तभी किसी ने उसके सिर पर जोर से प्रहार किया। वह धडाम से जमीन पर गिर पडा।

"बहन जल्दी चलो !" मुझे मृत्यु से बचाने वाली दीदी ने कहा।

"पहले तुम्हारी बेडियाँ काट दूं।"

"उन्हे आगा खाँ ने पहले ही काट दिया है।"

मैं दीदी के साथ सावधानी से इधर उधर देखती हुई चल दी।

"मैंने यहाँ आकर जैसे ही म्याऊँ-म्याऊँ की, यह जासूस न जाने कहाँ से आ टपका। मैं दिवार से सट कर बैठ गई। अंधेरे मे वह मुझे देख नही पाया।" मैंने उसकी कलाई दबा कर चुप रहने का सकेत किया। फौजी बूटों की आवाज सुन हम दीवार से सट कर बैठ गईं।

दो फौजी सामने वाली सडक से निकल गए।

हम सावधानी के साथ आगे बढते हुए सामने वाली सडक पार कर बाग के पिछले भाग मे पहुँच गए। गंदा नाला उसके समीप बह रहा था। नाले की बदबू भी उस समय संसार की सुगन्धि से [illegible] से ज्यादा भली लगी और ऐसा होता भी क्यों न ? उस बदबू और गंदगी से भरे नाले मे हमारी मुक्ति का रहस्य जो छिपा था। दीदी ने उल्लू की आवाज मे किसी को संकेत दिया। पास की झाडियों मे सरसराहट हुई एक लम्बे चौडे पुरुष की छाया हमारे पास आकर फुसफुसाई "कुछ मिनट रुको, आग को जोर पकडने दो।" उसने नाले की विपरीत दिशा की ओर संकेत किया। देखते ही देखते उस तरफ आग की लपटें [illegible] होती गयीं और पूरा क्षितिज लाल हो गया।

मैं आगा खाँ की चतुरता का लोहा मान गयी। पहरेदारों [illegible] नाले की तरफ से हटाने के लिए उसने आग लगाई। [illegible] सोची।

हम तीनो नाले के पानी मे धीरे से उतर गए। गदा बदबूदार पानी घुटनो तक आ गया। आगा धीमे से बोला, "यहाँ बारूदी सुरगे डालने का काम मुझे ही सौंपा गया था। यहां से ठीक हर पचास कदम के बाद पानी के अन्दर बारूदी सुरगे मिलेंगी। मैंने ऐसी जगहो पर डोरियो मे कपडे की लाल पट्टियां बांध दी हैं। उन्हें ऊपर से पानी मे तैरता हुआ देखा जा सकता है।" उसके पास फाउन्टेनपेन नुमा एक जेबी टॉर्च थी। हर पचास कदम बाद वह सावधानी से टॉर्च जला कर लाल पट्टियो को देख लेता और हमे उनसे बचा कर आगे निकाल लेता।

हम बहुत सावधानी के साथ कदम बढाते हुए नाले मे आगे बढ रहे थे। कई बार मेरा पैर नाले मे तैरती हुई लाशो से टकराया और मैं अपनी चीख बडी मुश्किल से रोक पाई। ये लाशें पता नहीं किन बगाली स्त्री-पुरुषो की थी? उन्होंने अपनी जिन्दगी मे खुशियो भरे न जाने कितने सपने देखे होंगे, लेकिन नापाक खूनियो ने उनकी आशाओ और आकांक्षाओं को असमय ही नेस्तनाबूत कर दिया।

"सभल कर, आगे सुरग है।"

हम तीनो ने पानी के अन्दर पडी उस मारक सुरग से बचते हुए अपने कदम आगे बढाए और मैं सोचने लगी कि देखो एक पठान यह है जो अपनी जान हथेली पर रखकर बांगला देश के मुक्ति सग्राम मे मदद कर रहा है, दूसरे वे पठान सिपाही हैं जो चन्द चांदी के टुकडो के लिए पुराने प्यार के उसूलो को रौंदने वाले पाकिस्तानी दरिंदो की नापाक साजिशो के मोहरे बने हुए हैं। क्या वे भूल गये उन जुल्मो और सितमो से भरे कारनामो को जो पाकिस्तानी सरकार ने पठानो पर ढाए थे।

अल्ला ताला को याद करते हुए हम जैसे-तैसे नाले के आखिरी हिस्से तक पहुचे। अब खतरा बहुत बढ चुका था, क्योंकि नाले के दोनो तरफ दो पहरेदार मशीनगन लिए हमेशा तैनात रहते थे। आगा खां ने हमे झुक जाने का इशारा किया। अब हम चौपायो की तरह पानी मे आगे

बढ़ने लगे। सड़ा बदबूदार गंदा पानी हमारे चेहरो को छू रहा था पर उस वक्त सिर्फ जान बचाने की फिक्र थी।

बिजली की दो बड़ी-बड़ी फ्लैश लाइटे पेड़ो पर इस तरह लगी थी कि उनकी रोशनी मे नाले और उसके आसपास का अधिकांश भाग साफ-साफ नजर आता था। हम रोशनी से बचने के लिए नाले की दीवार से सटकर आगे कदम बढ़ाने लगे।

हमे पहरेदारो की आपसी बातचीत तक सुनाई दे रही थी। वे दूर पर जलने वाली आग के बारे मे तरह-तरह के अनुमान लगा रहे थे। वे डरे हुए थे और उनका विचार था कि मुक्ति सेना ने कैन्टूनमैन्ट पर हमला कर दिया है।

हम कैन्टूनमैन्ट एरिया से बाहर निकलने मे कामयाब हो गए। आगा खाँ ने हम दोनो को सलाम किया और वापिस चल दिया। पूरे कैन्टूनमैन्ट मे वही एक आदमी था जो मुक्ति सेना के लिए जासूसी कर रहा था। वह हमारे साथ आकर बहुत बड़े खतरे से खेल सकता था। लेकिन अपने कर्तव्य के सामने उसे खतरो की चिन्ता नही थी।

अब हम दोनो बहन अपने-अपने हाथो मे रिवाल्वर पकड़े आगे बढ़ रही थी। बारूदी सुरंगो और पहरेदारो का खतरा खत्म हो चुका था। लेकिन फिर भी बजाय ऊपर की सूखी जमीन पर चलने के हमने नाले के रास्ते से आगे बढ़ने मे ज्यादा सुरक्षा समझी। अभी हम मुक्ति सेना के कैम्प मे पहुँचने के लिए कम से कम आधा मील का रास्ता तय करना था।

"ओह! मेरी टाग मे जोक चिपक गई है। कमबख्त छूटती ही नही।" दीदी के स्वर मे परेशानी थी।

"रुको! मै छुड़ाने की कोशिश करूँ।" मैने कहा।

"नहीं रहने दो। जल्दी से आगे बढ़ो। उन हत्यारो के जालिम हाथो से इस जोक के पास रहना ज्यादा मुनासिब है।"

ठ ठ ठ ठा य ठ ठ ठ ठाय! गन मशीनो की आवाजे सुनाई पड़ी। इसके साथ ही जोर का विस्फोट हुआ।

"बेचारा आगा ! खूनियो ने उसे मार डाला ।" दीदी के स्वर मे अथाह वेदना थी ।

"खुदा ! उनकी रूह को शान्ति दे । अगर वह नही होता, हम बच कर निकल नही पाती ।"

हम दोनो ने मुडकर कैन्टूनमैन्ट की तरफ देखा । दो सिपाही नाले के ऊपर भागते हुए हमारी दिशा मे आ रहे थे ।

"भागो ! जल्दी करो ।"

हम दोनो पूरी ताकत से दौडते हुए पानी मे आगे बढने लगे । मुक्ति सेना का पडाव केवल एक फर्लांग रह गया था पर पाकिस्तानी फौजी हमारे पीछे दौडते आ रहे थे । उनके पास टार्चे थी । वे उनके प्रकाश मे हमे खोजने की कोशिश कर रहे थे । शायद उन्होने हमे देख लिया था । वे गोलियां दागने लगे । हम नाले से सटकर दौडने लगी । तभी एक गोली दीदी के पेट मे लगी । "या खुदा !" उन्होने अपने पेट को एक हाथ से पकड लिया और दूसरे से रिवाल्वर चलाने लगी । मैंने भी अंदाजे से गोलियां चलानी शुरू कर दी । हम अब भी आगे बढ रही थी पर गति बहुत धीमी पड चुकी थी । गोलियो की आवाजें सुन मुक्ति सेना के कैम्प मे से कुछ लोग आगे बढकर पाकिस्तानियो पर गोलियां चलाने लगे । तभी दूसरी गोली दीदी की पीठ मे लगी ।

"तू भाग जा ! मैं उनको रोके रखूगी ।"

"नही दीदी ! मैं तुम्हे अपने साथ लेकर ही जाऊँगी ।"

"तुमने एक कदम भी

"मैंने दीदी को कंधो पर डाल लिया और डगमगाते कदमो से आगे बढने लगी ।

मैं कुछ कदम आगे रख पायी कि पानी मे गिर पडी । टॉर्च की रोशनी के गोल दायरे मे हम दोनो को किसी ने घेर लिया । मौत का सामना करने की हिम्मत बटोर कर उठ खडी हुई । मेरे रिवाल्वर से गोली निकलने ही वाली थी कि 'जय बांगला' के जोरदार नारे को सुन

घोडे पर कसी उगली ढीली पड गई ।

"जय बागला !" मैंने भी पूरे जोर से नारा लगाया । मुक्ति सेना के असार नाले मे उतर कर हमे बाहर निकाल लाए ।

कैम्प मे आकर अर्धमूर्छित दीदी ने अस्फुट स्वर मे कहा, " पानी पा ' नी ।'

उनकी पूरी सलवार और कुर्त्ता खून से लथपथ हो चुका था । मैं उन्हे पानी पिलाने के लिए झुकी । एक घूंट पानी उनके गले मे उतरा होगा कि "जय बाग ला !" के जयघोष के साथ उनकी गरदन एक ओर को झूल गई ।

मां, बाबा, और दादा को छीनने के बाद उन नापाक हैवानो ने मेरी प्यारी दीदी को भी मुझसे छीन लिया है, पर मैं रोऊँगी नही अब ? रोने के लिए आंखो मे आंसू ही कहां बचे है ? अब तो आंखो मे एक सूनी खूंखार प्यास है सिर्फ । पाकिस्तान के नापाक फौजियो का खून पी लेने की प्यास और जब तक मेरी एक सांस भी शेष है मैं उन जालिमो का सत्यानाश करने से बाज नही आऊँगी ।

× × ×

स्वतन्त्रता पाने की बलवती कामना और प्रतिशोध लेने का निश्चय आदमी मे कितनी शक्ति भर देता है, यह आज अनुभव कर पाती हूँ । दो दिन से खंदक मे बैठी दुश्मनो पर गोलियां दागती रही हूँ । एक पल को भी आंख नही लगी । युद्ध कितना भयानक, क्रूर और हृदयहीन होता है । आदमी जब आदमी का ही दुश्मन बन जाता है, तब वह जानवरो से भी ज्यादा खतरनाक और घृणित साबित होता है । मुझे युद्ध और रक्तपात से घृणा है पर दूसरो पर गुलामी का बोझ लादने वालो से इससे भी अधिक घृणा ।

शरीर का पोर-पोर थकान से टूटा जा रहा है । मैं ढाका से [illegible] गांव मे आ गई हूँ । स्वतन्त्रता संग्राम पूरे चरम पर है । हम पाकिस्तानी फौजो के सामने डटे रहे हैं । हमने कई स्थानो से उनको पीछे [illegible]

दिया है।

घटनाओं को विस्तार से फिर लिखूंगी। नींद के जोर से सिर घूम रहा है और दिमाग में सिकन्दर अबू जफर की दहकती हुई कविता पंक्तियां गूंज रही हैं—

दियेछि तो शान्ति, आरो देबो स्वस्ति,
दियेछि तो सम्भ्रम, आरो देबो अस्थि,
प्रयोजन हले देबो एक नदी रक्त
होक ना पाथेर बाधा प्रस्तर शक्त
अविरान यात्रार चिर संघर्ष
एक दिन से पाहाड टलवेइ
चलवेई, चलवेई
आमादेर संग्राम चलवेई।
[दी तो है शान्ति, देंगे अब स्वस्ति भी,
दे चुके मान, देंगे अब (अपनी) हड्डियां भी।
जरूरत हुई तो नदी भर रक्त भी देंगे।
रास्ते की रुकावटों के पत्थर और सख्त हो लें। अविराम
यात्रा के चिर संघर्ष से एक दिन वह पहाड टलेगा ही।
चलेगा ही, चलेगा ही। हमारा यह संग्राम चलेगा ही।]

× × ×

जिंदगी अपने आप में कितने रहस्य छिपाये रहती है? कितनी ऊंचाइयों और रोमांचक गहराइयों में से होता हुआ गुजरता है जिन्दगी का कारवां? आज पूरे एक सप्ताह बाद डायरी लिखने का अवसर निकाल पायी हूं। यह अवसर भी इसलिए मिल सका क्योंकि मेरे बाए पैर में दुश्मन की गोलियों से कई जख्म हो गये। मैं ठीक से चल फिर नहीं सकती। मुझे युद्ध के मैदान से दूर इस अस्पताल में भेज दिया गया है।

यह अस्पताल, अपनी आजादी के लिये जूझने वाले मुक्ति सैनिकों का अस्पताल कुछ निराले ही ढंग का है। पान और सुपारी के सघन

घोडे पर कसी उगली ढीली पड गई।

"जय बागला!" मैंने भी पूरे जोर से नारा लगाया। मुक्ति सेना के असार नाले मे उतर कर हमे बाहर निकाल लाए।

कैम्प मे आकर अर्धमूर्छित दीदी ने अस्फुट स्वर मे कहा, " पानी पा' नी।"

उनकी पूरी सलवार और कुर्त्ता खून से लथपथ हो चुका था। मैं उन्हे पानी पिलाने के लिए झुकी। एक घूंट पानी उनके गले मे उतरा होगा कि "जय बाग ला!" के जयघोप के साथ उनकी गरदन एक ओर को झूल गई।

मां, बाबा, और दादा को छीनने के बाद उन नापाक हैवानो ने मेरी प्यारी दीदी को भी मुझसे छीन लिया है, पर मैं रोऊंगी नही अब ? रोने के लिए आंखो मे आंसू ही कहां बचे हैं ? अब तो आंखो मे एक सूनी खुखार प्यास है सिर्फ। पाकिस्तान के नापाक फौजियो का खून पी लेने की प्यास और जब तक मेरी एक सांस भी शेप है मैं उन जालिमो का सत्यानाश करने से बाज नहीं आऊंगी।

× × ×

स्वतन्त्रता पाने की बलवती कामना और प्रतिशोध लेने का निश्चय आदमी मे कितनी शक्ति फूक देता है, यह आज अनुभव कर पायी हूं। दो दिन से खदक मे बैठी दुश्मनो पर गोलियां दागती रही हूं। एक पल को भी आंख नही लगी। युद्ध कितना भयानक, क्रूर और हृदयहीन होता है। आदमी जब आदमी का ही दुश्मन बन जाता है, वह शेर चीतो से भी ज्यादा खतरनाक और खूनी साबित होता है। मुझे युद्ध और रक्तपात से घृणा है पर दूसरो पर गुलामी का बोझ लादने वालो से उससे भी अधिक घृणा।

शरीर का पोर-पोर थकान से टूटा जा रहा है। मैं ढाका से दूर इस गांव मे आ गई हूं। स्वतन्त्रता सग्राम पूरे चढाव पर है। हम पाकिस्तानी फौजो के सामने डटे रहे हैं। हमने कई स्थानो से उनको पीछे खदेड

दिया है।

घटनाओं को विस्तार से फिर लिखूंगी। नींद के जोर से सिर घूम रहा है और दिमाग में सिकन्दर अबू जफर की दहकती हुई कविता पंक्तियां गूंज रही हैं—

दियेछि तो शान्ति, आरो देबो स्वस्ति,
दियेछि तो सभ्रम, आरो देबो अस्थि,
प्रयोजन हले देबो एक नदी रक्त
होक ना पाथेर बाधा प्रस्तर शक्त
अविरान यात्रार चिर संघर्ष
एक दिन से पाहाड टलवेइ
चलवेई, चलवेई
आमादेर संग्राम चलवेई।
[दी तो है शान्ति, देंगे अब स्वस्ति भी,
दे चुके मान, देंगे अब (अपनी) हड्डियाँ भी।
जरूरत हुई तो नदी भर रक्त भी देंगे।
रास्ते की रुकावटों के पत्थर और सख्त हो लें। अविराम यात्रा के चिर संघर्ष से एक दिन वह पहाड़ टलेगा ही।
चलेगा ही, चलेगा ही। हमारा यह संग्राम चलेगा ही।]

× × ×

जिंदगी अपने आप में कितने रहस्य छिपाये रहती है? कितनी ऊँचाइयों और रोमांचक गहराइयों में से होता हुआ गुजरता है जिन्दगी का कारवाँ? आज पूरे एक सप्ताह बाद डायरी लिखने का अवसर निकाल पायी हूं। यह अवसर भी इसलिए मिल सका क्योंकि मेरे बाए पैर में दुश्मन की गोलियों से कई जख्म हो गये। मैं ठीक से चल फिर नहीं सकती। मुझे युद्ध के मैदान से दूर इस अस्पताल में भेज दिया गया है।

यह अस्पताल, अपनी आजादी के लिये जूझने वाले मुक्ति सैनिकों का अस्पताल कुछ निराले ही ढंग का है। पान और सुपारी के सघन

वृक्षो की छाया के नीचे करीव पचास विस्तर लगे हैं। केवल एक डाक्टर और दो नर्सें मरीजो की दवा-दारू का काम करने के लिए हैं। गाव के दस असार इस कार्य मे उनकी मदद करते हैं। घरेलू दवाइयो, टिंचर, डिटॉल और विक्स जैसी मामूली चीजो को छोड, इस अस्पताल मे विशेप कुछ नही। गांव के बूढे-बुजुर्ग यहां आकर जडी-बूटियो को घिस कर या जला कर, उसमे नारियल का तेल मिलवाते हैं और इस तरह वना मलहम गोलियो के घावो को भरने मे वडा उपयोगी सावित हुआ है।

गांव के कुओ, तालावो और नहरो का पानी सफाई के अभाव मे सडने लगा है। लोग उसे वैसा ही पी लेने के आदी हो गये हैं। हा, गांव वाले हमारे लिए घरो पर पानी को साफ करके उवाल लेते हैं और एक एक मटका हर मरीज के लिए भेज देते हैं।

हमारे बिस्तर लकडी के तख्तो के है और उन पर जूट का वोरा और चटाई विछी हुई है। मेरे पैर के जख्मो मे फिर से जलन होने लगी है। डाक्टर ने कल शाम पैर मे घुसी गोलियाँ चतुरता से निकाल दी थी वह मेरी वीरता और देश-भक्ति की सराहना करता जाता, लेकिन उसके हाथ मे थमी चिमटी गोली को पकडकर ऊपर निकालने के लिए प्रयत्न-शील रहती। मुझे वेहद तकलीफ हो रही थी। लगता था जैसे मेरे पैर के उस जख्म मे अगारे दहक रहे हो। अपनी पीडा को दवाने के लिए मैं एक कविता की पक्तियां धीमे-धीमे गुनगुनाने लगी—

आमार मायेर मुख
आमार मायेर भापा
आमार मायेर गान
एदेशेर माटीर पोरते पोरते
एदेशेर आकाशे वातासे वातासे
छुडिए आछे छिटिए आछे
आमादेर प्राणे प्राणे··· ·

(मेरी मा का मुख, मेरी माँ की भाषा, मेरी माँ के गीत इस देश की मिट्टी मे, पत्ते-पत्ते मे, बिखरे हैं, इस देश के आकाश मे, हवा मे, हमारे प्राणो मे, रक्त मे।)

"तुम सचमुच जितनी सुन्दर हो उससे कही अधिक मधुर गाती हो। लो, गोली भी निकल आयी।" वाक-पटु डाक्टर ने मुस्कराते हुए कहा और पट्टी बांधने लगा।

कविता की मिठास मेरे मन की गहराइयो मे बैठती चली गयी। डाक्टर की प्रोत्साहन पूर्ण वाणी ने उस मिठास मे जैसे गुलाब की सुगन्धित छिड़क दी। मैं सोचने लगी कि क्या कभी बेबी मौदूद ने इस कविता की रचना करते समय यह कल्पना की होगी कि एक दिन उनके शब्द गोली से घायल किसी स्वतन्त्रता सैनिक की पीडा को हरने का कार्य करेंगे।

और मुझे याद आने लगी है वह खूनी रात जब पाकिस्तानी हैवानो ने लोकप्रिय कवयित्री सूफिया कमाल को गोली से उडा दिया था। सूफिया कमाल ही क्यो, कोई भी प्रसिद्ध कवि, लेखक, लेखिका जिसने कभी भूल से बगाल की गरीब जनता के दर्द को स्वर दिया, उनके सगीनो की धार से बच न सका। लेकिन दुनियां भर की सगीनें, टैंक और सैबर जेट रवीन्द्र और मुजीब के देश को अब गुलाम बनाने की शक्ति नही रखते। तुम आदमी के शरीर को मार सकते हो पर इससे उसके सिद्धान्त अमरत्व ही प्राप्त करते हैं।

"धांय! धांय!" पच्चीस पौण्ड के गोले फेंकने वाली भारी तोपो की आवाजे वातावरण मे गूंजने लगी हैं और इन नापाक तोपो के उत्तर मे मुक्ति सेना की हल्की तोपो की आवाजें कितनी फीकी मालूम पडती है। ये वही तोपें हैं जो हमने तीन दिन पहले पाकिस्तानियो से छीनी थी। तोपे बारूद की अभी जीती हुई बाजी को हार मे बदलने लगी है। किन्तु हमारी प्रत्येक हार एक जीत है और उनकी हर जीत एक बेशर्म हार। मेरे इस विचार का रहस्य दुनिया आज से कई महीनो बाद समझ पायेगी और जब तक पाकिस्तान की नींव का एक-एक पत्थर बिखर

चुका होगा ।

इन गोलो की गूंज मुझे उस मघप की याद दिला रही है जब मैं कुछ साथियो के साथ पदमा नदी पर बने पुल को उडाने के लिए गई थी ।

चार दिन पहले की घटना है । खूंखार भूखे भेडियो की तरह पाकिस्तानी फौज आगे बढ़ती चली आ रही थी । उनके टैंको, भारी तोपो और मोर्टारो के सामने मुक्ति फौज ज्यादा देर तक नही टिक सकी । हम उनका ज्यादा से ज्यादा नुकसान कर पीछे हटने लगे । पुल पार करने के बाद हमने उसके आखिरी हिस्से को जान बूझकर थोडा-सा ही उडा दिया । उन्हे उस हिस्से की मरम्मत करने मे पूरा दिन लग गया और इस बीच हमने अपनी सेना को अर्ध चन्द्राकार के व्यूह मे गठित कर लिया । जीत के जोश मे वे खुद ही हमारे व्यूह मे फसते चले गये ।

जैसे ही रात का अंधेरा बढा, हमारी टुकडी के नायक ने आकर कहा, "मुझे दस आदमी चाहिये जो अपनी मर्जी से इसी वक्त मरने के लिए तैयार हो। उन्हे बहुत फुर्तीला और चतुर होना चाहिए । आप लोगो मे से जो तैयार हो, हाथ उठायें ।"

टुकडी के पचासो सैनिको ने अपने हाथ ऊपर उठा दिये ।

"शाबाश बहादुरो ! मुझे तुम्हारी वीरता पर नाज है । अच्छा, हम लाटरी निकाल कर दस आदमियो का चुनाव कर लेते हैं ।"

उस वक्त मुझे अपने भाग्य पर बडी खुशी हुई जब मेरा नाम भी उस लॉटरी मे निकल आया । नायक ने हम लोगो को एक ओर ले जा कर नये काम के बारे मे विस्तार से बताया । हमे नापाक सेना के पीछे स्थित उस पुल को पूरी तरह से उडा देना था । कदम-कदम पर नापाक फौजी अपना डेरा जमाये थे और अंधेरे मे हिलती किसी भी चीज को उडा देने के लिए उनकी ऑटोमेटिक राइफलें तनी हुई थी ।

तीन-तीन आदमियो की दो टुकडियो को पुल के दोनो तरफ बनी पाक चौकियो पर मशीनगनो और हथगोलो से ठीक बीस मिनट बाद

हमला करना था। इस तरह दुश्मन का ध्यान पुल की तरफ से हट कर उनकी ओर केन्द्रित हो जायेगा। इस बीच शेष चार लोग पुल पर पहुँच कर उसके नीचे चार जगहो पर डायनामाइट की छडें अच्छी तरह बांध कर लगा देंगे। उनको तार द्वारा एक दूसरे से सम्बन्धित कर दिया जायेगा। फिर सिर्फ बटन दबाने की देर होगी और नापाक फौजियो की सप्लाई लाइन बद हो जायेगी। उसके वाद मुक्ति सेना उन्हें पिजडे मे बद चूहो की तरह हलाल कर देगी।

मुझे उन चार सैनिको की टोली मे रखा गया जिन्हे नदी के किनारे की झाडियो और ऊंची-नीची भूमि से रेंगते हुए पुल तक पहुँच कर उसे डायनामाइट से उडाना था। मैं सबसे आगे रहना चाहती थी पर दल के मुखिया हरीश बोस ने सबसे पीछे आने का आदेश दिया।

सांपो, बिच्छुओ और जोंको से भरी उस नम जमीन और झाडियों मे रेंगते हुए हम आगे बढने लगे। मेरी नजर आकाश मे टिमटिमाते तारो पर गई, ख्याल आया, कौन जाने कल इनको देखने के लिए हममे से कोई जीवित बच सकेगा या नही?

डायनामाइट की छडें पीठ पर बांधे हुए आगे बढ रहे थे कि दूर से आती गोलियो की आवाजो ने एक पल को बढते कदमो को वही रोक दिया। एक सांप पैरो के ऊपर से सरसराता हुआ निकल गया। लगता था कि हमारी सेना के सबसे पिछले दस्ते ने दुश्मन पर हमला बोल दिया है।

अगले साथी का संकेत पा कदम फिर आगे बढने लगे। दूर पर स्थित पाक फौज की छावनियो मे बहुत हल्की रोशनी हो रही थी। मन हालांकि संकट के उन क्षणो मे भी अपनी धुन मे मस्त था—मैं, अपने घर की सबसे डरपोक और कमजोर लडकी जो कभी चुहिया देखकर भयभीत हो जाती थी, अंधेरे मे जिसके प्राण सूखने लगते थे, वही आज शत्रु को चुनौती देते हुए आधुनिक अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित सेना से घिरे पुल को उडाने के लिए आगे बढी जा रही हूं।

खुश्क जमीन पर फौजी बूटो की आहट सुन जहाँ की तहाँ लेट जाती हूँ। धांय ! और किसी भी पल जिन्दगी खत्म हो सकती है। नही, मुझे उस वक्त तक मरना नही है, जब तक पुल नही उडा देती। मृत्यु ? इतनी जल्दी ? मैंने अभी जीवन मे देखा ही क्या है ? यौवन का एक भी सुकुमार स्वप्न ओह · छोडो।

बेशर्मी, जलालत और गुलामी की जिन्दगी मे एक शानदार मौत, देश की मुक्ति के लिए हँसते-हँसते बलिदान हो जाने वाली मौत लाख दर्जे बेहतर है।

हम पुल के बिलकुल निकट पहुँच चुके है। काश, इस वक्त माँ या बाबा होते और देखते अपनी बिटिया रानी की इस बहादुरी को। गर्व से सीना फूल जाता। हाँ, मैं उनका, उन जैसे लाखो बगाली माँ-बाबा का बदला लेने ही तो जा रही हूँ। मैं अकेली कहाँ हूँ ? मेरी जैसी सैकडो युवति रोशनआरा ब्रिगेड मे हैं।· ····

घडाम ! ट ट ट ठांय ट ट हाथगोलो और मशीनगनो की आवाजें !

हमारे साथियो ने पुल के दोनो मार्गों पर हमला कर दिया है। बीस मिनट बीत चुके हैं।

हम फुर्ती से पुल के खम्भो पर चढने लगते हैं। एक दो · तीन · और सबके बाद मे मैं भी ऊपर चढ जाती हूँ। पहला साथी सबसे तेजी से आगे बढने लगता है। उसे पुल के बीच तक जो पहुचना है। मेरे हाथ मे थमी तार की गिर्री तेजी से घूमने लगती है। मैं पुल की पहली मेहराब के नीचे डायनामाइट की छडें अच्छी तरह बांध कर पीछे लौटने लगती हूँ। पुल पर तैनात नापाक सन्तरियो का ध्यान दूसरी तरफ है और हमे अपना काम पूरा करने की सुविधा। पुल के ऊपरी हिस्से पर फौजियो के बूटो की आवाजें सुनाई देती है। मैं गर्डर से चिपक जाती हूँ।

एक छाया नीचे झुककर बहते हुए नदी के पानी को देखती है। मैंने अपनी सांस तक रोक ली है। वह उर्दू मे कोई भद्दी गाली बकता है

और अँधेरे मे दिखाई न देने वाले पानी मे नीचे थूक देता है। वह अपनी मौत से अनजान है। उसे नही पता कि ठीक उसके कदमो के नीचे मौत उसका बेसब्री से इतजार कर रही है। मौत मेरे सिर पर भी मडरा रही है। अगर मुझसे जरा-सी भी आहट हो गयी तो मशीनगन पर कसा उसका हाथ वह टॉर्च की रोशनी नीचे फेंक कर देखता है और आगे बढ जाता है। मेरी मौत बस मुझे छूती हुई निकल गई है। यदि वह थोडा-सा और झुककर रोशनी फेंकता तो वह ठीक मेरे ऊपर गिरती।

उसके कदम दूर होते जा रहे हैं। जाने क्यो नीचे उतरते हुए मुझे उसके बीवी बच्चो का ख्याल सताने लगता है? मेरी तथा इसकी और इस जैसे हजारो पाकिस्तानी फौजियो की हमसे क्या दुश्मनी है? वे महज अपने पेट की खातिर याहया खाँ के बेरहम हुक्म का पालन कर रहे हैं। लेकिन ऐसा भी पेट क्या जो अपने भाई-बहनो पर ही जुल्म ढाने लगे। इससे तो जानवर बेहतर हैं।

तीनो साथी उतर आये हैं। हम दौडकर एक टीले की आड मे जाकर डायनामाइट को उडाने वाला बटन दबा देते हैं। एक घनघोर कर्ण भेदी आवाज के साथ पुल के टुकडे टुकडे हो जाते हैं। इस्पात, सीमेंट और मलबे के पानी मे गिरने की आवाजें कई मिनटों तक सुनाई देती रहती हैं। पता नही उस पाकिस्तानी फौजी का क्या हुआ होगा? और हमारे साथियो का? कौन जाने बेचारे बचे हो या शहीद हो गये हो?

अपने मोर्चे की तरफ भागते हुए इसी तरह के ख्याल मेरे दिमाग मे दौड रहे हैं, मेरे कदमो से भी ज्यादा तेज गति से! तोपो और राइफलो की आवाजें यकायक बहुत तेज हो गई हैं। मुक्ति सेना ने नापाक फौज पर पूरे जोश से हमला कर दिया है। हम इनमे से एक को भी नही छोडेंगे।

ट ट ट ट ठाय ट ट ट पास से अँधेरे मे ही कोई पाकिस्तानी हमारी तरफ मशीनगन से गोलियो की अँधाधुध बौछार करता है। कई गोलियाँ मेरे सिर के बालो को छूती हुई निकल जाती हैं। मैं जमीन पर

गिर कर हाथो और पैरो के बल झुके-झुके आगे बढने लगती हूँ। तभी दो गोलियां मेरे पैर मे आकर लगती हैं। मैं मुँह मे निकलती चीख को होठो पर दांत दबाकर रोकती हुई आगे बढती हूँ। चार-पाच कदम आगे बढने के बाद दर्द के मारे एक पग भी आगे नही बढा जाता। मैं रुक जाती हूँ। पीडा से अग-अग दुखने लगता है।

मेरे पीछे आने वाले दो साथी तेजी-से आगे निकल जाते हैं। सबमे पीछे बोस आता है। मुझे लेटा देखकर मेरा कधा झकझोरता है।

"पैर मे गोली · बहुत धीमे स्वर में कहती हूँ। वह बिना कुछ कहे मुझे अपने कधे पर डालकर आगे बढने लगता है। अर्ध चेतनावस्था मे भी मुझे गन-मशीनो की आवाजें सुनाई दे रही हैं।

मोर्चे पर पहुँच कर हरीश बोस मुझे खाई मे उतार कर एक तरफ लुढक जाता है। नम धरती का सुखद स्पर्श शून्य होती मेरी चेतना मे एक नया जीवन फूंकने लगता है। मैं मिट्टी को अपनी मुट्ठियो मे भीच लेती हूँ। बगला देश की रक्त सनी सोनार मिट्टी की सौंधी सुगध ठडे पडते मेरे स्नायुओ मे उत्साह की गर्मी भरने लगती है। मां! तेरी गोदी मे जन्मी हूँ और तेरी गोदी मे ही मरूंगी पर मारने से पहले रणचण्डी बन तेरे एक-एक शत्रु का खून पी लूंगी।

पास पडे हरीश बोस के सज्ञा शून्य शिथिल शरीर से मेरा हाथ छू जाता है।

'बोस! भइया कैसे · हो ?"

वह कोई उत्तर नही देता। मैं और जोर मे पूछती हूँ, 'बोस भइया कैसे हो ? ठीक हो न ?

"ज · ल जल!" वह अस्फुट स्वर मे कहता है।

मेरे जख्मो पर पट्टी बांधने वाला साथी अपने किट मे उसे पानी पिलाता है।

"मेहरु वहन वि दा जय बाग ला" लडखडाते शब्द मृत्यु के अटूट मौन मे लीन हो जाते हैं।

मैं भइया बोस को कभी भूल नही सकती। उसकी कलाई मे राखी बांधने का सौभाग्य उसकी मृत्यु के बाद ही मुझे मिल पाया। सैनिक सम्मान के साथ जिस समय उसकी अन्तिम क्रिया की जा रही थी, उसकी कलाई मे बधी वह राखी एक अजेय प्रतीक की तरह एक मुसलमान बहन और एक हिन्दू भाई के स्नेह बधन की गौरव गाथा के मौन गीत गुनगुना रही थी।

मेरी जिन्दगी का हर क्षण बोस भइया का चिर ऋणी रहेगा।

उसने मृत्यु को स्वय वरण कर अपनी बहन को जीवन दान दिया था। बोस की याद से उमाशकर घोष की मूर्ति मेरे स्मृति पटल पर उभरने लगती है। मैं भी कितनी बुद्धू हूँ, विदा होते वक्त उससे पता तक नही पूछा। बस एक बलवती इच्छा है, शहीद होने से पूर्व एक बार उसे देख लेती। वक्त कितना बेहरम हो गया है और लोग कितनी जल्दी गायब होने लगे है।

ढाका से आते वक्त जफर भइया तक से न मिल पाई। साँझ हो चली थी। मैं खाना खाकर मोहल्ला सग्राम समिति के कार्यालय मे जाने की तैयारी कर रही थी कि सआदत की पुकार सुन दिल मे खुशी की एक लहर मचल उठी। मैंने भावावेश मे आगे बढ उसका हाथ पकड लिया।

"अरे! सआदत तुम्हारी कलाई मे यह चोट कैसे लग गई?"

"हम युद्ध कर रहे हैं, इसमे घायल हो जाना मामूली बात है। तुम जल्दी से जल्दी जरूरी चीजें रखकर यहां से चलने की तैयारी करो।"

"क्यो? ऐसी क्या बात है?"

"बात भी बताता जाता हूं। तुम किसी छोटी अटैची मे जल्दी से सामान रखो। कीमती चीजे और रुपये रखना न भूलना।"

मैं दौड-दौडकर अटची मे अपने कपडे, जेवर, रुपये, पूरे परिवार का फोटो वगैरह रखने लगी।

सआदत मुझे ढाका छोडने के कारण बताता रहा "पाकिस्तानी

फौज को नयी कुमक मिल गई है। पश्चिम से और फौजी भी आ गए हैं। उनके टैंको, भारी तोपों और राकेटों के आगे हमारे सैनिक गाजर मूली की तरह मर रहे हैं। वे बेगुनाह बंगालियों को भी नहीं छोड़ते। अब हमने गोरिल्ला युद्ध की तैयारियाँ शुरू कर दी हैं। हमारे पास न आधुनिक किस्म के हथियार हैं और न प्रशिक्षित लड़ाकू सैनिक।"

एक हाथ मे अटैची और दूसरे मे भरी हुई रिवाल्वर पकड़ते हुए मैंने कहा, "चलो! मैं तैयार हूँ।"

सआदत ने अनायास मुझे आलिंगन मे बांध कपोलों पर प्यार की मोहर लगा दी।

"पता नहीं मेहरुन्निसा हम दोबारा मिल सकें या नहीं। खुदा से दुआ करना अगर हम मिलें तो आजाद बंगला देश मे ही मिलें वरना लड़ते-लड़ते वतन पर शहीद हो जायें।"

'क्यों, क्या तुम मेरे साथ नहीं चल रहे हो? क्या मुझे जासूसी करने के लिये कहीं भेजा जा रहा है?"

"मैं तुम्हें नारायण गंज तक पहुँचा कर वापिस आ जाऊँगा। अब तुम्हें जासूसी नहीं करनी पड़ेगी, मोर्चे पर लड़ना होगा।"

"यह बहुत अच्छा हुआ। मुझे जासूसी करना बिलकुल अच्छा नहीं लगता। मैं अपने दिमाग को दिल से अलग नहीं रख सकती।"

'चलो! जल्दी करो! हमें नदी तट तक पैदल चलना पड़ेगा।"

"जफर भइया क्या यहीं रह जायेंगे? उनसे इस बार मिल भी नहीं पाई।" दरवाजे की तरफ बढ़ते मेरे कदम रुक गए।

"यह युद्ध काल है मेहरु! हम स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक हैं। हमें सबका मोह छोड़कर अपने कमाण्डर की आज्ञा का पालन करना है।"

"अच्छा, बस एक मिनट रुको" और मैं जफर भइया के नाम दो पंक्तियों का संदेश एक कागज पर लिखकर उनकी अलमारी के कुन्डे में फंसा देती हूँ।

रास्ते मे मुझे सड़कों पर लाशों के इतने ढेर देखने को मिलते हैं कि

मेरा जी घबराने लगता है। सडी गली लाशो पर गिद्ध मडरा रहे हैं, कौए और कुत्ते नोच-नोच कर उनका मांस खा रहे हैं। सडको पर जहाँ तहाँ जमे हुए खून के कत्थई धब्बे याहया खाँ की जगखोरी का सबूत दे रहे हैं। कहीं कोई कटा हाथ पडा है और कही मुड। किसी नारी का पेट फटा है तो किसी का सीना। बदबू से मेरा सिर फटा जा रहा है और लगता है कि मुझे उल्टी होने वाली है।

मैं अपना ध्यान सडक से हटाने के लिए आसपास की इमारतो की ओर देखने लगती हूँ पर वहाँ भी वही करुण कथा एक अन्य क्रूर शैली मे लिखी हुई है। जले हुए मकान, जिनमे से कुछ मे अब भी धुआँ निकल रहा है, गोलियो व तोपो के गोलो के दागो को अपने सीने से चिपकाए इमारतें, किवाड हीन दरवाजे, खिडकियाँ और खून सनी चौखटें। कमबख्तो ने मस्जिदो की पवित्रता को भी नष्ट कर दिया था। गरीबो की झोपडियो मे आग लगाते वक्त तक उनके हाथ नही कांपे।

आगे बढने पर मुक्ति सैनिक मिले। उनमे से एक ने हमे कमाण्डर का नया आदेश सुनाया—"जल मार्ग द्वारा न जाकर अब हमे ढाका, नारायण गज, डेमरा रोड से आगे बढना है। बढी गगा का पानी खून से लाल हो उठा है। मुक्ति सेना की नौकाओ और नापाक फौजियो के स्टीमरो के बीच जोरदार गोला-बारी शुरू हो चुकी है।

आदेश के अनुसार हमने अपना मार्ग बदल दिया। इस बार मुझे कुछ लाशो के समीप दो मासूम बच्चे रोते हुए दिखायी पडे। उनकी उम्र चार पाच वर्ष से ज्यादा नही होगी। वे कभी एक लाश के पास जाते, उसके चेहरे को गौर से देखते फिर "हाय मम्मी"!" "हाय! पापा!" पुकारते हुए दूसरी लाश की तरफ बढने लगते। कपडो से वे किसी शिक्षित और सम्पन्न परिवार के बच्चे मालूम पडते हैं। रो-रोकर उन्होने अपनी आंखें सुजा ली है।

"क्यो बच्चे! तुम्हारे मम्मी पापा कहाँ चले गये?" मैंने उन दोनो के सिरो पर हाथ फेरते हुए पूछा।

वे मेरा स्नेह पाकर और जोर से रोने लगे।

"इन्हे अपने साथ ले चलो। गांव भेज देंगे। रुकना ठीक नही है, देर हो रही है।" सआदत ने कहा।

हमारे एक साथी के पास साईकिल है। उसने उन दोनो को अपनी साईकिल पर बैठा लिया। वे अब भी सुबकियां भरते हुए मम्मी पापा को याद कर रहे हैं। मां और बाबा की स्मृति मेरी आंखो की कोरों को गीला कर जाती है।

दूर पर चलती गोलियो की आवाजें सुनते ही बच्चे सहम जाते हैं। यकायक उनका रोना बन्द हो जाता है। वे सूनी आंखो से हमे देखते हैं। वे भोले और मासूम बच्चे गोलियों की गूज और मौत के बीच कायम होने वाले नये रिश्ते को समझ चुके हैं।

अगले मोड पर हमे मुक्ति सेना का एक ट्रक मिलता है। वह पहले पाकिस्तानी फौजियो का था पर अब हमारे अधिकार मे है। सफेद पेंट से बगला मे लिखे "जय बांगला" और "मुक्ति सेना" शब्द स्पष्ट रूप मे यही कहानी सुना रहे हैं। पाकिस्तानी चिन्हो को काले पेंट से जल्दी-जल्दी मिटा दिया गया है। मिटे शब्दो की हल्की झलक अब भी बनी हुई है।

हम उन बच्चो को अपने साथ ही बैठा लेते हैं। ट्रक स्टार्ट होता है। टुकडी नायक मेरे हाथ मे राइफल देते हुए सावधान रहने का आदेश देता है।

कोई नौजवान मुक्ति सैनिको का प्रिय गीत गाने लगता है—

"पथेर दीक्षा दाउ गो मुरशिद
पथेर दीक्षा दाउ !"

धीरे-धीरे हम सभी का स्वर गीत के साथ जुड जाता है, यहां तक कि दोनो नन्हे बच्चे भी सबका साथ देने लगते हैं। बगला देश की नई पीढी के इन बच्चो को काल चक्र कितने कठोर और कटकाकीर्ण पथ की दीक्षा दे रहा है। बडे होकर ये अपने माता-पिता के हत्यारे पाकिस्ता-

नियो से अपना प्रतिशोध लिए बिना नही रह सकेंगे ।

ट्रक आगे बढता जा रहा है । गीत समाप्त हो गया । मैं बच्चो से उनके मम्मी और पापा के बारे मे पूछना चाहती हूँ । यदि उनके नाम व काम का पता लग जाय, तो शायद ··· । लेकिन कही वे फिर से रोना शुरु न कर दें ?

मेरी विचार शृंखला को बीच मे ही तोडते हुए बडा बच्चा कहता है, "पाक फौजी मेरे मम्मी पापा को पकड कर ले गये । मम्मी ने हमे अलमारी में छिपा दिया था । अब वे कमरे से बाहर चले गए, मैंने खिडकी से देखा सिपाही मम्मी पापा को सडक पर घसीटते हुए ले जा रहे थे । क्या आप हमे मम्मी पापा से मिला देंगी ?"

उसकी बडी बडी आंखो मे झलकती हुई वेदना मैं सहन नही कर पाती । दूसरी तरफ देखते हुए उत्तर देती हूँ, "मैं पूरी कोशिश करूगी ।"

अब मैं उस मासूम बच्चे को किन शब्दो मे बताऊँ कि उसके मम्मी पापा पाकिस्तानी बर्बरता का निशाना बनने के बाद कही मृत पडे कुत्तो और कौओ का भोजन बन रहे होगे ।

सडक के साथ-साथ बहने वाली नहर लाशों से पटी थी । कुछ लाशें सडक के दोनो तरफ पडी थी। चील कौए किसी लाश की आंख निकाल रहे थे, किसी के पेट मे चोच मार-मार कर मांस नोच रहे थे ।

सडक के बीच मे कुछ लोग खडे होकर ट्रक को रुकने का सकेत करने लगे । हम सभी सावधान हो गये । ड्राइवर ने ट्रक रोक दिया । उनमे तीन स्त्रियां, एक वृद्ध और एक नवयुवक था । वृद्ध ने आगे बढ कर ट्रक पर बैठने का आग्रह बडे विनम्र शब्दो मे किया । हमने उन सबको अपने साथ बैठा लिया । एक स्त्री की गोदी मे नन्ही बच्ची थी । वह मां से बार-बार दूध माग रही थी । मां ने दो-तीन बार बच्ची को बातो मे बहला दिया । लेकिन उसे जोर की भूख लग रही थी, वह दूध पीने की जिद् करने लगी । आखिर मां ने तग आकर उसके गाल पर जोर का चांटा मारा ।

ताज्जुब, बच्ची रोई नही। उसने विस्फारित नेत्रो से हैरानी के साथ अपनी माँ को देखा और फिर अपना अगूठा मुंह मे रखकर उसे चूसने लगी। माँ ने उसे अपनी छाती से चिपका लिया और सिर झुका कर बैठ गई। मैं क्या वहाँ बैठे सभी लोग महसूस कर रहे थे कि उस माँ के कलेजे पर क्या बीत रही होगी ? हम सभी उस समय असहाय थे क्योकि किसी के पास ऐसी कोई चीज नही थी जो उस बच्चे को दी जा सके।

मुझे उस नौजवान को देखकर बडी खीज लग रही है। वह ट्रक मे बैठते ही एक तरफ को ऐसे लुढक गया था जैसे जान ही न हो। उसे मुक्ति फौज मे होना चाहिए था। अगर बगाल के नौजवान स्वतन्त्रता सघर्ष के लिए आगे नही आयेंगे फिर कौन रक्षा करेगा सोनार बागला की ?

"इसे क्या हो गया है ? जवान होकर भी बूढे को मात कर रहा है।" एक मुक्ति सैनिक ने पूछ ही लिया।

उसने अपना पीला चेहरा ऊपर उठाया और बुझी-बुझी आँखो से हमे देखते हुए कहा, "वे मुझे पकड ले गये थे। उन्होने मेरे शरीर से काफी खून निकाल कर बोतलो मे भरा। सैनिक अस्पताल के भगी को मेरे ऊपर दया आ गई। उसकी मदद से मैं वहाँ से भागने मे कामयाब हो गया। बडे जालिम हैं साले। थोडा ठीक हो लूं फिर मैं भी तुम लोगो की तरह मुक्ति सेना मे भर्ती हो जाऊँगा।"

"क्या वहाँ तुम्हारे अलावा और लोग भी थे ?"

"हाँ, पाँच साल से तीस साल तक के आदमी औरतें, बच्चे तक। उनमे से कई कमजोर लोग बेचारे ज्यादा खून निकल जाने की वजह से टेबिल पर लेटे लेटे मर गये।"

"खून का क्या करते हैं ?"

"अपने घायल सिपाहियो को देते हैं। एक पाकिस्तानी अफसर कह रहा था कि हम इन बगालियो का खून निकाल-निकाल कर पश्चिमी

पाकिस्तान भेजेंगे।'

"फिक्र न करो दोस्त! हम बहुत सालो तक अपना खून चुसवाते रहे। अब हम उन्हे बंगाल से जिन्दा नही जाने देंगे।"

बातचीत मे पूरा रास्ता बडी जल्दी कट गया। नारायण गंज पहुंच कर मैंने उन दोनो बच्चो को अवामी लीग के एक नेता जी के सुपुर्द कर दिया। मुक्ति सैनिको की देश प्रेम और वीरता से ओतप्रोत बातें सुन कर उस खून चुसे नौजवान मे भी जोश आ गया। नारायण गंज पहुंचते ही उसने अपने परिवार से विदा ली और मुक्ति सेना मे भर्ती हो गया।

हमे नारायण गंज की बाहरी सीमा पर तैनात होने का आदेश मिला। मिट्टी के टीले बनाए जाने लगे, खाइयां खुदने लगी। ढाका से आने वाली सडक के दोनों तरफ हमने अपनी व्यूह रचना तैयार कर ली। सडको पर भारी-भारी रुकावटें खडी कर दी गईं। पाकिस्तानी फौज को फसाने के लिए तरह-तरह बूबी ट्रेप फैला दिए गए।

मुक्ति सेना के संदेशवाहको और साइक्लोस्टाइल्ड सूचनाओ के अनुसार चार-पांच अप्रेल तक हमने बंगला देश के अधिकाश भाग पर अपना अधिकार कर लिया था। शहरो से पाकिस्तानी सेनाओ को मार कर भगा दिया गया था। हमे पूरा विश्वास हो गया कि अब इनका शिकंजा पूरी तरह खत्म होने वाला है।

गांव के अनार भात और दही ले आए हैं, खाने का समय जो हो गया है। अच्छा, कुछ पेट मे डाल लूं फिर आगे लिखूंगी।

× × × ×

सात अप्रेल के बाद से पाकिस्तानी सेना पूरी बेशर्मी पर उतर आई। तुर्की, ईरान और चीन (कम्यु०) की सहायता पाकर पाक फौजें जंगी जहाजो, जलपोतो और टैंको की मदद से आगे बढने लगी। पूरे बंगाल मे विश्व इतिहास का भीषण नरसंहार शुरू हो चुका था पर प्रजातन्त्र, समाजवाद और मानवता के दावेदार खामोश बैठे थे। सोवियत रूस महज दो खत याह्या खां को भेजकर चुप हो गया। इंग्लैंड,

अमरीका और फ्रांस ने बगला देश की जनता पर किये जाने वाले भयानक अत्याचारियो को पाकिस्तान का आन्तरिक मामला घोपित कर अपने दिल-ओ दिमाग के दरवाज़े बन्द कर लिये। सबसे अधिक आश्चर्य की बात है मुस्लिम देशो की चुप्पी। मैं उनसे पूछना चाहती हूँ कि याह्या खाँ जो सितम बगालियो पर ढा रहे हैं, क्या वे एक इस्लामी सरकार के योग्य हैं। क्या कुरान शरीफ मे नही लिखा है कि कमजोरो और गरीबो को कभी नही सताओ ?

—कि दूसरे के हक़ूको पर डाका न डालो।

—कि अपने धर्म-भाइयो और दूसरे इन्सानो का दिल मोहब्बत व खिदमत से जीतो, तलवार के जोर से नही ?

इजरायल के किसी नौजवान ने एक मस्जिद को जलाने की कोशिश की थी तो ससार भर के मुस्लिम मुल्क और मुसलमानो ने आसमान सिर पर उठा लिया था। हमारे बगला देश मे पाक द्वारा मस्जिदो पर गोले दागे जाते हैं और नमाज पढते लोगो को गोलियो से उडा दिया जाता है, लेकिन किसी के कान पर जूं नही रेंगती। क्या हम मुसलमान नही है ? क्या हम इन्सान भी नही हैं ?

कम्युनिस्ट चीन हमेशा से अपने को ससार मे गरीबो और मजदूरो के हितो का रक्षक कहता आया है पर अब यह साफ जाहिर हो चुका है कि वह रक्षक नही भक्षक है। अगर ऐसा न होता तो वह फासिस्ट याह्या खाँ की लडखडाती सरकार को मदद क्यो करता ? गरीब बांगला देश की मुक्ति सेना का नाश करने मे अपना सहयोग क्यो देता ?

पूरे ससार मे केवल भारत है जो हमारे आडे वक्त पर हर तरह से मदद कर रहा है। हम उसकी सहायता के लिए सदैव आभारी रहेंगे। पाकिस्तानी हुक्मरानो ने हमे शुरू से हिन्दुस्तान के खिलाफ भडकाया, उसे दुश्मन नम्बर एक बनाया और आज सारे पर्दों को फाड कर सच्चाई सबके सामने जाहिर हो गई है। बग भूमि का बच्चा-बच्चा जान गया है कि कौन हमारा शत्रु था, है और आगे भी रहेगा ? काश ! भारत ने

हमे अस्त्र-शस्त्रो से पूरी सहायता दी होती ! काश ! भारत ने शेख मुजीब की पहली पुकार पर बांगला सरकार को मान्यता और आधुनिक हथियार दे दिए होते ! उस वक्त बांगला देश का इतिहास विजय का इतिहास होता । अन्तिम विजय निश्चय ही हमारी होगी किन्तु उस वक्त तक लाखो बगालियो का बलिदान हो चुकेगा ।

हां, मैं नारायणगज के युद्ध का वर्णन कर रही थी—

हमने नापाक फौजो को दो बार पीछे खदेड कर उनसे काफी मात्रा मे गोला, बारूद और तोपे छीन ली थी । किन्तु तीसरी बार उन्होंने हमारे ऊपर दो दिशाओ से हमला किया । करीब दस टैंक थे उनके पास । मुक्ति सैनिको के हाथ एक टैंक भेदी तोप पड चुकी थी । किन्तु उसे चलाने वाला नौसिखिया था तथापि उसने बीस गोलो मे पांच टैंको को नाकाम कर दिया । इससे ज्यादा गोले थे नही, इसलिए उस तोप को पीछे भेज दिया गया ।

मुक्ति सेना के ९० प्रतिशत सैनिको का युद्ध का कोई अनुभव नही था । केवल ३० प्रतिशत के पास आधुनिक कहे जाने योग्य हथियार थे, बाकी सिर्फ बल्लमो, तलवारो, लाठियो और पाइपगनो से लैस थे । यह हालत उस वक्त थी जब हमने दर्जनो जगहो पर पाक फौजियो को मार कर भगा दिया था । और उनसे भारी सख्या मे हथियार छीन लिए थे ।

पहनने के लिए खाकी वर्दी शायद पांच या दस प्रतिशत के पास होगी, शेष सैनिक तहमद, पैजामा और यहां तक कि धोतियां पहन कर लड रहे थे । लेकिन हममे से अधिकाश ने अवामी लीग की टोपी का इस्तेमाल किसी न किसी तरह कर लिया था ।

तो ऐसी परिस्थितियो मे हम शेष पाच टैंको का सामना कैसे करते ? हमारे दस नौजवान बारूदी सुरगो को लेकर धरती पर रेगते हुए आगे बढने लगे । सामने से आती गोलियो की बौछार मे तीन मारे गए, बाकी ने उन चार टैंको की घूमने वाली जजीर को सुरग के विस्फोट से बेकार कर दिया । अब मैदान मे सिर्फ एक टैंक था । पाकिस्तानी फौज की

हिम्मत पस्त हो रही थी। पैदल फौज के सैकडो सिपाहियो को हमने अपनी राइफलो का निशाना बना डाला।

आत्माहुति के लिए तैयार दस नौजवान उस टैंक को ध्वस्त करने के उद्देश्य से फिर आगे बढे। हम मशीनगनो से उन्हे 'कवर' देने लगे।

तभी अपने ऊपर आकाश मे हमने पाक सैबर जेटो को उडते हुए देखा। वे तीन थे। कुछ ही मिनटो बाद वे हम पर नापाम बम डालने लगे।

मोर्चे पर चारो तरफ आग ही आग दिखायी दे रही थी। धू, धडाम, धाय, ट, ट, ट, ठाय की आवाजो से कान के पर्दे फटे जा रहे थे। ऊपर, नीचे, सामने और अगल-बगल मृत्यु का ताण्डव नृत्य हो रहा था। बमो से मरने और जलने वालो तथा घायलो की चीखो व चीत्कारो से सारा युद्धस्थल गूज उठा, किन्तु फिर भी हम अपने स्थानो पर डटे रहकर युद्ध करते रहे।

बम वर्षा ने हमारी मुक्ति सेना को भारी नुकसान पहुंचाया। सैबर जेट के सामने हम असहाय थे और उन पर राइफलो से निशाना लगाने का निष्फल प्रयास कर रहे थे। सेना नायक द्वारा हमे पीछे हटने का आदेश दिया गया।

मुक्ति सैनिक खाइयो से निकल कर पीछे हटने लगे। लगभग बीस सैनिको को छोड कर सभी मुक्ति सैनिक युद्ध स्थल मे पीछे हट कर सुरक्षित स्थान पर आ गए। वे बीस साहसी जवान मशीनगनो और राइफलो से पाक फौजियो को आगे बढने से रोके हुए थे।

हम आधे से भी कम रह गए थे। सेना नायक ने हमे जल्दी से जल्दी पूर्व दिशा की ओर बढने का आदेश सुनाया। उसने कहा, "आपको जो भी साधन मिले, ट्रक, मोटर, साइकिल, स्कूटर, घोडा—उस पर बैठ कर पूर्व दिशा की तरफ जितनी तेजी से मुमकिन हो आगे बढिए। अपने पीछे खाने-पीने या युद्ध का जरा-सा भी सामान मत छोडिए। जनता से कहिए कि वह पाक फौजियो को मिकुल सहयोग न दे। उनके जासूसो से सावधान रहिए। जिन चीजो को जनता अपने साथ न ले जा सके,

उनमे आग लगा दे।"

मुझे मुक्ति सेना की अन्य युवतियो के साथ एक ट्रक मे बैठने का अवसर दिया गया। देश प्रेम के गीत गाते हम आगे बढने लगे।

नारायणगज के सभी कल कारखानें और दुकानें बन्द पडी थी। अधिकाश मजदूर और उनके परिवार वहां से भाग चुके थे। औद्योगिक बस्ती पार करने के बाद हमारा ट्रक गांवों की दिशा मे बढने लगा। सदेश-वाहको द्वारा पाकिस्तानी फौजो की गतिविधियो की सूचना आसपास के इलाको मे भेज दी गई।

हमारे सेनानायक ने नारायण गज से पांच मील पूर्व मे एक गांव से बाहर सेना को रोककर फिर से व्यूह रचना की। मुक्ति सेना के आगमन की खबर पाकर आसपास के गांवों से सैकडो युवक हमारे साथ आ मिले। उनमे से जिनको बन्दूक या राइफल चलानी आती थी, उन्हे हथियार बांट दिए गए।

मुक्ति सेना मे उस समय वहां लगभग बीस युवतियां थी। हम सभी को राइफल, ब्रेनगन और मशीनगन चलाना आता था। लगभग एक हफ्ते तक युद्ध मे भाग लेने का अनुभव भी हमे मिल चुका था। सेना-नायक ने हम सभी युवतियो को अपने खेमे मे बुला कर कहा, "आप लोगो ने जो वीरता दिखाई है, उस पर मुझे गर्व है। मेरा विचार यह है कि आप लोग हमारे साथ रह कर दुश्मन का मुकाबला करने के बजाय गांव-गांव जाकर लडकियो और महिलाओ को युद्ध करने की कला सिखायें, उन्हे अस्त्र-शस्त्र चलाने की ट्रेनिंग दें। हर गांव मे युवतियो की रोशनआरा ब्रिगेड हो। याद रखिए कि यह युद्ध लम्बे समय तक चलेगा और इसका अन्तिम निर्णय गांवो मे ही होगा।"

नायक की आज्ञा पालन करना हर सैनिक का धर्म होता है। हम उनकी आज्ञा के अनुसार ट्रक मे बैठकर गांवो की ओर चल पडे। हमारे साथ बीस युवा सैनिक और कुछ घायल भी थे। हमारा ट्रक कच्ची सडक पर आगे बढ रहा था। दोनो ओर आम, कटहल और

सुपारी के सघन वृक्ष हवा मे झूम रहे थे। धान के खेतो मे स्त्री-पुरुष अपने कामो मे जुटे हुए थे। वृक्षो, घरो और झोपडियो पर बगला देश के झण्डे लहरा रहे थे। अभी युद्ध की लपटें उन गांवो तक नही पहुँच पाई थीं।

खेत मे काम करते युवक-युवती के एक जोडे को देखकर मुझे सम्रादत की याद आ गई। मैं कल्पना कर रही थी कि उसे विदा देते समय कही भावुक न बन जाऊँ। आखो मे हृदय की वेदना न झलकने लगे। किन्तु वास्तविकता कितनी कठोर होती है? नारायण गज पहुँचते ही सम्रादत ने मुक्ति सेना के एक ट्रक को ढाका की ओर जाते देखकर उसे रुकने का इशारा किया और झट उछल कर उस पर बैठ गया। उससे "खुदा हाफिज" भी न कह पाई। विदा की मुद्रा मे हाथ ऊपर उठा कर हिलाया, उसने भी हाथ हिलाया और बस। भावुक होने का न वक्त था और न सुविधा। मैं अपनी सैनिक टुकडी के साथ आगे बढने लगी और खाइयो को खोदने मे लग गई। मुमकिन है किसी गांव मे उमाशकर मिल जाय?

हर अगले गांव मे पहुँच कर हमारा ट्रक रुकता। गांव की सग्राम समिति के मुखिया से आवश्यक सूचनाओ का आदान-प्रदान होता। घायलो को उतार दिया जाता और महिलाओ को सैनिक शिक्षा देने के लिए हममे से एक युवती गांव मे रुक जाती। हमारे आने और जाने के अवसर पर "जय बाँगला!" के गगनभेदी नारे लगाये जाते। चलते वक्त गांव वाले हमारे खाने के लिये जरूर कुछ न कुछ रख देते।

इस प्रकार हम पद्मा नदी के तट तक पहुच गये। वहा हमे मांझियो द्वारा पता चला कि स्टीमरो, जलयानो, मोटर बोटो और बडी-बडी नावो पर काम करने वाले सभी मांझी, कर्मचारी और मजदूर बाँगला सरकार के साथ हैं। पाकिस्तानी फौजियो ने उन्हे हर तरह के लालच दिए, डराया, धमकाया, कुछ को बुरी तरह पीटा भी, पर वे अपने निश्चय से सूत भर भी विचलित नहीं हुए।

एक मांझी ने हमे बडी रोचक तथा रोमाचक घटना सुनाई। वह अपनी नाव पर बैठा मछली का शिकार कर रहा था कि दस सशस्त्र पाक फौजियो ने उसे नदी पार चलने का आदेश दिया।

उसने उन्हे सलाम करते हुए कहा, "हुजूर! मुक्ति सेना के जवान मुझे बहुत परेशान करते हैं। उनकी वजह से सारी आमदनी चौपट हो गई है। आप साहब कुछ इनाम वगैरह दें तो"

"यह लो पांच रुपये। उतराई उस पार पहुँचने पर ले लेना।" उस ने बडी खुशी और सम्मान का प्रदर्शन करने के साथ उन्हे नाव मे बैठाया।

नाव खेने के साथ वह बातचीत भी करता जाता। उसे यह पता लगाते देर नही लगी कि उनमे से एक को भी तैरना नही आता। वे समीप स्थित एक गांव के अवामी नेता और उसके परिवारिक सदस्यो को नेस्तानाबूत करने जा रहे थे।

मांझी नाव को गहरे पानी के प्रवाह मे ले गया और एक झटके के साथ नाव पलट कर नदी मे कूद गया। वे दसो पाक फौजी नदी में डूबने लगे। डूबते समय उन्होने मांझी पर गोली चलाई पर वह बच निकला।

उसकी वीरता भरी आपबीती सुन हमने उसकी प्रशसा की। हमने एक बडी मोटर बोट किराए पर लेनी चाही पर उसके चालक ने किराया स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। उसने कहा, "अपने देश के मुक्ति सैनिको की सेवा करना मेरा फर्ज है। आप लोग देश के लिए अपनी जान कुर्बान करने के लिए तैयार हैं तो क्या मैं आपकी इतनी जरा-सी सेवा नही कर सकता?"

हमने उससे किराया लेने का बहुत आग्रह किया पर वह माना नही। अत ने हमे उसी का अनुरोध स्वीकार करना पडा।

मोटर बोट पर बैठ हम उत्तर दिशा की ओर बढने लगे। उस समय सूरज अपनी लम्बी यात्रा के अन्तिम चरण मे पहुँच रहा था। उदय

और अस्त होते हुए सूर्य को देखना मुझे हमेशा से बहुत अच्छा लगता रहा है। पश्चिम दिशा मे तैरते बादलो के छोटे छोटे टुकडे आकाश के सूनेपन मे नया रग भरने का असफल प्रयत्न कर रहे थे। सूरज की रोशनी ने उन्हे गुलाबी, लाल और पीले रगो मे रग दिया था। पेडो के हरे झुरमुटो के पीछे अस्त होता सूर्य ऐसा प्रतीत होता था मानो हरित सागर मे आग लगाता हुआ कोई अग्नि पिड हो। जाने क्यो मुझे सारी प्रकृति बडी उदास लग रही थी। पदमा के तरल वक्ष पर नर्तन करती पाल लगी नावो के ऊपर लहराते बगला देश के झण्डे सूर्य प्रकाश मे चमक रहे थे। नदी का प्रवाह मथर गति से आगे बढा जा रहा था। ठडी हवा के झोके और उन पर तैरती मछुआरो के गीतो की आवाजें एक विरह वेदना से मिश्रित वातावरणके सृजन मे लगी थी। पक्षियो के झुड के झुड कलरव करते हुए अपने नीडो की दिशा मे उडे जा रहे थे। सूर्य की अन्तिम किरणो ने पदमा से विदा लेने के लिए अपने हाथ फैला दिए थे। उनका स्पर्श पा पदमा का तरल गात रक्ताभ हो उठा था और मुझे अनुभव हो रहा था जैसे उसके पानी मे हजारो बगाली वीर शहीदो का खून घुलमिल गया हो।

हमारे एक साथी ने भाव-विभोर होकर एक गीत गाना शुरू कर दिया—

मन माझी रे ! ए ए ए !

एबार बांगला मायेर दोहाय दे रे !

गीत के स्वरो मे एक वीरतापूर्ण आह्वान था जो हवा के परो पर तैरता हुआ चारो तरफ फैलता चला गया और कुछ क्षणो बाद नदी तट के झूमते वृक्षो, कलरव करते पक्षियो, चचल लहरो, सभी मे एक ही पुकार उठ रही थी, एक ही गुहार सुनाई दे रही थी—एबार बांगला मायरे दोहाय दे रे !

धीमे-धीमे नीले आकाश मे तारो के दीप टिमटिमाने लगे और एक बीमार आदमी के पीले चेहरे जैसा आधा चाँद मद्धिम गति मे अपनी

राह पर आगे बढने लगा।

प्रकृति के सौन्दर्य को निहारती हुई मैं पता नही कब सो गई। लगभग आधी रात का समय होगा कि मुझे किसी ने झकझोर कर उठाया।

"दुश्मन! होशियार!" मेरी बगल मे बैठी सलमा सिद्दिकी ने धीमे मे मेरे कान मे फुसफुसायी। बिजली जैसी फुर्ती से मैंने पास रखी मशीन-गन उठा ली।

मोटरबोट नदी तट पर आ गया था। सभी की राइफलें नदी मे तेजी से जाते हुए एक स्टीमर की ओर तनी हुई थी।

हमारा एक साथी किनारे पर खडे किसी व्यक्ति से बात कर रहा था। सभी को सन्देह था कि स्टीमर मे पाकिस्तानी फौजी हैं। तभी पेडो मे लटके किसी कनस्तर की आवाज रात की शान्ति को भग करने लगी। इसके उत्तर मे अनेको कनस्तर बजने लगे। दूसरे तट से भी इसी प्रकार की आवाजें सुनाई दी। यह खतरे का सकेत था।

तट पर खडी एक मोटरबोट मे लगे तेज प्रकाश वाले लैम्प की रोशनी स्टीमर पर डाली गई। हमे तत्काल उसका उत्तर गोलियों की बौछार से दिया गया। अब स्टीमर मे पाक फौजियो के होने मे कोई सन्देह नही रह गया। लैम्प फौरन बुझा दिया गया।

दोनो किनारो से कई मोटरबोट और नावें स्टीमर की दिशा में गोलियां बरसाती हुई आगे बढने लगी। स्टीमर ने मुड कर वापिस भागने की कोशिश की पर तब तक वह चारो तरफ से घिर चुका था। हम उस पर दनादन गोलियां चला रहे थे और स्टीमर पर सवार नापाक फौजी भी हमारे ऊपर गोलियो की वर्षा करने मे लगे थे। मुक्ति सेना के अनेको बहादुर जवानों ने अपनी नौकायें स्टीमर से सटा दी और वे उस पर चढने का प्रयत्न करने लगे।

हमारा यह जल युद्ध लगभग आधे घण्टे तक चलता रहा। अत मे एकाएक स्टीमर की बत्तियां जल उठी। स्टीमर पर शेष रह गए पाक

सिपाहियो ने आत्म-समर्पण कर दिया। इस युद्ध मे हमे स्टीमर पर रखा तमाम गोला बारूद और अस्त्र-शस्त्र प्राप्त हुआ। पाक सिपाहियो को गिरफ्तार कर मुक्ति सैनिको ने स्टीमर को अपने अधिकार मे कर लिया।

स्टीमर मे हमे एक घायल बगाली मुक्ति सैनिक भी मिला। उसके हाथ पैर बधे थे और शरीर पर सुइया चुभी हुई थी। मूछ दाढी मे ढके रुखे चेहरे पर पीडा की रेखायें स्पष्ट दिख रही थी। उसको बधन मुक्त किया गया। मुझे देखते ही उसके अधरो पर मुस्कान खिल उठी।

"अरे! मेहरुन्निसा तुम! खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि तुमसे मुलाकात हो गई।"

मैंने उसके खून सने चेहरे और बिखरे बालो को गौर से देखते हुए पूछा, "तुम कौन ..? मैं पहचानी नही।"

"मैं सआदत का दोस्त यूसुफ हूँ। तुम्हे एक बहुत जरूरी सदेश देना था।"

"अरे! माफ करना मैं पहचान नही पाई। सदेश बाद मे देना, पहले तुम्हारी मरहम पट्टी कर दूं। बदमाशो ने तुम्हारी क्या हालत कर दी है।"

मैं उसे पास की एक झोपडी मे ले गई। सावधानी से उसके पैर मे चुभी हुई सुइया निकाली, पूरी बीस थी। वहाँ पर मरहम पट्टी की जो भी थोडी बहुत सुविधा थी उससे मैंने यूसुफ की प्राथमिक चिकित्सा की। गाँव वालो ने उसे गरम-गरम दूध पीने को दिया। अब वह पहले से स्वस्थ और सतुलित हो चुका था। मैंने उसे आराम करने की सलाह दी पर वह सआदत का सदेश और आपबीती घटनाये सुनाने की जिद्द करने लगा। अत मे मुझे उसकी बात माननी पड़ी। जो कुछ उसने बताया वह मेरा हृदय हिला देने के लिए पर्याप्त था। उसकी कथा को सक्षेप मे, उसके ही शब्दो मे लिखूगी—

आकाश मे काले-काले मेघ घुमड रहे थे और हवा इतने प्रचण्ड वेग से

चल रही थी कि लगता था ढाका का कोई भी वृक्ष या झोपड़ी साबुत नही बचेगी। ऐसे भयानक मौसम मे हमारे दल के जासूस नूर मोहम्मद ने खबर दी कि बूढी गगा मे एक पाक स्टीमर आकर रुका है। उसमे काफी मात्रा मे गोला बारूद भरा हुआ है। पाक फौजी स्टीमर से सामान उतार रहे हैं।

मुक्ति सेना उस समय गोरिला युद्ध प्रणाली अपना चुकी थी। सआदत को स्टीमर पर हमला करके गोला बारूद को अपने कब्जे मे करने का सकटपूर्ण कार्य सौंपा गया। इसके लिए उसे नूर मोहम्मद और यूसुफ के अतिरिक्त दस सैनिक दिए गए।

मुक्ति सेना की दूसरी टुकडी को बूढी गगा के तट पर छिपे रहने का आदेश दिया गया। इस टुकड़ी का कार्य स्टीमर पर कब्जा हो जाने के बाद उसके गोला बारूद को उतार कर ट्रको मे भरना था।

एक बडे नाले के द्वारा बूढ़ी गगा मे जाने का निश्चय हुआ। हमने छोटी-छोटी दो नावें ली और अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर नई मुहिम पर चल पडे। शाम का वक्त था पर घनघोर बादलो के कारण चारो तरफ रात जैसा अधेरा फैल चुका था। हवा की साय-साय के साथ वर्षा की तेज बौछार शरीर पर हटरो की तरह मार कर रही थी। किन्तु स्वतन्त्रता के दीवाने मुक्ति सैनिक मेघो मे कडकती बिजली जैसी फुर्ती से बूटी गगा की दिशा मे बढे जा रहे थे।

बूटी गगा मे नावो के पहुँचते ही कुछ दूर पर तट के समीप खडे स्टीमर की रोशनियां दिखाई देने लगी। तूफान अपने पूरे यौवन पर था और उसके स्पर्श से बूटी गगा की लहरो मे भी जवानी-सा उन्माद तथा वेग पैदा हो गया था। हवा का वेग स्टीमर की ओर ही था। नावें तेजी के साथ आगे बढी और हिचकोले खाते स्टीमर के पास जा पहुँची। दोनो नावें अलग-अलग दिशा मे चली गयी। एक ने स्टीमर के बायी तरफ लगर डाला और दूसरी ने दाहिनी तरफ। डेक पर किसी को न देखकर सआदत ने हुक वाली रस्सी ऊपर फेंककर स्टीमर के जगले मे

फसाई। रस्सी के सहारे हम ऊपर चढ गए। सम्रादत के साथ नूर मोहम्मद, यूसुफ तथा चार और सैनिक थे। वर्षा की तेज बौछारों और तूफान की गूंज मे स्टीमर के पाकिस्तानी प्रहरियो का ध्यान मुक्ति सैनिको की ओर आकर्षित न हो सका। हम दबे पांवो से आगे बढने लगे।

"हाथ ऊपर उठाओ वरना तुम सबको भून देंगे।"

पाकिस्तानी सैनिको की जोरदार चेतावनी सुनकर हमने पीछे मुड कर देखा। उन लोगो ने हमे चारो तरफ से घेर लिया था। उनकी ऑटोमेटिक राइफले हमारी ओर तनी थी।

सम्रादत बिजली जैसी फुर्ती से मुडा और उसकी मशीनगन आग उगलने लगी। सभी ने तत्काल डेक पर पट्ट लेटकर गोलियां चलानी प्रारम्भ कर दी।

पांच मिनट तक दोनो ओर से दनादन गोलियां चलती रही। तीन आदमियो ने फुर्ती से खिसक कर पास पडी गाठो की आड ले ली। इनमे मैं, (युसूफ), नूर मोहम्मद और सम्रादत थे। बाकी साथी कोई आड न ले सके। इसलिए हम तीन को छोडकर वे सब पाकिस्तानी फौजियो ी गोली का शिकार हो गए। मेरी राइफल की गोलियां खत्म हो चुकी ।

अचानक नूर मोहम्मद ने सम्रादत के सिर पर अपनी राइफल का मारा। वह तत्काल बेहोश हो गया। नूरमोहम्मद की दोगलेबाजी मैं आश्चर्य मे पड गया। साफ जाहिर था कि उसने हमारे साथ घात किया था।

"शाबाश! नूर मोहम्मद! बहुत अच्छा किया दोस्त!" मैंने उसकी पीठ थपथपाकर कहा।

इसी समय पाक फौजियो ने झपट कर हम दोनों को पकड लिया। नूर मोहम्मद मेरा अच्छा मित्र था। मुझे आशा थी कि अगर वह जासूस हुआ तो मैं भी क्षमा कर दिया जाऊंगा।

"नूर ! आज तुमने बड़ी बहादुरी का काम किया है।" पाक फौजी अफसर ने उसके कधे पर हाथ रखते हुए कहा।

"शुक्रिया जनाब !" नूर ने अपनी जेब से टार्च निकाली और किनारे की ओर कुछ सकेत भेजने लगा।

"क्या कर रहे हो ?" अफसर ने पूछा।

"उन जाहिलो को वापिस लौट जाने का इशारा कर रहा हूँ।"

'ये कौन है तुम्हारे साथ ?"

"मेरा दोस्त यूसुफ, बडे काम का साबित होगा।"

"उन्होंने सआदत को बन्दी बना लिया। हमारे हथियार ले लिए गए। पाक फौजी अफसर नूर को एक कोने मे ले गया। वे कुछ देर तक आपस मे धीमे धीमे बात करते रहे। मेरे मन मे बाहर के तूफान से भी भीषण हलचल मची हुई थी। समझ नही आ रहा था कि अकेला और निहत्था होकर मैं क्या करू ?"

उसी समय नूर मेरे पास आया। अफसर भी उसके साथ था।

"तुम सच्चे वतनपरस्त मुसलमान हो। नूर मोहम्मद के साथ मिल कर काम करो। हम तुम्हे मालामाल कर देंगे।" अफसर खीसे निपोरता हुआ बोला। उसकी वह मुस्कराहट भी जहरबुझी थी।

"ठीक है। मुझे जो काम सौंपा जाएगा, उसे जरूर करूगा। नूर मेरा प्रिय मित्र हैं।" अपने होठो पर मुस्कान लाने का प्रयत्न करते हुए मैंने कहा।

"आओ यार ! केबिन मे चलें।" नूर मेरे कधे थपथपाता हुआ बोला।

हम केबिन मे पडी कुर्सियों पर बैठ गए। नौकर चाय ले आया। नूर चाय पीते हुए मेरी बुद्धिमानी की प्रशसा करता रहा। मैं अपने विचारो मे इतना खोया हुआ था कि नूर क्या कह रहा है, इस तरफ मेरा ध्यान ही नही गया।

"उन लोगो ने सआदत की खातिरदारी शुरू कर दी होगी। चलो, देखें

क्या हाल है हज़रत के ?"

मैं सचेत हो गया। नूर ने एक खिडकी खोली। उसमे लोहे के सींखचे लगे हुए थे। दूसरी तरफ के केबिन मे सआदत को नगा करके उल्टा लटका दिया गया था। एक आदमी उस पर कोडे बरसा रहा था। सआदत हर कोडे के शरीर पर पडते ही जोर से 'जय बांगला' का नारा लगाता। कोडा शरीर पर जहाँ भी पडता, वहाँ की खाल उतरी चली आती। इसके बाद उन्होने सआदत के सिर के कुछ नीचे आग जलायी और उसमे ढेर-सी मिर्चें डाल दी।

मिर्चों के धुए से उसका बुरा हाल हो गया। हमे भी छीके आने लगी। तभी हमने देखा कि एक आदमी सआदत के जख्मो पर कोई पाउडर जैसी चीज डाल रहा है।

"जानते हो, अब उसके जख्मो पर नमक छिडका जा रहा है।" नूर मुस्कराते हुए बोला, "देखना सवेरे तक या तो सआदत वतन के साथ गद्दारी करना भूल जायेगा अथवा वे उसे पीट-पीट कर अधमरा कर देंगे और चील कौओ का भोजन बनने के लिए फेक देंगे। उस वक्त बडा मजा आता है जब चील कौए घायल आदमी का मांस नोच-नोच कर खाते हैं।"

मिर्चों का धुआं हमारे केबिन मे भी प्रवेश करने लगा। नूर ने खिडकी बन्द कर दी। उसकी क्रूरतापूर्ण बाते सुन मुझे रोमाच हो गया।

"आओ! शराब पिये। मौसम बहुत ठडा हो गया है।" उसने मेज पर रखी बोतल खोली। पास मे ही सोडा-वाटर की बोतल रखी थी। पता नही, मुझे क्या हुआ कि मैंने सोडावाटर की बोतल उठाकर पूरी ताकत से नूर मोहम्मद के सिर पर मारी। एक ही वार मे वह ढेर हो गया।

मेरा गुस्सा इतने पर भी शान्त नही हुआ। सीने पर चढ कर मैंने उसकी गरदन इतनी जोर से दबाई कि जीभ बाहर आ गई।

"कमीना ! नीच ! खुद वतन के साथ गद्दारी करता है और सआदत जैसे देशभक्त को गद्दार बताता है।" मन ही मन मैंने कहा।

आगे की योजना पर पाच मिनट तक विचार करने के उपरान्त मैंने नूर मोहम्मद की जेबो की तलाशी ली। एक छोटा-सा गोलियो से भरा रिवाल्वर मेरे हाथ लगा। नदी की तरफ की खिडकी खोलकर मैंने बाहर देखा। तूफान पहले से भी तेज हो गया था। जल्दी-जल्दी नूर मोहम्मद के सारे कपडे उतार डाले और उसे उठाकर नदी मे फेंक दिया। एक देशद्रोही और विश्वासघाती को अपने हाथो से मार कर मुझे कुछ सन्तोष मिला। फर्श पर फैले खून को कपडे से साफ कर खडा हुआ था कि बाहर किसी ने दरवाजा खटखटाया।

झपट कर पलग पर तकिया और कपडे आदि इस प्रकार रख दिए जैसे वहां कोई सो रहा हो, फिर उस पर चादर डाल दी।

दरवाजा खोलने पर एक पाक फौजी को बाहर खडे हुए पाया।

"क्या बात है ? तुमने सोते से बेकार जगा दिया।" आंखें मलने और जम्हाइयां लेते हुए मैं बोला।

'यूसुफ साहब, आप ही है ?"

"जी हां, कहिए।"

"सआदत हमारा साथ देने के लिए तैयार हो गया है। लेकिन वह दस मिनट के लिए तनहाई मे आपसे बात करना चाहता है।"

"ठीक है। यही अच्छी बात है। अभी चलता हूं।" केबिन का दरवाजा बन्द करते हुए मैंने कहा और सिपाही के पीछे चल दिया। सआदत इतना कमजोर साबित होगा, मुझे आशा नही थी।

सआदत एक कुर्सी पर शिथिल-सा बैठा हुआ जख्मो की पीडा से बुरी तरह कराह रहा था। मैंने केबिन का दरवाजा बन्द किया और उसकी तरफ बढ गया।

"यूसुफ भाई ! तो तुम भी

मैं अपना मुंह उसके कान के पास तक ले गया और काटे को काटे

से निकालने की अपनी पूरी योजना उसे बता दी। नूर मोहम्मद को खत्म करने की बात भी सुना दी।

"शाबाश ! अब एक काम कर दोस्त ! मुझे गोली मार दे या मेरा गला घोट दे। जालिमो ने मेरे जोड-जोड तोड दिए है। इसके पहले कि वे मुझे तडपा-तडपा कर मारें, मेरे यार ! तू मुझे इस दोजख से आजाद कर दे।" सआदत रोते हुए बोला।

"हिम्मत नही हारो दोस्त ! हमे चालाकी और साहस से काम लेना है।"

"मेरे भइया वक्त बहुत कम है। तेरे पैरो पडता हूँ, मुझे जल्दी से जल्दी खत्म कर दे। तू समझ नही रहा है कि उन जालिमो ने मेरे शरीर के साथ क्या-क्या किया है ? मुझे कितनी तकलीफ हो रही है।" उसने मेरे पैर पकड़ते हुए कहा।

"बस, बस रहने दो सआदत भाई ! तुम्हारा हुक्म सिर आँखो पर। पता नही था कि एक दिन अपने इन हाथो से अपने ही दोस्त की हत्या करनी पडेगी।" कहते-कहते मेरा कठ भर आया और आँखे नम हो गई।

"भावुक मत बनो मित्र ! मेरी हत्या कर तुम मुझे उन नारकीय यत्रणाओ से बचा लोगे, जो वे मुझे दे रहे हैं। तुम मुझे एक देशभक्त वीर की तरह सम्मानित ढग से मरने मे सहायता देकर केवल अपना कर्त्तव्य निभा रहे हो। अच्छा, कितने मिनट और शेष हैं ?"

"पाँच मिनट !" घडी देखकर मैंने उत्तर दिया।

'सुनो ! तुम मेरी पडोसिन मेहरुन्निसा को जानते हो न ?"

"हाँ, जानता हूँ।"

"अगर वह तुम्हे कभी मिले, उससे कहना कि मेरी हार्दिक कामना है कि वह उमाशकर घोष के साथ विवाह कर सुखी जीवन बिताए। उसे यह भी बताना कि मैं अपनी अन्तिम साँस तक उसके प्यार को याद करता रहा। मैं एक वीर देशभक्त की तरह हँसते-हँसते शहीद हो गया

पर अपने कर्त्तव्य से पीछे नही हटा। "अच्छा, अब कितने मिनट शेष हैं?"

"दो मिनट!"

"मुझे गोली मारने के बाद तुम उनसे कह देना कि मैंने तुम पर अचानक हमला कर दिया था और तुम्हे मजबूरन गोली चलानी पडी। इसके बाद तुम मौका मिलते ही भाग जाना। अपने सभी साथियो से मेरा सलाम कहना। कहना कि सघर्ष जारी रहना चाहिये चाहे मुझ जैसे लाखो सम्रादत शहीद हो जायें, समझे।"

"समझ गया।" मैंने उसे फौजी ढग से सलाम करते हुए कहा और रिवाल्वर निकाल लिया।

"मैं राष्ट्रीय गान गुनगुनाऊंगा। तुम दूसरी लाइन के खत्म होते ही मेरी कनपटी मे गोली मार देना।" अच्छा, जय बांगला!

"जय बांगला!" और मैंने रिवाल्वर की नाली उसकी कनपटी से सटा दी।

"आमार सोनार बांगला!
आमी तोमाय भालोवासी!"

धांय! और मैंने अपने प्यारे देशभक्त मित्र तथा नायक को गोली मार दी। उस वक्त मेरी आंखो से अश्रु धारायें फूट रही थी और मेरा पूरा शरीर पत्ते की तरह कांप रहा था।

वह गोली लगते ही मर गया।

उसी वक्त केबिन का दरवाजा खुला और कई पाक फौजी तेजी से अन्दर आए।

उन जालिमो को देखते ही मेरे तन-बदन मे आग लग गई। मैंने उन पर गोलियां चला दी। प्रतिशोध लेने की उत्तेजना मे, मुझे यह भी ध्यान नही रहा कि रिवाल्वर से आखिरी गोली कब चल गई? वरना मैं अन्तिम गोली अपने मार कर शान्तिपूर्वक मृत्यु की अनन्त निद्रा मे लीन हो जाता।

रिवाल्वर की गोलियाँ खत्म होते ही उन्होने मुझे पकड लिया। उसके बाद उन जानवरो ने मुझे जो भयानक शारीरिक और मानसिक यन्त्रणायें दी हैं उनको बताकर मैं तुम्हे दुखी नही करना चाहता। शायद मुझे सम्रादत का अन्तिम सन्देश तुम तक पहुँचाना था, इसीलिए जीवित बना रहा।"

सम्रादत की वीरतापूर्ण मृत्यु और उसके अन्तिम सन्देश को सुनते-सुनते मेरा हृदय भर आया। लगा जैसे आँखो मे कुछ चुभ रहा है और सीने से एक गुबार-सा उठकर ऊपर आने के लिए है। असह्य दुख, वियोग और वेदना के इस तूफान को, इस गुब्बार को और इस तडफडाहट को मैं अपने दिल मे ही बन्दी रखना चाहती हूँ।

नही, मैं रोऊगी नही, कभी नही। मेरे आँसू आज से हमेशा के लिए सूख चुके है। सम्रादत जैसे वीर प्रेमी ससार की विरली ही युवतियो को प्राप्त होते है। आँसू बहाकर मैं उसकी वीरता को अपमानित नही करना चाहती।

"अच्छा ! जय बांगला !" कहकर मैने यूसुफ से विदा ली। रात के अन्तिम प्रहर को मोटर बोट पर बैठे-बैठे गुजार दिया। सम्रादत से जुडी अनेको स्मृतियाँ मन के आगन मे कौंधती रही।

सुबह हमने नदी मे अनेको पाक फौजियो और मुक्ति सैनिको की लाशे उतराते हुए देखी। इनमे मुक्ति सैनिको की सख्या अधिक थी। स्टीमर और उसकी सामग्री को अपने अधिकार मे करने का मूल्य हम काफी महगा पडा था।

अब अन्धेरा होता जा रहा है, लिखना मुश्किल है। सम्रादत की याद ने मुझे फिर से बहुत बेचैन और अस्थिर बना दिया है। अच्छा, अब कल डायरी भरूगी।

अभी-अभी एक सन्देशवाहक आकर विजय-सूचना दे गया है। हमारी सेना ने पाक फौज को मार कर भगा दिया है और उनकी कई तोपो व बन्दूकबन्द गाडियो को छीन लिया है।

× × × ×

आज दोपहर तक पाक सैबरजेटो ने दो बार बम वर्षा की। खुदा की मेहरबानी से कोई भी बम हमारे पास नही फूटा। डरपोक कही के! कमीने! जब युद्ध के मैदान मे हारने लगे तो जहाजो और बमो का सहारा ले लिया। या खुदा! हमे मदद कर। काश! इस वक्त हमे कोई आठ दस विमान भेदी तोपे देने की मेहरबानी करे। सुना है हमारे हाथ दो-तीन चीनी विमान भेदी तोपें लग गई हैं। लेकिन इतनी थोडी-सी तोपो से क्या होगा? फिर भी डूबते को तिनके का सहारा बहुत होता है।

हवाई हमले की वजह से मैं आज डायरी लिखने के लिए जल्दी नही बैठ पायी। मैंने कल लैफ्टीनैन्ट को सन्देश भेजा था कि बिस्तर पर पडे-पडे मेरा मन नही लगता। मैं दोनो हाथो से अच्छी तरह काम कर सकती हूँ, लगडा-लगडा कर चल भी सकती हूँ। मुझे युद्ध मे भाग लेने की इजाजत दी जाय या और कोई काम दे दिया जाय।"

लैफ्टीनैन्ट ने एक साइक्लोस्टाइल की मशीन भेज दी है। मुझे मुक्तिसेना के लिए नये आदेश लिखने और उनकी साइक्लोस्टाइल प्रतियां निकालने का काम मिल गया है। अब यहाँ केवल दस घायल रह गए हैं। इन सब ने अपने लिए छोटे-छोटे काम चुन लिए हैं। जो लोग ज्यादा घायल थे उन्हें वैद्यनाथतला के अस्पताल मे भेज दिया गया है। वैद्यनाथतला यहाँ से लगभग चार-पांच मील दूर है।

आज ग्यारह अप्रेल है। मैं डायरी लिखते वक्त इतनी उत्तेजित रहती हूँ कि तारीख लिखना भी भूल जाती हूँ। वैसे घटनायें भी इतनी तेजी से उतार-चढाव ले रही हैं कि सब कुछ लिखना मुमकिन नही। खुदा की मेहरबानी से अगर जिन्दा बची तो स्वतन्त्रता सग्राम के इन खूनी दिनो की दास्तान पर पूरा उपन्यास लिखूंगी।

आज स्वतन्त्र बगला बेतार केन्द्र से जो मुख्य समाचार मिले हैं, वे भी बडे महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय हैं —

मुक्ति फौज ने गपुर जिले मे लालमुनीर हाट पर फिर से अधिकार कर लिया है। इस वक्त सिलहट कस्बा पूरी तरह हमारे अधिकार मे है। हमारी सेना ने पाकिस्तान की १३० गाडियाँ छीन ली। इनमे जीपें, बख्तरबन्द गाडियाँ, और गोला-बारूद से भरे ट्रक शामिल हैं। रगपुर जिले, ढाका व चाँदपुर को मिलाने वाली सडक और रेल मार्ग से पाक फौज को मार कर खदेड दिया गया। लक्ष्मण रेलवे जक्शन पर मुक्ति वाहिनी के पैर अब भी जमे हुए हैं। नारायणगज मे हमारी स्थिति पहले से काफी मजबूत हो गई है और नदी मार्ग पर नियन्त्रण पाने की पाक कोशिशो को नाकाम कर दिया गया है। दशालती (सिलहट कस्बे से बाहर स्थित) हवाई अड्डे पर अधिकार पाने के लिए मुक्ति सेना बराबर हमले कर रही है।

पवना पर पाकिस्तान के फौजियो ने कब्जा कर लिया है। अब पाकिस्तानी जहाज सिलहट, बोगरा, जैसोर, व राजशाही पर भीषण हवाई हमले कर रहे हैं। कल यानी बारह अप्रैल को स्वतन्त्र बगला देश के नये मन्त्रिमडल की घोषणा होने वाली है।

मैंने कल डायरी कहाँ लिखना छोडी थी ? ठीक, हम पदमा नदी पर थे। पाक स्टीमर पर कब्जा करने के बाद कोई खास घटना नहीं हुई। नदी मार्ग मे हमे सैकडो लोग नाव पर जाते हुए मिले। वे युद्ध के कारण अपना घर बार छोड कर भाग रहे थे।

एक नौका घाट पर हमे मुक्तिसेना द्वारा नारायणगज पर फिर पूरी तरह कब्जा करने की खबर सुन कर खुशी हुई।

नदी मार्ग छोडकर हमने स्थल की राह से फरीदपुर जाने का निश्चय किया। हमारे साथ बगाल रेजीमेंट के जो नाय सूबेदार थे, वे फरीदपुर, कुष्टिया, गोआलुन्डो, बैद्यनाथगजा आदि इलाके के निवासी थे। उन्हे अपने-अपने क्षेत्रो मे जाकर मुक्ति सेना का गठन करने का आदेश था।

उस समय हमारे दल का नेतृत्व मेजर जिया ने किया

साहव के हाथ मे था । हम मे से दस युवतियां विभिन्न गांवो में स्त्रियो को सैनिक शिक्षा देने के लिये जा चुकी थी । दस और शेष थीं । नियाजुद्दीन साहव ने हमसे कहा, "मुझे सदेशवाहक से खबर मिली है कि फरीदपुर मे कलकत्ता से आया एक वगाली युवक लोगो को पेट्रोल वम तथा अन्य साधारण वम वनाने की ट्रेनिग दे रहा है । खास वात यह है कि वह मामूली और आसानी से मिल जाने वाली चीजो से ही खतरनाक किस्म के वम वना देता है । तुम सब लडकियो को दो-तीन दिन मे ही वह इस कला मे निपुण वना देगा । तुम लोग इस ट्रेनिग को लेने के वाद फिर गांवो मे जाना ।"

हम सवको उनकी यह सलाह पसद आई । हमने फरीदपुर पहुंच कर वम वनाने की ट्रेनिग लेना शुरू कर दी । वहां मुझे एक पचास वर्ष की वृद्धा को वम वनाने की ट्रेनिग लेते देखकर वडा ताज्जुव हुआ । यही नही, वह राइफल चलाना भी सीख रही थी ।

सांवले रग की दुवली पतली बुढिया । चेहरे पर झुर्रियां, आंखो मे उदासी और अपने प्रति लापरवाही । लेकिन झुर्री भरे हाथ पैरो मे गजव की फुर्ती ।

मेरी मां वहुत गोरे रग की सुन्दर महिला थी, पर उस वृद्धा को देख मुझे उनका ख्याल हो आया । जव भी मुझे अपने मां-वावा, दादा-दीदी, या भइया का ख्याल आता है, मैं अपने मन को किसी काम मे लगा देती हूँ, कुछ नही होता तो किसी से वातचीत करने लगती हूँ ।

"मां !" मैंने उसे सम्वोधित करते हुए पूछा, "अव तुम क्यो अपनी वृद्ध काया को तकलीफ देती हो ? ये सव काम करने के लिए मुझ जैसी वेटियां और वेटे जो मौजूद हैं ।"

"वेटी ! जव अपने पुत्र-पुत्रियां मौत से जूझने की तैयारियां कर रहे हों, मां का हाथ पर हाथ रखकर वैठना शोभा नही देता । मेरा पति नापाक फौजियो से लडता हुआ मारा गया । मेरा वडा वेटा पवना की लडाई मे शहीद हो गया । छोटा वेटा खाना खाने जा रहा था कि

लड़ाई की खबर सुन, "अभी आता हूँ" कह कर बाहर निकल गया, लेकिन वह अभी तक नहीं आया। रोज उसके लिए खाने की थाली सजाती हूँ और जब वह नहीं आता तो किसी मुक्ति सैनिक को खिला देती हूँ। अब तू ही बता कि मेरे सामने उन दरिन्दों से जूझने की तैयारी करने के सिवाय और कौन-सा रास्ता रह गया है? जब तक अपने पति और बेटों का बदला दुश्मनों से नहीं ले लूँगी, मेरी छाती में ठंडक नहीं पड़ेगी।"

वहीं मेरी भेंट नगरबाड़ी घाट के अधेड़ किसान अब्दुल रहमान से हुई। उसका एक हाथ कटा हुआ था। वह एक ही हाथ में राइफल चला सकता था और उसी हाथ में अब बम बनाना सीख रहा था। राइफल चलाने का प्रशिक्षण उसने अभी कुछ दिन पूर्व ही सीखा था। उसकी आपबीती वीरता और अदम्य साहस से पूर्ण थी।

एक दिन अब्दुल रहमान के गाँव में राइफलों से लैस पचास पाकिस्तानी सैनिक आ धमके। उन्होंने गाँव वालों को अपने लिए खाना बना कर लाने का हुक्म दिया। गाँव के मुखिया के इन्कार करने पर उन्होंने उसे गोली से उड़ा दिया और घरों में घुस कर लूट-पाट करने लगे। घर की नन्हीं लड़कियों से लेकर औरतों तक की बेइज्जती करने में उन्हें कोई हिचक नहीं हुई। जो उनकी जरा-सी खिलाफत करता, वे उसे फौरन गोली मार देते।

अब्दुल रहमान को जैसे ही ये खबरें मिलीं, उसने गाँव के नौजवानों और आदमियों को ललकारते हुए कहा, "मर्द होकर इतना अत्याचार दब रहे हो। शर्म नहीं आती? आओ! मेरे साथ चलो, हम उनका सामना करेंगे।"

"लेकिन उनके पास राइफलें और मशीनगन हैं, हमारे पास सिर्फ लाठियाँ या कुल्हाड़ियाँ।"

"कोई बात नहीं, औरतों और लड़कियों की बेइज्जती [illegible] से लड़ते-लड़ते मर जाना बेहतर है। आखिर उनकी गोलियाँ कभी [illegible]

कभी खत्म होगी ।"

अब्दुल रहमान बल्लम लेकर उन पचास पाकिस्तानी फौजियो से अकेले ही लडने चल पडा। उसकी हिम्मत देखकर पहले चार पांच युवक पीछे हो लिए, फिर देखते-देखते सख्या साठ-सत्तर तक पहुँच गई ।

वे जल्दी-जल्दी जितने ईंट पत्थर इकट्ठे कर सकते थे, किये । बच्चो को ईंट पत्थर एकत्रित करने का काम सौंप दिया गया । उन पचास फौजियो को गांव वालो ने चारो तरफ से घेर कर पत्थर चलाने शुरू किए। फौजियो ने पत्थरो का जवाब गोलियो से दिया । गाव वाले लुकते-छिपते आगे बढते और फौजियो पर ताक-ताक कर पत्थर मारते ।

फौजियो पर हमला देखकर उनके आसपास के मकानो मे रहने वालो ने भी लाठियो और बल्लमो से हमला शुरू कर दिया । घर की औरतें और लडकियाँ तक नापाक फौजियों पर पत्थरो और ईंटो की वर्षा करने लगी। जिसके हाथ में जो पडा, उसने उसी से फौजियो के सिर का निशाना लगाया ।

पाक फौजी घबरा उठे । उन्होंने बेशुमार गोलियाँ चलाईं । गांव के बीस-तीस लोगो को जान से हाथ धोना पडा, लेकिन वे मैदान मे डटे रहे । उनका घेरा फौजियो के नजदीक सरकता गया । मूर्ख फौजियो के जहन मे गोलियो के खत्म होने की बात पहले नही आई । परन्तु जब दो घटे के बाद उनकी गोलियाँ खत्म हो गयी, वे सिर पर पैर रखकर भाग खडे हुए । पर भागने के सारे रास्ते बन्द हो चुके थे। गांव वालो ने एक-एक को पकड कर बुरी तरह मारा फिर हसियो और कुल्हाडियो से उनकी गरदनें काट दी । इस लडाई मे गांव के करीब साठ आदमी मारे गये पर उन्होंने नापाक दरिन्दो को हमेशा के लिए खत्म कर दिया। उन बदमाशो ने बीस औरतो की लाज लूट ली थी । दो सुन्दर लडकियो पर इतने फौजियो ने बलात्कार किया था कि वे खून से सराबोर होकर

मर चुकी थी ।

इस प्रकार वहाँ जितने भी लोग थे, उनमे से अधिकाश किसी न किसी प्रकार से पाकिस्तानी नादिरशाही का शिकार बन चुके थे ।

बम बनाना सीखने वाले हम सभी युवक-युवतियाँ अपने प्रशिक्षक मृणाल सेन के प्रति अत्यधिक श्रद्धा भाव रखती थी । दुनिया मे अगर याह्या खाँ और भुट्टो जैसे हृदयहीन लोग हैं तो मृणाल सेन जैसे मानवतावादी इन्सान भी जो बगला देश के मुक्ति सघर्ष की पुकार सुन अपने परिवार को छोडकर हमारी मदद को दौडे चले आए। वे आते वक्त ३०३ की गोलियाँ, बम बनाने का लाल मसाला और रिवाल्वर भी लाना नही भूले । इन चीजो को लाने के लिए उन्हे भारतीय सीमा चौकियो के सिपाहियो की आँखो मे धूल झोकनी पडी । बगला देश के स्वतन्त्रता सग्राम मे मृणाल सेन जैसे भारतीय बन्धुओ का नाम स्वर्णाक्षरो मे लिखा जाएगा ।

उस पार के बगालियो को देखकर तत्काल अनुभव होने लगता है कि वे हम मे से ही एक हैं । हाँ, बगाली बोली मे थोडा सा फर्क जरूर है किन्तु हमारे यहाँ भी ढाका, चटगाँव, सिलहट और कुष्टिया मे बोली जाने वाली बगला भाषा मे अन्तर विद्यमान है। सास्कृतिक रीति-रिवाजो, पहनावे, सूरतशक्ल आदि मे हमारे बीच काफी समानताएँ हैं। इसके विपरीत पश्चिमी पाकिस्तानियो और पूर्वी बगला देश की जनता के बीच भाषा, सस्कृति तथा विचारधारा के मध्य बहुत बडा अन्तर है। वहाँ के मुसलमानो को हम हिन्दू मुसलमान बगालियो का आपसी प्रेम-सहयोग फूटी आँख भी नही भाता। बगाली मुसलमान स्त्रियाँ हिन्दू नारियो की तरह अपनी माँग मे सिन्दूर भरती है। इस बात को लेकर पाकिस्तानी हमारी बडी खिल्ली उडाते है।

बन्धु मृणाल सेन से ही पता चला कि भारत मे कुछ मुसलमान ऐसे है जो यह सोचते हैं कि अगर बांगला देश की आजादी के लिए भारत ने कोई ठोस सहायता दी तो उसकी प्रतिक्रिया

भारत सघ के दक्षिणी राज्यो पर बहुत हानिकारक होगी । वे भी भारत सघ से अलग होने की माग उसी तरह करने लगेंगे जैसे बांगला देश पाकिस्तान से अलग होने की कर रहा है । पर मेरा विचार है कि यह एक बहुत भ्रमपूर्ण धारणा है ।

पश्चिमी पाकिस्तान और बगला देश के बीच बारह सौ मील की दूरी है । भारत द्वारा अपनी सीमा पर से पाक विमानो की उडान बन्द कर देने से यह दूरी इससे भी दुगनी हो गई है । भारत सघ का कोई भी राज्य मुख्य भाग से इतनी दूर नही । सबसे बडी बात है पाकिस्तानियो द्वारा बगला देशवासियो पर की जाने वाली हैवानियत भरी ज्यादतियां । यह एक दिन या एक साल की बात नही, सन् ४७ के विभाजन के बाद से ही पाकिस्तानियो ने बगाल को अपने अधीनस्थ एक कॉलोनी मात्र समझा । हमारा ज्यादा से ज्यादा शोषण करने मे उन्होने अपनी बुद्धि का पूरा उपयोग किया । जब भी हम पर बाढ, अकाल या महामारी का प्रकोप हुआ, वे रावलपिंडी मे बैठे चैन की बसुरी बजाते रहे ।

तीन दिन तक बम की ट्रेनिंग लेने के बाद हम मे से पांच लडकियो को आसपास के गांवो मे औरतो को सैनिक प्रशिक्षण देने के लिए भेज दिया गया । शेष पांच लडकियो ने, (जिसमे से एक मैं भी थी) स्थानीय सेना नायक से अनुरोध किया कि हमे युद्ध के मोर्चे पर लडने की आज्ञा दी जाए । बहुत कहने सुनने के बाद हमारा अनुरोध स्वीकार कर लिया गया ।

यहां फरीदपुर का कुछ जिक्र कर देना ठीक रहेगा क्योकि इसके बाद ही हमे वहां से युद्ध के मोर्चे पर भेज दिया गया । फरीदपुर मे नागरिक प्रशासन उस समय सामान्य रूप से चल रहा था । उच्च सरकारी अधिकारी स्थानीय आवामी लीग के नेताओ की सलाह से सारा काम काज सम्भाल रहे थे । मुक्तिसेना के अधिकारियो से सुरक्षा और युद्ध की स्थिति का सामना करने से सम्बन्धित आदेश प्राप्त किए जाते । सभी सरकारी कर्मचारियो और मुक्ति सैनिको को एक माह का वेतन वित-

मर चुकी थी ।

इस प्रकार वहाँ जितने भी लोग थे, उनमे से अधिकाश किसी न किसी प्रकार से पाकिस्तानी नादिरशाही का शिकार बन चुके थे ।

बम बनाना सीखने वाले हम सभी युवक-युवतियाँ अपने प्रशिक्षक मृणाल सेन के प्रति अत्यधिक श्रद्धा भाव रखती थी । दुनिया मे अगर याह्या खाँ और भुट्टो जैसे हृदयहीन लोग हैं तो मृणाल सेन जैसे मानवता वादी इन्सान भी जो बगला देश के मुक्ति सघर्ष की पुकार सुन अपने परिवार को छोडकर हमारी मदद को दौडे चले आए । वे आते वक्त ३०३ की गोलियाँ, बम बनाने का लाल मसाला और रिवाल्वर भी लाना नही भूले । इन चीजो को लाने के लिए उन्हे भारतीय सीमा चौकियो के सिपाहियो की आँखो मे धूल झोकनी पडी । बगला देश के स्वतन्त्रता सग्राम मे मृणाल सेन जैसे भारतीय बन्धुओ का नाम स्वर्णाक्षरो मे लिखा जाएगा ।

उस पार के बगालियो को देखकर तत्काल अनुभव होने लगता है कि वे हम मे से ही एक हैं । हाँ, बगाली बोली मे थोडा सा फर्क जरूर है किन्तु हमारे यहाँ भी ढाका, चटगाँव, सिलहट और कुष्टियाँ मे बोली जाने वाली बगला भाषा मे अन्तर विद्यमान है । साम्कृतिक रीति-रिवाजो, पहनावे, सूरतशक्ल आदि मे हमारे बीच काफी समानताये हैं । इसके विपरीत पश्चिमी पाकिस्तानियो और पूर्वी बगला देश की जनता के बीच भाषा, सस्कृति तथा विचारधारा के मध्य बहुत बडा अन्तर है । वहाँ के मुसलमानो को हम हिन्दू-मुसलमान बगालियो का आपसी प्रेम-सहयोग फूटी आँख भी नही भाता । बगाली मुसलमान स्त्रियाँ हिन्दू नारियो की तरह अपनी माँग मे सिन्दूर भरती हैं । इस बात को लेकर पाकिस्तानी हमारी बडी खिल्ली उडाते हैं ।

बन्धु मृणाल सेन से ही पता चला कि भारत मे कुछ मुसलमान ऐसे हैं जो यह सोचते हैं कि अगर बांगला देश की आजादी के लिए भारत ने कोई ठोस सहायता दी तो उसकी प्रतिक्रिया

भारत सघ के दक्षिणी राज्यो पर वहुत हानिकारक होगी। वे भी भारत सघ से अलग होने की माग उसी तरह करने लगेंगे जैसे बांगला देश पाकिस्तान से अलग होने की कर रहा है। पर मेरा विचार है कि यह एक वहुत भ्रमपूर्ण धारणा है।

पश्चिमी पाकिस्तान और वगला देश के वीच वारह सौ मील की दूरी है। भारत द्वारा अपनी सीमा पर से पाक विमानो की उडान वन्द कर देने से यह दूरी इससे भी दुगनी हो गई है। भारत सघ का कोई भी राज्य मुख्य भाग से इतनी दूर नही। सबसे वडी वात है पाकिस्तानियो द्वारा वगला देशवासियो पर की जाने वाली हैवानियत भरी ज्यादतियां। यह एक दिन या एक साल की वात नही, सन् ४७ के विभाजन के वाद से ही पाकिस्तानियो ने वगाल को अपने अधीनस्थ एक कॉलोनी मात्र समझा। हमारा ज्यादा से ज्यादा शोषण करने मे उन्होने अपनी बुद्धि का पूरा उपयोग किया। जव भी हम पर वाढ, अकाल या महामारी का प्रकोप हुआ, वे रावलपिंडी मे वैठे चैन की वसुरी वजाते रहे।

तीन दिन तक वम की ट्रेनिंग लेने के वाद हम में से पांच लडकियो को आसपास के गांवो मे औरतो को सैनिक प्रशिक्षण देने के लिए भेज दिया गया। शेष पांच लडकियो ने, (जिसमे से एक मैं भी थी) स्थानीय सेना नायक से अनुरोध किया कि हमे युद्ध के मोर्चे पर लडने की आज्ञा दी जाए। वहुत कहने सुनने के वाद हमारा अनुरोध स्वीकार कर लिया गया।

यहां फरीदपुर का कुछ जिक्र कर देना ठीक रहेगा क्योंकि इसके वाद ही हमे वहां से युद्ध के मोर्चे पर भेज दिया गया। फरीदपुर मे नागरिक प्रशासन उस समय सामान्य रूप से चल रहा था। उच्च सरकारी अधिकारी स्थानीय आवामी लीग के नेताओ की सलाह से सारा काम काज सम्भाल रहे थे। मुक्तिसेना के अधिकारियो से सुरक्षा और युद्ध की स्थिति का सामना करने से सम्बन्धित आदेश प्राप्त किए जाते। सभी सरकारी कर्मचारियो और मुक्ति सैनिको को एक माह का वेतन वित-

रित कर दिया गया । खेतो और बाजारो मे सभी कार्य पहले की तरह चल रहे थे । लोगो ने बगला सरकार के खजाने मे टैक्स जमा करना शुरू कर दिया था । व्यापारी, दुकानदार, किसान, मजदूर सभी बांगला देश की स्वतन्त्र सरकार को पूरा-पूरा सहयोग देते हुए खुशी महसूस कर रहे थे । पाकिस्तानी फौजो का सामना करने के लिए जोरो मे तैयारियां हो रही थी । जनता मे देश भक्ति, वीरता और उत्साह की लहरें हिलोरें मार रही थी ।

आगे बढती हुई पाक फौजो का समाचार पाते ही हमने उनका सामना करने के लिए पूरे जोश के साथ कूच कर दिया । हम उनसे अपनी सुविधा व इच्छा के स्थान पर युद्ध करना चाहते थे ।

पद्मा नदी पार कर हमने दुश्मन की फौज पर भयानक हमला किया । इसके बाद की घटनायें मैं पहले ही लिख चुकी हूँ । अब आज यही समाप्त करती हूँ । हरकारा सेनानायक के नये आदेश व आस-पास के समाचार लेकर आ रहा है । मुझे अपने काम मे लगना है ।

× × ×

कल एक चमत्कार हो गया । ठीक ही कहते हैं कि सत्य कल्पना से परे होता है । जिसे मैं हरकारा समझ रही थी वह और कोई निकला । हुआ यह कि उसके कुछ नजदीक आते ही हवाई हमले का सकेत देने वाला साइरन बज उठा । मैं तख्ते की पटिया पकड कर खडी हुई और पास मे बनी खदक मे लगडाते हुए जाने लगी कि पैर फिसल गया । खदक मे मुँह के बल गिरने वाली थी कि उसने मुझे अपनी बाँहो मे थाम लिया और फुर्ती से मुझे लेकर खदक मे कूद पडा ।

मैंने आँख उठाकर जो देखा तो देखती ही रह गई । वह हरकारा नही वरन् मेरे हृदय का देवता उमाशकर घोष । पहले, अपनी आँखो पर विश्वास नही हुआ । मैंने उसके चेहरे को गौर से देखा । वह पहले से कुछ कमजोर दिखाई दे रहा था । होठो पर वही मेरी परिचित मुस्कान ।

"मेहरुन्निसा ! तुम ! खुदा का लाख-लाख शुक्र !" और उसने

मुझे अपने आलिंगन मे आबद्ध कर लिया ।

ऊपर आकाश मे पाकिस्तानी सेबरजेट हवा का कलेजा चीरते हुए बम वर्षा कर रहे थे । बमो के धमाको से धरती काप-काप जाती थी । हमारे आसपास के कई स्थानो पर आग की लपटें फैल रही थी । किन्तु मृत्यु के उस ताण्डव नृत्य के बीच खदक मे बैठे हम दो बिछडे हुए प्रेमी एक-दूसरे की भुजाओ मे लिपटे प्रेम के नव सृजन मे लीन थे । हमारे तन मन सुख की अनन्त धारा मे बहे जा रहे थे । जीवन मृत्यु को चुनौती दे रहा था ।

हवाई हमले के बाद हम खदक से बाहर निकले । असार बाग मे स्थित झोपडियो मे लगी आग को बुझाने का प्रयत्न कर रहे थे । एक खदक मे बैठे लोगो के समीप बम फटा पर एक आदमी को छोडकर सभी बच गए । लेकिन बम फटने की वजह से मिट्टी की एक पूरी तह उनके ऊपर चढ गई थी ।

दो बच्चे बाग मे खेल रहे थे, बम के टुकडो ने उनके अग-प्रत्यगो को इस बुरी तरह से चोट पहुंचाई कि उन्हे पहचानना मुश्किल हो गया । एक स्त्री खेत पर काम करने वाले अपने पति को खाना देने जा रही थी, वह बीच मे ही बम फटने से मौत के मुंह मे जा पहुंची ।

कुछ ही मिनटो मे ये सारी खबरें मेरे पास तक आ पहुंची । जब हम दोनो अपने चारो ओर बिखरे दर्द भरे माहौल से उबरे, उमाकान्त ने पूछा, "तुम ढाका से यहां कैसे आ पहुंची ?"

मैंने सक्षेप मे अपनी कथा सुनाने के बाद, उससे अपने अनुभव बताने का आग्रह किया ।

'मैं ढाका से जैसोर भेजा गया था । जैसोर मेरा अपना क्षेत्र है । काफी परिचित, रिश्तेदार और दोस्त हैं वहां । मुझे उस क्षेत्र के नौजवानो को असहयोग सत्याग्रह के लिए तैयार करना था पर परिस्थितिया हमारे अनुमान से भी अधिक तीव्रता से बदलती गई । पाक फौजो के टैंको और बमो का सामना करने के लिए हमे भी हथियार उठाने

पडे । मैं मुक्ति सेना मे शामिल हो गया हूँ और एक बहुत आवश्यक कार्य से कल वैद्यनाथतला जा रहा हूँ ।"

"तुम्हारे माँ-बाबा, परिवार के और सदस्य सब कुशल हैं ?"

"मुझे कुछ नही पता । जिस वक्त मैं अपने गांव पहुँचा वहां पूरा घर बम की मार से गिरा व जला पडा था ।"

"तुमने उन लोगो की खोज नही की ?"

"की थी, पर फर्श मे बने बडे-बडे गोल काले चकत्तो के अलावा मुझे वहां कुछ नही मिला । सामान के नाम पर तिनका भी न था । दुश्मनो ने मेरे गांव के सब घरो को लूटकर उनमे आग लगा दी थी । एक बच्चे को भी उस आग से नही निकलने दिया गया । सारे स्त्री, पुरुप, बच्चे, बूढे उस आग मे भस्म हो गये । जले हुए लोगो की हड्डियो के काले ककाल के अलावा वहां सब कुछ राख हो गया था ।"

"ओह ! ये तो बहुत बुरा हुआ ।"

"बुरा नही, बहुत अच्छा हुआ । इससे हमारी आँखें खुल गई । हमे पता चल गया कि अपने को हमवतन और धर्म भाई कहने वाले पाकिस्तानी सचमुच मे कितने भयानक भेडिये हैं । फिक्र न करो । हम उनसे गिन-गिन कर बदला लेंगे !" उमाशकर की वाणी मे प्रतिशोध की ज्वाला धधक रही थी ।

"तुम अब यहां कितने दिन रुकोगे ?"

"मैं अभी ट्रक से मुजीब नगर जा रहा हूँ । कल वहां बागला देश की नयी आजाद सरकार के गठन का प्रथम समारोह है ।"

"तुम बहुत भाग्यवान हो । काश ! मेरा पैर ठीक होता ! मैं भी इस महान अवसर पर उपस्थित हो सकती !"

"अच्छा, यह लो आज का नया बुलेटिन । इसकी एक हजार प्रतियाँ साइक्लोस्टाइल करनी है ।" उसने मेरे हाथ मे समाचार बुलेटिन रखते हुए कहा ।

"तुम वापस कब आओगे ?"

कल आ जाऊँगा, चिन्ता न करना। अब मेरी ड्यूटी इसी क्षेत्र मे लगा दी गई है। मैं तुमसे मिलता रहूँगा। साहस और धीरज रखना। हमे बडे से बडे बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए। हर मुल्क को अपनी आजादी की कीमत चुकानी पडती है। अच्छा, जय बांगला !"

"जय बांगला !"

मैं उसे साइकिल पर बैठकर दूर जाते हुए एकटक देखती रही। इन कुछ थोडे से क्षणो मे न जाने कितने ख्याल मेरे मन मे उमड रहे थे। जफर भइया, दादा, अस्रादत, हरीश और उमाशकर से जुडी हुई यादें खलबला उठी थी। रह-रहकर एक ही प्रश्न चिन्ह सामने खडा हो जाता था कि क्या मैं उमाशकर को दोबारा जीवित देख सकूगी ? मुजीब नगर! वहां स्वतन्त्र बगला देश की सरकार का प्रथम समारोह कितने गौरवपूर्ण वातावरण मे मनाया जाएगा।

मेरा कर्त्तव्य मुझे पुकार रहा था। भावनाओ का तूफान हृदय में दबाकर बुलेटिन के समाचारो की नकल करने लगी। पहला समाचार पढ़ते ही हृदय पर करारी चोट पडी। भावनाओ का दबा हुआ तूफान आंखो से आंसू बन बरस पडा। नही, इस प्रकार मैं अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए कैसे युद्ध कर सकूंगी ?

"हमे बडे से बडे बलिदान के लिए तैयार रहना है।" उमाशकर के शब्द मेरे कानो मे गूज कर कर्त्तव्यपालन के लिए ललकारने लगे।

यदि किसी ने मेरी आंखो के बहते हुए आंसू देख लिए, मुझसे यह काम भी ले लिया जाएगा और वैद्यनाथतला के अस्पताल मे भेज दिया जाएगा। वे मुझे एक कमजोर हृदय लडकी समझेंगे। नही, मैं सब कुछ सहन करते हुए अपना कर्त्तव्य निभाऊंगी।

आंसू पोछकर, मैं उस समाचार को लिखने लगी—

जफर मिर्जा की हैरतअगेज बहादुरी

"ढाका शहर पर पाकिस्तानी फौजियो का कब्जा हो जाने के बाद स्वतन्त्र बाग्ला देश की मुक्ति सेना ने शहर को चारो तरफ से घेर

लिया है । मुक्ति वाहिनी जान-बूझकर शहर से पीछे हट आई थी ताकि दुश्मन को घेर कर उसकी सप्लाई लाइन काट दी जाए और फिर उसे आसानी से खत्म कर दिया जाय। मुक्ति सेना ने कुछ असारो को शहर मे छिपा दिया था ताकि वे रात मे निकल कर दुश्मन के ठिकानो पर हमला कर सकें। इनमे से एक ढाका यूनिवर्सिटी के छात्र और न्यू मार्केट के निवासी जफर मियाँ भी थे। उनके साथ दस वहादुर असार थे । उन्होने पाक फौजो को भारी नुकसान पहुँचाया ।

एक पाकिस्तानी जासूस को इन वहादुर देशभक्तो का पता चल गया। उसकी सूचना पाकर करीव सौ पाक फौजियो ने उस मकान को घेर लिया जिसमे ये असार रहते थे ।

जफर मियाँ ने अपने साथियो को छत कूद कर भाग जाने का हुक्म दिया और खुद अपने वदन पर वारूदी पट्टियाँ वांध कर व हाथ मे मशीनगन ले दुश्मनो के वीच कूद पडे । पलक झपकते उन्होने वीस-पच्चीस दुश्मनो को हलाक कर दिया । लेकिन तभी एक गोली उनके वदन पर लगी जिससे वारूदी पट्टियो मे आग लग गई और वे फट पडी । जफर मियाँ का शरीर एक वम की तरह फट कर चियडे-चियडे उड गया पर उन्होंने मरते मरते सारे दुश्मनो को खतम कर दिया । इस प्रकार अकेले जफर मियाँ ने सौ दुश्मनो का सफाया कर दिया । उनका महान वलिदान वगला देश के इतिहास मे सुनहरे लफ्जो मे लिखा जाएगा ।"

माइक्लोस्टाइल के नीले चिकने कागज पर नुकीली कलम चलाते हुए मुझे अहसास हो रहा था कि जैसे जफर भइया की वीरता और वलिदान पूर्ण गौरव गाथा का एक-एक शब्द मेरे हृदय पर खुदता जा रहा है। कलम की नोक नीले कार्वन को नही मेरे हृदय को काट-काट कर उसपर एक-एक शब्द अंकित कर रही है ।

हाय ! मुझे कहाँ पता था कि एक दिन अपने प्यारे भइया की शहादत की खवर मेरे इन कठोर हाथो से ही लिखी जायेगी । नहीं, नही । मैं भइया की याद मे आँसू वहाकर उनकी रूह को तकलीफ नहीं

दूंगी । मैं भी उनकी तरह देश की आजादी के लिए अपना तन-मन-धन वलिदान कर दूगी ।

समाचार वुलेटिन वलिदानो और साहस के कारनामो से भर-पूर था । मेरे भाई जैसे सैकडो भाई थे जो मुल्क की खुशहाली और आजादी के लिए अपना खून पानी की तरह वहा रहे थे ।

आज दोपहर अपना काम समाप्त करने के वाद मैं रेडियो सुनने वैठ गयी । हमारे आसपास गांव के स्त्री-पुरुष भी एकत्रित हो गये । आज की मुख्य खवरें थी—स्वतन्त्र वागला देश की प्रथम छह सदस्यीय सरकार की घोषणा । शेख साहव को राष्ट्रपति, नजरुल इस्लाम को उपराष्ट्रपति और श्री ताज्जुद्दीन को प्रधानमत्री चुना गया ।

स्वतन्त्र वगला वेतार केन्द्र ने वताया कि मुक्ति सेना ने रगपुर को घेरे मे ले लिया है । दुश्मनो ने कुमुक पहुच जाने के कारण सिलहट शहर पर दोवारा कब्जा कर लिया । मुक्ति वाहिनी अव भी उनसे लड रही है । पाकिस्तानी जहाजो ने अपनी वमवारी और तेज कर दी है । ढाका मे कोई भी कर्मचारी काम पर नही पहुचा । कुश्तिया जिले मे कुमारखली जाते हुए नापाक फौजो ने गुरुदेव रवीन्द्र के मकान को ध्वस्त कर दिया है । (असभ्यता और मूर्खता का इससे वडा प्रमाण पाक फौजें और क्या दे सकती थी ?)

मुक्ति फौज ने पाक फौजियो द्वारा चटगांव से कोमिल्ला होते हुए ढाका तक सप्लाई लाइन वनाने की कोशिश को नाकामयाव कर दिया है ।

"मेहरुन्निसा ! लो इस वयान की जल्दी से जल्दी दो हजार कापियां निकाल दो ।" महमूद मुझे प्रधानमत्री ताज्जुद्दीन का वेतार केन्द्र द्वारा प्रसारित वयान देते हुए कहता है । उसने इसे रेडियो से सुनकर शार्ट-हैंड मे लिख लिया था । हमारी साइक्लोस्टाइल्ड समाचार और निर्देशन प्रतियां इस वक्त समाचार पत्रो का काम कर रही हैं । ट्रासमीटरो के वाद सबसे महत्वपूर्ण कार्य ये प्रतियां ही करती हैं ।

× × ×

वह अग्निवर्षी दिन जीवन के अंतिम क्षणो तक मेरे स्मृति-कोष में दहकता रहेगा । मृत्यु का सम्मोहन इतना रहस्यमय और भयावह होता है कि उसे सामने देखते ही आदमी सब कुछ भूलकर कुछ क्षणो के लिए स्तम्भित रह जाता है ।

कुछ लमहो के लिए मैं जडता की ऐसी ही स्थिति का शिकार बन गई थी । सामने मौत अपना विकराल रूप धारण किए खडी थी । हमे चारो तरफ से पाक फौजियो ने घेर लिया था । अमराई के नीचे दस घायल मुक्ति सैनिको के अतिरिक्त गाव के लगभग दस-पन्द्रह स्त्री पुरुष व बच्चे थे ।

दुश्मन का घेरा कसता जा रहा था । वे सब पठान सैनिक थे, करीब पच्चीस-तीस । उनके हाथो मे थमी ऑटोमेटिक राइफलें और मशीनगनें हमारी ओर ही तनीं थी । हम सब निहत्थे तथा निस्सहाय मृत्यु की प्रतीक्षा मे थे । खुदा की आखिरी इबादत करने और "जय बागला' के उद्घोष से शत्रु का मान मजन करते हुए शस्य श्यामला बग-भूमि के कलेजे से चिपटकर मृत्यु का आलिगन करने का अन्तिम क्षण सिर पर आ गया था ।

मैं पेड के तने से टिकी हुई खडी थी । दाहिना हाथ पीठ के पीछे करके मैंने दादा का खूबसूरत रिवाल्वर छिपा लिया । मैंने वीरता के साथ मरने का निश्चय किया । किंतु रिवाल्वर चलाने का अर्थ यह होता कि वे चारो तरफ से हमारे ऊपर गोलियाँ दाग देते । अपनी मौत की मुझे कुछ परवाह नही थी पर किसी तरह गाँव के स्त्री-पुरुषो व बच्चो को बचाना चाहती थी । हत्या करना जिन्होंने अपना प्रिय खेल बना रखा हो, ऐसे हैवानो से प्राणो की भिक्षा माँगना व्यर्थ था, फिर भी रिवाल्वर न चलाने पर उनका बचाव हो जाने की एक क्षीण सम्भावना तो थी ही ।

अकस्मात् बिना किसी विचार के, मेरे मुँह से पूरे जोर के साथ

शब्द निकल पड़े "जय बांगला"

"जय बांगला !" शत्रु के अपार बल और मृत्यु को चुनौती देती हुई नारों की आवाज आम्रकुंज में गूंज गई ।

"फायर !" बख्तरबंद गाड़ी में बैठे नापाक अफसर ने सिपाहियों को हुक्म दिया ।

गोलियों से छलनी हो जाने वाले स्त्री-पुरुषों व बच्चों की चीत्कारें, करुण पुकारें और आहें मेरे कल्पना रूपी टेलीवीजन पर गूंजने तथा कौंधने लगीं। हमारे शरीर गोलियों का सामना करने के लिए कड़े पड़ गए ।

घायल मुक्ति सैनिक धरती पर तत्काल पट लेट गए और उनके हाथ अस्त्र-शस्त्रों की खोज में इधर-उधर भटकने लगे । ग्रामीण स्त्री-पुरुषों ने भी उनका अनुकरण किया किन्तु बच्चों को जैसे मौत की तिल मात्र भी चिन्ता न थी । वे वैसे ही खड़े आपस में बात करते हुए पाकिस्तानी सैनिकों के हाथों में तनी संगीनों के प्रति बड़ी उत्सुकता प्रकट कर रहे थे । एक तीन वर्षीय नन्हा बच्चा "जय बांगला !" कहते हुए नाच रहा था ।

मैंने दो पेड़ों की आड़ लेकर रिवाल्वर से निशाना साध लिया था । बस, उनके और निकट आ जाने का इन्तजार था ।

पर गोली की आवाज न सुन, हम सभी को आश्चर्य हुआ ।

"हम हुक्म देता फायर करो !" पाकी अफसर दहाड़ा ।

"हम यहां अपने निहत्थे धर्म भाइयों का खून बहाने नहीं आया ।" एक पठान ने जोर से कहा ।

"इस गद्दार को पकड़ लो । हम इसका कोर्ट मार्शल करेगा ।" लेकिन कोई आगे नहीं बढ़ा ।

अफसर ने अपना रिवाल्वर निकाला और उस पठान सैनिक की तरफ निशाना साधा । किन्तु उससे कहीं जल्दी चल पड़ी पठान की राइफल ।

हमे अपनी नजरो पर यकीन नही आ रहा था। हैवानियत पर इसानियत जीत रही थी।

पठान सैनिको ने अफसर की लाश को जीप से बाहर खीचकर झाडी मे फेंक दिया। बन्दूकें कधो पर रखकर वे मुस्कराते हुए हमारी तरफ बढे। अब वे हमारे जैसे ही इसान लग रहे थे।

चैन की सांस लेते हुए हम खडे हो गए और उनका अभिवादन किया। उनमे से एक ने आगे बढकर कहा, "भाइयो! हम मुसलमान हैं और आप भी मुसलमान हैं। इन जालिम नापाक अफसरो ने हमारे पख्तून भाइयो पर भी बहुत सितम ढाये हैं। आजादी की इस लडाई मे अब हम सब आपके साथ हैं। इस वक्त हमे यहां से भाग कर मुक्ति फौज के साथ मिलना है वरना वे गांव को तहस-नहस करने के बाद इसी तरफ आयेंगे। अब आपके साथ हमारी जिन्दगी भी खतरे मे है।"

उस वक्त वहां मैं ही एक ऐसी थी जो पठान की भाषा को अच्छी तरह समझ रही थी। मैं लगडाते हुए आगे बढी और उनका शुक्रिया अदा करते हुए कहा, "हम सब ट्रक और जीप मे बैठकर वैद्यनाथतला चलेंगे। वहां हमारे हजारो साथी हैं।"

"चलिये, फिर जल्दी करिये।"

हम सब लोग ट्रक और जीप मे बैठकर वहां से रवाना हुए। गांव से लगातार गोलो और गोलियो की आवाजें आ रही थी। मैं जीप मे आगे की सीट पर बैठी हुई ड्राइवर को रास्ता बताती जा रही थी। हमारे पीछे ट्रक आ रहा था। मैं गांव के रास्ते को छोडकर दूसरे मार्ग से उन लोगो को ले जाने लगी।

गांव की दिशा मे आग की लपटें और धुआं उठता हुआ दिखाई दे रहा था। गोलियो की तेज आवाजो के बीच स्त्रियो और बच्चो की हृदय-विदारक चीत्कार भी सुनाई दे जाती थी। गांव के लोगो को आग तथा गोलियो मे भुनते देखकर भी कुछ न कर सकने की अपनी असमर्थता मेरे दिल को कचोट रही थी।

"क्या हम गांव वालो को नही बचा सकते ?" मैंने पठान सैनिक अफसर से पूछा ।

"नही, वहां करीब एक हजार पाक फौजी हैं । उनके पास बजूका और रॉकेट लाचर हैं । इस वक्त हम ही बचकर निकल जाए तो बहुत समझो । अगर उन्होने हमे देख लिया तो खैर नही ।"

उस वक्त भी हमारी जीप और ट्रक पर पाकिस्तानी झडा लहरा रहा था । दुश्मन को धोखा देने के लिए हमने उसे उतारा नही । रास्ता बहुत ऊँचा-नीचा और सकरा था । गहरे-गहरे खड्ड रास्ते के खतरे को अत्यधिक बढा रहे थे । आगे बढने की हमारी गति बहुत धीमी थी ।

हमे हर मिनट अपने देख लिए जाने का खतरा बना हुआ था । पठानो की उंगलियां अपने अस्त्र-शस्त्रो के घोडों पर कसी हुइ थीं ।

मेरे दिमाग मे किसी फिल्मी रील की तरह पिछली घटनायें तेजी से घूम रही थी । मन एक पल मे इतना कुछ विचार लेता है कि उसकी व्याख्या मे पूरी पुस्तक भी हल्की पड सकती है । ऐसा शायद इसलिए होता है कि हमारा प्रत्येक क्षण पूरे जीवन से घिरा होता है और उसे हम लाख चाहने पर भी अलग से काट नहीं सकते ।

मैं तीन चार दिन से इतनी व्यस्त थी कि डायरी लेखन का अवसर ही न मिल पाया । एक के बाद दूसरे बुलेटिन साइक्लोस्टाइल करने के लिए आ रहे थे और दो सहायक मिल जाने के बाद भी काम पूरा नही हो रहा था ।

एक दिन पहले ही हमसे कहा गया था कि अब यहां रहना सुरक्षित नही । हम और लोगो के साथ वैद्यनाथतला चले जाए । लेकिन हम अपनी जिद पर डटे रहे और उन्हें हमारी बात माननी पडी ।

पाक सैबरजेटो द्वारा भीषण बमबारी शुरू कर दी गई थी । बमो के धमाको से वृक्ष हिल जाते और धरती कांप जाती । हम अपने कानो मे रुई और कपडे की डाट लगाए रहते और बमवर्षक विमानो के आने की सूचना पाते ही खदको मे चले जाते । पाक सेना और विमानो की

गतिविधियो पर नजर रखने के लिए मुक्ति सैनिको ने तीस-तीस फीट ऊँची मचाने बना ली थी ।

हमारे शत्रु भयानक बमो को इस्तेमाल कर रहे थे। नापाम बम तो बस जहा गिरता आग ही आग हो जाती । आसपास की खाइयो मे बैठे लोग तक उसकी पिघलती छिटकती जेली से नही बच पाते । जेली के स्पर्श मात्र से शरीर मे आग लग जाती ।

यही नही, उन दरिंदो ने विमानो द्वारा जहरीली गैसें छोडना भी प्रारम्भ कर दिया था। ये गैसें इतनी खतरनाक होती कि वृक्षो, पौधो और फसलो पर पडते ही उन्हे नष्ट कर देती । आदमियो की साँसें घुटने लगती और वे बुरी तरह तडपते, छटपटाते हुए मर जाते । मुक्ति फौज के अफसर और डाक्टर अपने सिरो को हाथ मे थामे, बेबस बने अपने भाइयो को मरते हुए देखते रहते । जहरीली गैस से दम घुटकर मरते हुए लोगो का बहुत इलाज करने पर भी हम उन्हें बचा नही पाते । वैसे हमारे पास उपचार करने के लिए आवश्यक सामग्री और उपकरण भी कहाँ थे ?

इतना सब कुछ होने पर भी हम सिर पर कफन बाँधे लड रहे थे। एक नवजात प्रजातत्र की आवाज़ को बेरहमी से घोटा जा रहा था लेकिन दुनिया के लोगो की मनुष्यता मर चुकी थी । सयुक्त राष्ट्र सघ चुप था और प्रजातत्र व समाजवाद के दावेदारो के मुँह, आँख और कान पर राष्ट्रीय हित का टेप चिपका हुआ था ।

टैंको, साठ-साठ पौण्ड की तोपो, राकेटो और बजूका हमारे सामने से अग्नि वर्षा करते और ऊपर से नापाम बम । चारो ओर विनाश का नग्न नर्तन होता, किन्तु स्वतत्रता के प्रेमी अपने स्थान से एक कदम भी पीछे नही हटते । दुश्मन की गोलियो से छलनी होते हुए, आग मे जलते हुए, दम घुटते हुए और गोलो की मार से शरीर के चिथडे-चिथडे हो जाने पर भी बगाली देशभक्त "जय बागला !" का उद्घोष कर मृत्यु को सहर्ष गले लगा लेते ।

जय बागला के वे शब्द क्षीण होते हुए भी अनन्त शक्ति का सृजन कर देते और कुछ क्षणो मे ही सारी धरती और आकाश जय बागला के उद्घोष से गूंजने लगता। हमारे दिलो मे जमा आत्मविश्वास इस अग्नि परीक्षा से और दमक उठता। अनजान गहराइयो से कोई रूहानी ताकत खुदाई आवाज की तरह बुलद स्वर मे कहती, "सच्चाई और इन्साफ पर डटे हुए मेरे वेटो ! साहस से आगे वढो ! टैंक और नापाम तो क्या एटम बम भी तुम्हारी आजादी को नही रोक सकता।"

पीछे आते ट्रक से कुछ दूर एक गोला आकर फटता है और मेरे ख्यालो की लडी बिखर जाती है। ट्रक एक खड्ड मे फंस गया है और उधर दुश्मन को हमारी चालाकी का पता लग चुका है। "ट्रक को छोड-कर डवल मार्च करते हुए हमारे पीछे आओ।"

वे अपने पठान अफसर की आज्ञा का पालन करते हुए हमारे पीछे दौडने लगते हैं। दो-चार गोले हमसे कुछ दूर पर इधर-उधर फटते हैं पर कोई घायल नही होता।

पठान अफसर जीप पर लगे पाक झण्डे को फाडकर फेंक देता है और उसकी जगह हम से वागला देश का झण्डा लेकर लगाता है।

वैद्यनाथतला से लगभग दो मील पहले ही हमे दो वदूकधारी मुक्ति सैनिक रोक लेते हैं।

मैं जीप से उतर कर उन्हें पूरी घटना सुनाती हूं। पठान सिपाहियो की इन्सानियत देख, वे दौडकर उनसे गले मिलते है। 'जय वागला' के नारो से आकाश गुंजाते हुए हमारा दल वैद्यनाथतला पहुंचता है। वहां भी सब हमारा स्वागत करते हैं।

× × ×

उमाकर कई दिनो से दिखाई नही दे रहा है। उसके लिए मन बहुत चिन्तित रहता है। रात मे ठीक से नीद भी नही आती, हालांकि कार्यालय का कार्य करते-करते बहुत थक जाती हूं। उसके बारे मे बस इतना पता चला है कि वह किसी गुप्त कार्य से भारतीय सीमा पर गया

है। सम्भवत कल तक आ जाए।

मेरा साइक्लोस्टाइल का कार्य बदस्तूर चल रहा है। सग्राम परिषद के कार्यालय मे बैठ कर मुक्ति सैनिको की भर्ती के काम मे भी मदद करती हूँ। युवको मे देश की स्वतन्त्रता के लिए बलिदान हो जाने की होड-सी लग गई है। युवतियो की सख्या भी बढती जा रही है।

अब डायरी लिखने मे मन ज्यादा नही रुचता। हाथ दुश्मनो को गोली से उडा देने के लिए हमेशा मचलते रहते हैं। पैर का जख्म है कि ठीक होने को नही आता। डाक्टर कह रहा था कि अगर जख्म जल्दी ठीक नही होता तो जहर न फैलने देने के लिए टाँग काटनी पडेगी।

विभिन्न मोर्चों से जो खबरें आ रही हैं, वे आशा जनक नही। मुक्ति सैनिको को सभी जगहो से पीछे हटना पड रहा है। अब गोरिला युद्ध अधिक चल रहा है और आमने-सामने की लडाई बहुत कम। वजह यह है कि पाक फौजो को नई कुमक और नई डिवीजनें मदद देने के लिए आती जा रही हैं। मुक्ति सेना सिर्फ अपने देशप्रेम के बल पर लड रही है। हमारे पास दुश्मन से छीने हुए हथियार और सामग्री हैं। उस पार की जनता चोरी छिपे हमे कुछ अस्त्र-शस्त्र दे जाती है या हमारे साथी अपने रिश्तेदारो से पाइप गनें और थ्री-नॉट-थ्री की गोलियां ले आते हैं। पर हमारे ये अस्त्र-शस्त्र पाकिस्तान की तोपो, रिक्वायललेस राइफलो, राकेटों आदि के सामने बच्चो के खिलौनो जैसे साबित होते हैं।

वे हर तरह की धूर्तता और छल का सहारा ले रहे हैं। परसो की बात है। शाम का वक्त था। दिन की तपिश कम हो चली थी। सग्राम परिषद के कार्यालय के सामने अच्छी भीड थी। एक जीप उसी वक्त हमारे कार्यालय से कुछ दूर आकर रुकी। उसपर बागला देश का झण्डा लहरा रहा था।

मैं बाहर बरामदे मे खम्भे का सहारा लिए खडी थी। जैसे ही जीप मे बैठे लोगो ने नारे लगाए भीड ने भी उनका साथ देना शुरू कर दिया। जनता जीप के आसपास जमा होने लगी।

प्राय मुक्ति सैनिक जीपो मे बैठ कर मोर्चे से आते रहते हैं। जनता उनसे लड़ाई के मोर्चों के समाचार जानने के लिए उत्सुक रहती है। वे प्राय मुक्ति सेना की विजय सूचनायें उन्हे बता देते हैं।

इसीलिए उस जीप को देख, सभी के चेहरे उत्साह से खिल उठे। जीप वाले जिस जोश से नारे लगा रहे थे, वह निश्चय ही किसी शुभ सूचना का पूर्व संकेत था।

किन्तु एक मिनट बाद ही उन लोगो ने मशीनगनें निकालकर धड़ाधड़ गोलियाँ बरसानी शुरु कर दी। देखते-देखते तीस-चालीस स्त्री, पुरुष व बच्चे वही ढेर हो गए। ड्यूटी पर तैनात मुक्ति सैनिको ने जैसे ही जीप पर गोलियां बरसायी, पाकिस्तान के धोखेबाज सैनिक भाग निकले।

उनका पीछा किया गया। उन्होंने भाग निकलने की बहुत कोशिश की पर हमारे वीर सैनिको ने जब तक उन सबको खत्म नही कर दिया वापस नहीं लौटे।

मुक्ति सैनिको ने दुश्मन की धोखेबाजी का बदला दूसरे दिन ही चुकता कर दिया। पठान सैनिक जिस मिलेट्री ट्रक को अपने साथ लाए थे उस पर पाक झण्डा लगाया गया। दस जवान मशीनगनें लेकर उसमे बैठ गए। ट्रक के अन्दर पेट्रोल और बारूद भी रख ली। एक पठान सैनिक पाकिस्तानी सैनिक वेश-भूषा मे सबसे आगे बैठ गया।

वे पाकिस्तानी पहरेदारो और सैनिको को धोखा देते हुए ठीक उस जगह पहुँच गए जहाँ दुश्मनो के पेट्रोल की टकियाँ रखी थी। वहाँ पहरेदारो द्वारा मुख्य चैकपोस्ट पर रोका गया। जवाब मे वे मशीनगन से आग उगलते हुए नीचे कूद पडे। उतरते समय उन्होने ट्रक मे रखे पेट्रोल मे आग लगा दी। उतरते ही वे अलग-अलग दिशाओ मे भाग निकले।

पाकिस्तानी उनसे लड़ने मे इतने मग्न थे कि उन्हे पेट्रोल से जलते हुए ट्रक की तरफ ध्यान देने का अवसर ही नही मिला। दो मिनटो बाद जैसे ही बारूद मे आग लगी पूरा ट्रक एक विशालकाय बम की तरह

फट पडा ।

मचान पर दुरबीन लगाकर बैठे हमारे साथी ने बाद मे बताया कि उस ट्रक के फटने से न केवल उसकी पेट्रोल टकियो मे आग लग गई वरन् चारो तरफ आधे-आधे फर्लांग तक के क्षेत्र मे रहने वाले दुश्मनो का पूरी तरह सफाया हो गया। ट्रक के फटने का धमाका वैद्यनाथतला तक सुनाई दिया।

पाकिस्तानी फौज मे बुरी तरह खलबली मच गई। पेट्रोल की भीषण आग बुझाए नही बुझ रही थी। वे समझ नही पा रहे थे कि मुक्ति सैनिको ने उन पर कौन से विनाशकारी बम से हमला कर दिया है।

और ठीक उसी वक्त मुक्त वाहिनी ने उन्हे तीन तरफ से घेरते हुए भीषण आक्रमण किया। वे कठिनाई से आधे घण्टे तक इस आक्रमण को रोके रह सके। अत मे हमारी विजय हुई और स्त्रियो व बच्चो पर अपनी वीरता दिखाने वाले पाकिस्तानी बहादुर साहब दुम दबाकर भाग निकले।

पाकिस्तानियो ने इस हार का बदला लेने के लिए आज सुबह हवाई जहाजो से भीषण बम वर्षा की। इसमे करीब सैकडो लोग मारे गए और पाँच सौ से ज्यादा घायल हुए। पचास घर नापाम बमो से जल गए। इन सर्वनाशी हमलो के कारण जन-साधारण के जान-माल की अपार क्षति हो रही है। अनुमान है कि इनमे एक लाख लोग मर चुके हैं और डेढ लाख घायल। लगभग दस करोड रुपए की सम्पत्ति स्वाहा हो गई है।

हमारे देश मे रोज लाखो लोग अपनी जान बचाने के लिए भारतीय क्षेत्र मे पहुँच रहे हैं। मैंने उन लोगो को भागते हुए देखा है। उनके चेहरे रूखे और उदास हैं। उनकी आँखो मे निराशा और अनिश्चित भविष्य का अधकार। भूख और गरीबी ने उनकी कमर झुका दी है और शरीर ककाल मात्र रह गया है।

पहले वैद्यनाथतला मे जीवन सामान्य गति से चल रहा था किन्तु हाल ही मे होने वाले हवाई हमलो का विकराल रूप देख मैंने स्त्री-

पुरुष और बच्चे भागने की तैयारियां कर रहे हैं । सन्तोष की बात यह है कि ऐसे लोगो मे केवल स्त्रियां, वृद्ध पुरुष और बच्चो की सख्या अधिक है । ज्यादातर नौजवान अपने पारिवारिक सदस्यो को भारत मे छोडकर फिर बगला देश मे आकर स्वतन्त्रता सग्राम मे कूद पडते हैं ।

यद्यपि युद्ध के नतीजे धीरे-धीरे पाकिस्तान के पक्ष मे होते जा रहे हैं लेकिन अन्त मे हमारी विजय उतनी ही निश्चित है जितना हर अधेरी रात के बाद नये दिन का सूरज उगना ।

× × ×

मेरा नाम सलीम है । मैं मैमनसिंह के काजियागांव का रहने वाला हूं । मैं, मैमनसिंह से वैद्यनाथतला कैसे पहुंचा, यह अपने-आप मे एक अलग कहानी है । कभी वक्त मिला तो जरूर लिखूगा । यहां, मैं उतना ही लिखना पसन्द करूंगा जितना कि मेहरुन्निसा द्वारा आखिरी वक्त दी गई इस डायरी की कथा को पूरा करने के लिये जरूरी है ।

मैंने एक से एक दुखद, भयानक और रोमाचक घटनाओ को देखने का, दुर्भाग्य या सौभाग्य जो कुछ आप कहना चाहें, पाया है । बाढ, अकाल, महामारी और गरीबी के भयानक पजों से कई बार लहू-लुहान हो जाने के बाद इस दफा हमे बगाल की धरती पर चिपटी पाक जोकों से निपटने का सुनहरा मौका मिला है ।

जिस समय हम वैद्यनाथतला पहुंचे, हालात तेजी से खराब होते जा रहे थे । करीब-करीब सभी मोर्चो पर हमें हार का मुंह देखना पड रहा था । आखिर आधुनिक किस्म के भयानक हथियारो के सामने पुरानी किस्म की राइफले कब तक टिकती ?

हमने वैद्यनाथतला पहुंच कर वहां की सग्राम परिषद के मत्री को सारे समाचार बताये । उन्होने बडे धैर्य से हम चार असारो (स्वयसेवको) की आपबीती और खबरे सुनी । हमे चाय और नाश्ता दिया गया ।

तभी मेरी नजर एक जवान और खूबसूरत युवती पर पडी । वह मेरी ओर देखकर मुस्करायी । उसकी बडी-बडी आंखें इतनी सुदर और

गहरी थी कि मुझे लगा कि उनमे झांकता ही रहूँ । उसका रंग अमरीकी युवतियो जैसा गोरा था और पूरा शरीर किसी महान मूर्तिकार के द्वारा बनाई गई मोहनी-मूरत की तरह दिलकश । पर, यह क्या ? उसके एक पैर के निचले भाग मे पट्टी बँधी हुई थी । वह लंगडा-लंगडा कर चलती थी ।

ऑफिस सेक्रेटरी ने उससे मेरा परिचय कराते हुए कहा, "मिस्टर सलीम ! बहन मेहरुन्निसा से मिलो । आप एक वीर और साहसी युवती हैं । मोर्चे पर दुश्मन का सफाया करते वक्त आपकी टांग मे गोलियां लगीं, जिसकी वजह से इन्हे चलने-फिरने मे बहुत तकलीफ होती है । डाक्टर ने पूरी तरह आराम करने की सलाह दी है पर आप हैं कि काम मे दिन-रात जुटी रहती हैं । अपनी मुस्कान से हम सबको प्रेरणा देती रहती हैं ।"

पता चला कि उसके परिवार को भी पाकिस्तानी फौजियो ने पूरी तरह तबाह कर दिया था और उसके दिल मे दिन-रात बदले की आग सुलगती रहती थी । मैं उससे पहली मुलाकात मे ही बहुत प्रभावित हुआ ।

उसी समय उमाशंकर नाम का एक युवक आया । मेहरुन्निसा ने उससे मेरा परिचय कराया । देखने सुनने मे वह स्वस्थ, शिक्षित और आकर्षक लग रहा था । वह मुक्ति सेना का स्वयंसेवक था और इस वार भी किसी काम को पूरा करके लौट रहा था ।

"भाई ! सलीम, आपको यह जानकर खुशी होगी कि एक घंटे बाद ही हम दोनो विवाह के पवित्र बंधन मे बंधने जा रहे है । आप उसमे जरूर शामिल हो ।" उमाशंकर ने कहा ।

"शादी ?"

"जी हां, हमारी शादी हिन्दू और मुस्लिम दोनो रीतियो मे होगी । शादी के बाद भी मैं हिन्दू धर्म का पालन करूँगा और मेहरुन्निसा मुस्लिम धर्म का ।"

"लेकिन बच्चे ?"

"बच्चो का धर्म निश्चित करने वाले हम कौन होते हैं ? धर्म आदमी का निजी मामला है। जब बच्चे बड़े होंगे जिस धर्म को ठीक समझेंगे स्वीकार कर लेंगे। मुमकिन है वह हिन्दू या मुसलमान दोनो ही धर्म अस्वीकार कर इसाई बन जायें अथवा किसी धर्म को नही माने।"

"लोगो को कोई एतराज तो नही ?"

"एतराज ! इसके विपरीत ज्यादातर लोगो का यह ख्याल है कि आज जो काम हम दोनो करने जा रहे हैं, वह बंटवारे से पहले शुरू होना चाहिये था, फिर हमे उन पाक दरिंदो के हाथो इतना अपमानित नही होना पडता।"

यद्यपि मैं कट्टर मुसलमान हूँ पर धार्मिक उदारता से भरी उसकी बातें मुझे बहुत पसन्द आई। पाकिस्तानी बर्बरता ने हमारी आँखो पर से धर्मांधता की पट्टी पूरी तरह खोल दी है।

आधे घटे बाद वे दोनो कपडे बदल कर आ गये। उन दोनो के चेहरे खुशी से लाल हो रहे थे। मेहरुन्निसा पर हरे रग की साडी बहुत खिल रही थी। उसे देखते ही मुझे हरे-हरे पत्तों के बीच झूमते हुए गुलाब के फूल याद आने लगे। उसने अपने जूडे मे बेला और मोतिया के फूलो की माला बांध रखी थी। गुलाबो के फूलो की मालायें अपनी शोभा को उसके शरीर की सुन्दरता से मिलकर और अधिक बढा रही थीं।

उसकी कमर पेटी से रिवाल्वर लटक रहा था। रिवाल्वर की गोलियो से युक्त चौडी पेटी को उसने करधनी के स्थान पर बांध रखा था। मुझे वह ऐसी लग रही थी जैसे युद्ध की दहकती हुई ज्वालाओ के बीच प्यार का एक शतदल कमल खिल गया हो, एक ऐसा कमल जिसे हिंसा और घृणा की अनत आग भी स्पर्श नही कर सकती।

"शायद सलीम भैया सोच रहे हैं कि इस भयानक युद्ध में भी हम दोनो को अपनी शादी की उतावली पडी है।" मेहरुन्निसा ने मुस्करा-कर कहा।

"नही, युद्ध अपनी जगह है और जीवन अपनी जगह। युद्ध मे भी

जीवन का प्रवाह न रुकना शुभ विजय का प्रतीक है।"

"तब आप यह सोच रहे होंगे कि मैंने शादी के मौके पर यह रिवाल्वर क्यो लटका रखा है। बात यह है सलीम भाई कि पाकिस्तानी हैवानो ने मेरे घर के सब लोगो को खत्म कर दिया, दादा द्वारा दिया गया यह रिवाल्वर अब भी जीवित है। यह मेरी मां, बाबा, दादा, भइया सबका फर्ज और कर्ज दोनो ही अदा करेगा।"

मेरा अनुमान था कि घर वालो की याद आते ही उसका गला भर आयेगा और आंखें गीली हो उठेंगी। किन्तु मेहरुन्निसा मुस्करा रही थी, हाँ अगर उसकी आंखो मे चमकते हुए भावो को कोई पढ सकता, उसे एक रेगिस्तान मे प्रतिशोध की प्रचण्ड आंधी के चलने का आभास जरूर मिल जाता। यह भाव कोई नया नही हैं। बगला देश के किसी भी बच्चे स्त्री या पुरुष की आंखो मे वह चमकता हुआ मिल जायेगा।

उमाशकर ने सफेद कुर्ता और पैजामा पहन रखा था। उसके सिर पर आवामी लीग के स्वयसेवको की टोपी लगी थी। उसकी बगल मे भी रिवाल्वर लटक रहा था।

"तुम दोनो की जोडी खूब खुलेगी। खुदा तुम्हे खुशियां और नियामत बख्शे।" मैंने उन्हे आशीर्वाद दिया।

इसी समय मोटरसाइकिल पर बैठकर पार्टी सेक्रेटरी ने कार्यालय मे प्रवेश किया। उसके चेहरे पर चिन्ता की रेखायें स्पष्ट दिखाई दे रही थीं।

"घोष भाई! मुझे अफसोस है कि हमें शादी का प्रोग्राम कल के लिये मुलतवी करना पडेगा। दुश्मन की सेनाओ ने दोनो तरफ से शहर को घेर लिया है। एक घटे के अन्दर हमे पूरा शहर खाली करके पीछे हटना है।"

"इसमे अफसोस की कोई बात नही भाई जान! देश की रक्षा करना हम सबका पहला फर्ज है।" उमाशकर घोष ने कहा।

शहर खाली करने की खबर जगल की आग की तरह चारो तरफ फैल गयी। लोग जल्दी-जल्दी जो भी जरूरी सामान और रुपया पैसा

अपने साथ ले जा सकते थे, वह लिया और स्वयसेवको द्वारा बताये सुरक्षित मार्ग से बाहर जाने लगे। साइकिल, बैलगाड़ियो, तागो, ट्रको की लम्बी पक्तियाँ सड़को पर दिखायी देने लगी।

हम लोगो ने भी कार्यालय का जरूरी सामान, कागज-पत्र, और धन ट्रको मे भर कर भेजना शुरू कर दिया। गोला-बारूद, तथा अस्त्र-शस्त्र भी पिछले मोर्चे पर भेजे जाने लगे। चारो तरफ दौड़ भाग और फुर्ती से अपना काम करते लोग बड़े अनुशासित ढग से शहर छोड़ने की तैया-रियो मे जुटे थे।

मोर्टारो, राकेटो और बन्दूको की आवाजें शहर मे सुनाई देने लगी थी, फिर भी लोगो मे किसी तरह की घबराहट नहीं थी। स्वयसेवक घर-घर जाकर लोगो को शहर छोड़ने की तैयारियो में मदद कर रहे थे। इतना होने पर भी कुछ गिने लोग ऐसे थे जो शहर छोड़ने के लिए तैयार नही थे। उन्हें अपने घर की देहरी पर मरना पसद था, उसे त्यागना नही।

"क्या हम इस शहर को उन दरिंदो से बचा नही सकते। यह हमारा हेडक्वार्टर रहा है। इसे छोड़ने से जनता के मनोबल को बहुत धक्का लगेगा।" मेहरुन्निसा ने नगर सग्राम परिषद के नेता से कहा।

"शहर की रक्षा इसे फिलहाल छोड़कर ही की जा सकती है।"

"क्या मुझे यही रुककर दुश्मन से लड़ने की इजाजत मिल सकती है?"

"इजाजत तो मिल जायेगी, लेकिन तुम घायल हो और अभी तुम्हारी शादी की रस्म पूरी नही हुई।"

"मैं भी मेहरुन्निसा के साथ रहकर दुश्मन से लड़ूँगा। उमाशकर बोला।

"तुम दोनो अपनी बात पर अच्छी तरह गौर कर लो। शहर मे रुकने मे मतलब है, हर हालत मे मौत के मुँह मे जाना। मेरा ख्याल था कि तुम दोनो भारत की सीमा में चले जाते। मेहरुन्निसा के जख्म

का इलाज करवा कर फिर यहाँ आ जाते ।"

"नही, मैं अपना प्यारा देश छोड कर कही नही जाऊँगी । मैंने यही जन्म लिया और लडते-लडते यही मरूँगी ।" मेहरुन्निसा ने दृढता से कहा ।

"यदि तुम लोगो की यही मर्जी है तो जीप मे बैठकर घटाघर चले जाओ । वहाँ आत्म बलिदानी स्वयसेवक शत्रु से अन्तिम युद्ध करने की तैयारियाँ कर रहे हैं ।"

"क्या मैं भी जा सकता हूँ इनके साथ ?"

"सलीम ! सचमुच तुम बहादुर हो । अगर हमते हुए मौत को गले लगाने की तुमने ठान ली है तो मैं तुम्हारे रास्ते का रोडा नही बनना चाहता ।"

हम तीनो जीप मे बैठकर घटाघर पहुँच गए । वहाँ आत्म बलिदान के इच्छुक चालीस युवक शहर मे घुसने वाले शत्रुओ को अन्तिम पाठ पढ़ाने की तैयारियो मे जुटे थे ।

एक छोटे से मैदान मे जिसके तीन ओर से सकरे रास्ते आकर एक जगह मिलते थे, हमने पाँच मोर्चे बनाए । केन्द्र मे मुख्य मोर्चा बनाया गया । इसके लिए हमने मोटी-मोटी दीवारो का खिडकियो से युक्त मकान चुना । मुख्य मोर्चे की चारो दिशाओ मे एक-एक मकान चुनकर हमारे साथी अपने अस्त्र-शस्त्रो सहित उनमे जम गए ।

हम तीनो ने केन्द्र मे स्थित मुख्य मोर्चे को सम्भाला । हमारे साथ पाँच युवक और थे । मकान की दूसरी मजिल के बडे कमरे मे चारो दिशाओ मे छोटी-छोटी खिडकियाँ थी । दो-दो आदमी मशीनगन और हथगोले लेकर प्रत्येक खिडकी पर बैठ गए । मकान की पहली मजिल म चार युवको ने मोर्चा सम्भाल लिया ।

पहले चार सैबरजेट शहर के ऊपर उडते हुए आए । उन्होने नीची उडानो द्वारा पूरे शहर का निरीक्षण किया । एक दो जगहो पर उन्होने नापाम बम भी डाले और फिर वापिस चले गए ।

राइफलो और तोपो की आवाजें तेजी से नजदीक आती जा रही

थी। एक घन्टा व्यतीत हो चुका था और मुक्ति सेना की जो टुकडी दुश्मन को रोके हुए थी, वह पीछे हट चुकी थी।

वे शहर मे प्रवेश कर रहे थे। पहले उन्होने बिना मतलब के इधर-उधर गोले-गोलियो की बौछार की। कोई जवाब न पाकर वह आगे बढने लगे। हम अपनी खिडकियो के पीछे छिपे दो विभिन्न रास्तो से नापाक फौजो को आगे आते हुए देख रहे थे। रास्ता धीरे-धीरे सकरा होता जा रहा था। इसलिए उन्होने अपने टैको और भारी तोपो को वही रोक दिया। फौजी सिपाही बडी सावधानी से आटोमेटिक राइफलें और मशीनगनें लिए आगे बढने लगे।

उन्होने कई मकानो मे घुस कर देखा। कुछ चीजें वे बाहर निकाल लाए। जल्दी-जल्दी मे भागते शहरी अपनी सैकडो कीमती चीजें घरो मे छोड गए थे। फौजियो ने ललचायी नजरो से अपने नायक को ओर देखा और उसकी इजाजत मिलते ही लूट-पाट शुरू कर दी।

एक मकान मे उन्हें कुछ स्त्रियां, युवतियां और आदमी मिल गए। वे उन्हे खीच कर बाहर निकाल लाए। आदमी हाथ जोडकर गिडगिडाने लगा। अपनी बहू बेटियो की इज्जत और जीवनदान की भीख मांगते हुए उसने आगे वाले सिपाही के पैर छुए। बदले मे उसे अपनी छाती मे एक जोरदार लात खाने को मिली। उसके मुंह से खून निकला और वही गिर पडा। बाकी आदमियो को उनकी विनती सुने बिना मशीनगन से भून दिया गया। युवतियो को पकडकर उनकी धोतियां, ब्लाउज, वगैरह उतार नगा कर उनपर बलात्कार किया जाने लगा। वे रो रही थी, हाथ जोडकर गिडगिडा रही थी, लेकिन उन जानवरो को बस अपनी कामवासना शान्त करने की पडी थी। वे बडी निर्दयता से उनके अगो को नोच, और मसल रहे थे। युवतियो के शरीर से खून बहने लगा और पाक वहशी अट्टहास कर उठे।

क्रोध के मारे हमने होठ चबाते हुए अपने नायक की ओर देखा।

"मैं गोली चलाए बिना नही रह सकती।" मेहरुन्निसा ने कहा।

"बस एक मिनट ठहरो। इनके शहर से बाहर निकलने वाले रास्ते बन्द हो जाने दो। यह युद्ध है। एक मिनट की जल्दी हमारी जीत को हार मे बदल सकती है।" नायक ने बेतार-यन्त्र की ओर देखते हुए कहा।

तभी हमने देखा कि एक आठ वर्ष का लडका घर से बाहर निकला और उसने बलात्कार करने वाले फौजी के सिर मे जोर का डडा मारा और भाग गया। पास खडे फौजी ने लडके पर मशीनगन चला दी। दौडते-दौडते वह लडखडाया और दो-चार गोलियो मे ही ठडा पड गया।

दूसरी सडक पर भी इसी तरह के दुखद दृश्य दिखाई दे रहे थे। दस बारह स्त्री पुरुष और बच्चे जो किसी कारणवश भाग नही पाए थे पाकिस्तानी फौजियो की सगीनो का निशाना बन चुके थे। जवान लडकियो के बाल पकडकर उन्हें सडक पर घसीटा जा रहा था। चार-चार फौजी एक-एक युवती के शरीर को नोचने, खसोटने मे लगे थे। छोटी-छोटी नादान बच्चियो और बच्चो को भी राक्षसो ने नही छोडा।

"फायर!" नायक ने आदेश दिया।

हमारी गनमशीने आग उगलने लगी। यह हमला इतना आकस्मिक था कि वे घबडा उठे। हमने कम से कम बीस फौजियो को मार दिया।

"रुक जाओ!"

हमने फायरिंग बन्द कर दी। अब दुश्मन दोनो तरफ से गोलियाँ बरसाते हुए आगे आने लगा। उनके पास हल्की तोपे भी थी।

हम सब उस समय तक चुप रहे, जब तक कि वह छोटा सा मैदान दुश्मनो से नही भर गया।

"फायर!"

मुख्य केन्द्र की चारो खिडकियो मे गनमशीने अग्नि वर्षा करने लगी। पाक फौजियो के सिर पर हथगोले फूटने लगे। चारो तरफ के मोर्चों मे भी भयानक हमला किया गया। हमारा व्यूह इतना सफल रहा कि दस मिनट के अन्दर पूरा मैदान पाक फौजियो की लाशो से पटा था।

हममे से अधिकाश अभी पूरी तरह सुरक्षित थे। पाक फौजी पीछे

भाग गए। कुछ समय बाद उन्होने हमारे मुख्य मोर्चे पर तीन तरफ से हल्की तोपो और मोर्टारो से हमला किया। मकान की मोटी मोटी दीवारो मे छेद हो गए। एक गोली मेहरुन्निसा के हाथ मे लगी, दूसरी उमाशकर की जाघ मे। मेरे कधे मे भी जख्म हो गया। लेकिन हम सब जख्मी होने पर भी दुश्मन के ऊपर ताक-ताक कर गोलियां चला रहे थे। हमारे खून से कमरे का फर्श लाल होता जा रहा था और दीवारो की ईंटें व सीमेंट गोलो की मार से फूट-फूट कर चारो तरफ बिखर रहा था। वह इतनी तेजी से बिखरता था कि हमारे शरीर मे जहाँ कही भी लगता, घाव कर देता। अचानक दो गोले ठीक हमारी खिडकियो पर टकराये और सारे कमरे पर कहर टूट पडा।

मुझे महसूस हुआ कि जैसे सारी धरती तेजी से घूम रही हो, आंखो के आगे सितारे चमक रहे हो और मेरी चेतना न जाने कहाँ लीन हो गई। कुछ क्षणो बाद ही मुझे होश आ गया। कमरा बारूद की बदबू और धुए से भर रहा था। मेरे पूरे शरीर मे बेहद दर्द हो रहा था। होठ पत्थर की तरह सूखे और भारी हो चुके थे। गोली लगे जख्मो से खून बह रहा था। अपने होठो को मैंने जीभ फेर कर गीला करने का असफल प्रयत्न किया।

तभी मेहरुन्निसा और उमाशकर की मद्धिम आवाजे सुनाई दी। मैंने सिर उठाकर देखा। वे बुरी तरह घायल थे।

"घोष ! मैंने · प्रिय · तम " मेहरुन्निसा फर्श पर हाथो और पैरो के बल घिसटती हुई उसके पास पहुँची।

'मेहरु न्निसा मेरी

घोष ने अपना हाथ मेहरुन्निसा के सिर पर रख दिया। हाथ के जख्म से बहता हुआ खून मेहरुन्निसा की माग मे सिन्दूर की तरह भरने लगा। उनके दूसरे कापते हाथ को मेहरुन्निसा के पतले और कमजोर हाथ ने थाम लिया। प्यार की शक्ति से बधे वे दोनो एक दूसरे के और निकट खिसके और फिर यकायक उनके शरीर ढीले पड गए।

"जय बांगला !"

"जय बां ग · ला !"

उनकी अंतिम क्षीण आवाजें सुनाई दी। मेरे होठो से भी अपने आप निकल गया "जय बांगला !"

जिस समय विजय सूचना देते हुए मुक्ति सैनिको ने उस कमरे मे प्रवेश किया, मेहरुन्निसा और घोष के मृत शरीर उस समय भी एक दूसरे का हाथ थामे थे। लगता था जैसे जीवन मार्ग पर ही नही वरन् मृत्यु के अनजान रहस्यमय पथ पर भी वे साथ-साथ चल पडे थे। देश प्रेम के रग मे घुल-मिलकर उनका प्रणय अमर हो गया था।

जब भी चांदनी रातो मे पदमा नदी पर तैरती नावो मे बैठे प्रेमी युगल प्रणय के गीत गायेंगे, खेतो मे धान की फसले लहरायेंगी और तालाबो मे सफेद कमल खिलेंगे, मेहरुन्निसा और घोष के अटूट प्यार की कथा दोहरायी जाती रहेगी।

उस देश-प्रेमी युगल को याद कर आज भी मेरा यह विश्वास सबल हो उठता है कि भले ही किराए की टट्टू पाक फौजें भीख मे प्राप्त आधुनिक अस्त्र-शस्त्रो से बांगला देश के स्वतन्त्रता सेनानियो को रौंद डाले पर एक दिन उन्हे हमारी शस्य श्यामला धरती से अपना मुंह काला कर जाना ही पडेगा।

ससार के भयानक से भयानक अस्त्र-शस्त्र हमारे ध्येयपथ पर से जलती स्वाधीनता की ज्वाला को बुझा नही सकते।

प्रेम, सत्य और स्वाधीनता अजेय हैं और इसीलिए बांगला देश अजेय है।

"जय बांगला !"

* * *